KALRAV CLS 4 PART2

by iAMOD

1

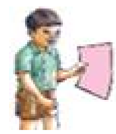

पथ मेरा आलोकित कर दो

पथ मेरा आलोकित कर दो।
नवल प्रात की नवल रश्मियों से
मेरे उर का तम हर दो।।

मैं नन्हा सा पथिक विश्व के

पथ पर चलना सीख रहा हूँ,

मैं नन्हा सा विहग विश्व के
नभ में उड़ना सीख रहा हूँ।
पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक
मुझको ऐसे पग दो, पर दो।।
पाया जग से जितना अब तक
और अभी जितना मैं पाऊँ,
मनोकामना है यह मेरी
उससे कहीं अधिक दे जाऊँ।
धरती को ही स्वर्ग बनाने का
मुझको मंगलमय वर दो।।

- द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

पथ =रास्ता पर =पंख

आलोकित =प्रकाशित, प्रकाश से युक्त निर्दिष्ट =निश्चित

तम =अन्धकार, अँधेरा मनोकामना=मन की इच्छा

नवल =नया, नवीन वर =वरदान

रश्मि =किरण विहग =पक्षी

पथिक =राही, राहगीर उर =हृदय

भाव बोध

1.उत्तर दो -

(क)कवि किसको आलोकित करने की प्रार्थना कर रहा है ?

(ख)नन्हा पथिक क्या सीख रहा है ?

(ग)यह पथिक 'पग' और 'पर' दोनों क्यों माँग रहा है ?

(घ)कवि की क्या मनोकामना है ?

(ङ)कवि ने स्वयं को 'नन्हा पथिक' और 'नन्हा विहग' क्यों कहा है ?

2.नीचे लिखे स्तम्भ 'क' के कथनों के अर्थ स्तम्भ 'ख' से ढूँढ़कर लिखो-

स्तम्भ 'क' स्तम्भ 'ख'

उर का नयी किरण से

निर्दिष्ट लक्ष्य तक हृदय का

नवल रश्मि से निश्चित उद्देश्य तक

तम हर दो अन्धकार दूर कर दो

3.'कर दो' और 'हर दो' के अन्त में समान धवनि है। ऐसे शब्द 'तुकान्त' कहलाते हैं। उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे शब्दों के तुकान्त शब्द लिखो-

पर दो -वर दो नवल -...............................

हिलराया -.......................... खिलाया -...............................

चलना -................................ पाऊँ -...............................

4.'मेरे उर का तम हर दो' इस पंक्ति का सही भाव है -

द्धकऋमेरे घर में उजाला कर दो।

द्धखऋमेरे हृदय का अन्ॠकार दूर कर दो।

द्धगऋमेरे रास्ते में बिजली की रोशनी कर दो।

5.नीचे लिखी पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो-

द्धकऋ'पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक, मुझको ऐसे पग दो, पर दो'

द्धखऋ'ॠरती को ही स्वर्ग बनाने का, मुझको मंगलमय वर दो'

6.वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो -

द्धकऋदूसरों का उपकार करने वाला

द्धखऋरास्ते पर चलने वाला

द्धगऋदोपहर का समय

द्धघऋमन की कामना

तुम्हारी कलम से

कवि ने इस कविता में अपने मन की भावनाएँ प्रकट की हैं। तुम्हारे मन में भी इस प्रकार के भाव आते होंगे। तुम भी उन भावों से कविता बना सकते हो। बनाकर लिखो।

अब करने की बारी

कविता कंठस्थ कर कक्षा में प्रभावपूर्ण ढंग से सुनाओ।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी ने बालगीतों की रचना की है। इनके गीतों में देश-प्रेम, भावात्मक एकता, भाईचारा तथा चरित्र-उन्नयन के भाव भरे हैं।

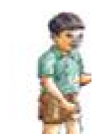

2

पंचतन्त्र की कथा

महिलारोप्य नगर का राजा अमरशक्ति बहुत दानी और प्रतापी था। राजा के तीन पुत्र थे - बहुशक्ति, उग्रशक्ति और अनन्तशक्ति। तीनों ही मूर्ख थे। मूर्ख होने के साथ ही वे अशिष्ट व उद्‌दण्ड भी थे।

वे आम तोड़ने के लिए आम के पेड़ पर चढ़ जाते। आम मिलता तो रस फेंक देते और गुठली तोड़कर खाने लगते। दिन भर घोड़ों की पीठ पर बैठकर जंगल में निरीह पशुओं का शिकार करते रहते। बात-बात पर झगड़ते और बड़ों की बात न मानते। राजा अपने पुत्रों की यह दशा देखकर बहुत चिन्तित होता कि उसके बाद राज्य का क्या होगा ?

मन्त्री सुमति ने राजा को परामर्श दिया कि आचार्य विष्णु शर्मा को राजपुत्रों का शिक्षक नियुक्त किया जाए तो उन्हें उचित शिक्षा मिल सकेगी।

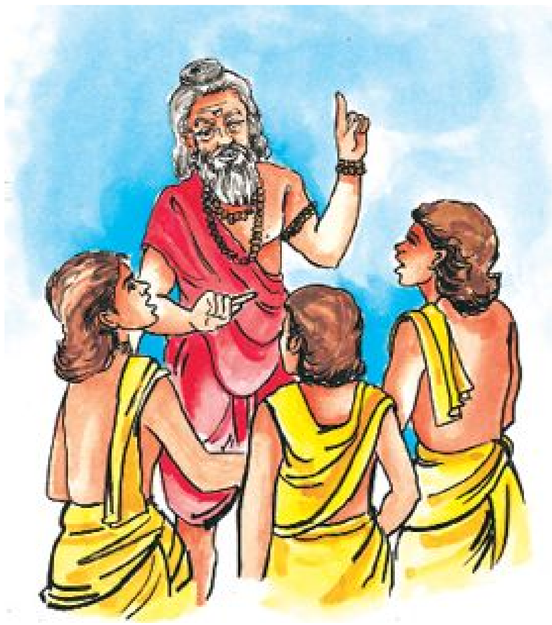

राजा ने आदरपूर्वक विष्णु शर्मा को बुलाया और कहा, हगुरुवर ! मेरे पुत्र ज्ञान और विद्या से विहीन ह ॐ । पढ़ने–लिखने में इनका मन नहीं लगता। आप ही कृपा करके इन्हें शिक्षा दें। मैं आपको पाँच सौ गाँव भेंट करूँगा।ह

विष्णु शर्मा बोले, हराजन् ! मेरे पास ऐसी सम्पत्ति है जो बाँटने और अभ्यास करने से बढ़ती जाती है। यदि यह मेरे पास ही रहे तो यह घटने लगती है। मुझे आपकी सम्पत्ति की चाह नहीं है। मुझे आपके पुत्रें की चिन्ता भी नहीं है। मुझे तो चिन्ता यह है कि आज राजपुत्र ऐसे हैं तो कल का राजा कैसा होगा ? मैं आपके पुत्रें को अवश्य शिक्षा दूँगा। मैं उनको इस प्रकार शिक्षा दूँगा कि उनका मन स्वयं ही उसमें लग जाएगा। छः महीने में ही आपके पुत्र, ज्ञान और राजनीति सीख जाएंगे।ह

विष्णु शर्मा राजा के बेटों को लेकर वन में अपने आश्रम को चले गए। वे राजकुमारों को नित्य एक नई कहानी सुनाकर ज्ञान और नीति की शिक्षा देने लगे।

एक दिन विष्णु शर्मा ने यह कहानी सुनाई –

हएक नगर में चार मित्र रहते थे। उनमें से तीन ने बहुत सी विद्याएँ पढ़ी थीं। इन विद्याओं पर उन्हें बहुत अभिमान था परन्तु उनमें सामान्य बुि) की कमी थी। चौथा मित्र बहुत अिèाक

पढ़ा–लिखा तो नहीं था(परन्तु बुद्धिमान था। वह हर कार्य सोच–विचार कर किया करता था।

एक बार उन मित्रें ने विदेश जाकर ॠन संग्रह करने का निश्चय किया। वे चारों यात्र पर निकल पड़े। जब वे जंगल से होकर जा रहे थे तो रास्ते में उन्हें एक शेर का मृत शरीर दिखायी दिया। उसके अंग–प्रत्यंग बिखरे हुए थे।

उसे देखकर विद्या के अभिमानी तीनों युवक बोले, ह्नचलो, हम इस शेर के शरीर पर अपनी विद्या का प्रयोग कर इसे पुनर्जीवित कर दें।ह एक ने अस्थियों को सही क्रम में लगाकर अस्थिपंजर तैयार कर दिया। दूसरे ने अस्थियों के ऊपर माँस–पेशियाँ जमा दीं तथा उनके ऊपर चमड़ा लगाकर शेर का रूप दे दिया। तीसरा युवक उस मृत शरीर में प्राणों का संचार करने के लिए तत्पर हुआ। तभी चौथे मित्र ने कहा, ह्नठहरो ! ऐसा मत करो। तुम लोग अपनी विद्या के प्रभाव से शेर को जीवित कर रहे हो। कुछ विचार तो करो कि इसका परिणाम क्या होगा? वह शेर जीवित होते ही हम सबको मारकर खा जाएगा।ह

विद्या के अभिमानी उन युवकों को अपनी विद्या का प्रदर्शन करना था। उन्होंने अपने उस मित्र की बात नहीं मानी। तब उस चौथे मित्र ने कहा, ह्यदि तुम्हें अपनी विद्या का चमत्कार दिखाना ही है तो दिखाओ। एक क्षण ठहर जाओ। मैं वृक्ष पर चढ़ जाऊँ तब इस शेर को जीवित करना।ह इतना कहकर वह पास के ही एक वृक्ष पर चढ़ गया।

तीसरे युवक ने अपनी विद्या का प्रयोग कर शेर को जीवित कर दिया। शेर ने अपने सामने तीन युवकों को खड़े देखा। उसने हवा में अपनी पूँछ लहराई। उसकी दहाड़ से सारा जंगल गूँज उठा। शेर ने झपट कर तीनों को मार डाला। पेट भरकर वह चला गया।

शेर के जाने के बाद चौथा युवक पेड़ से उतरा। उसने सोचा कि शास्त्रें और विद्याओं में कुशल होना ही पर्याप्त नहीं है। लोक-व्यवहार को समझने तथा अच्छे-बुरे का ज्ञान होना भी जरूरी है। विद्या की शक्ति तो बहुत है परन्तु उस शक्ति का बु)िमत्तापूर्वक प्रयोग करना आवश्यक है अन्यथा वह शक्ति अपना ही विनाश कर सकती है।ह

इसी प्रकार की बहुत सी कहानियाँ आचार्य विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को सुनाई। इस तरह राजकुमारों का ज्ञान तथा योग्यता बढ़ने लगी। विष्णु शर्मा द्वारा सुनाई गई इन कहानियों के संकलन को 'पंचतन्त्र' कहते हैं।

हमारे देश में *पंचतन्त्र, हितोपदेश* तथा *जातक-कथाएँ* प्रचलित हैं। इसी प्रकार कुछ देशों में अन्य कथाएँ जैसे *ईसप की कहानियाँ* प्रसि) हैं। इनमें मनुष्यों व पशु-पक्षियों के आचरण द्वारा अनेक प्रकार की शिक्षाएँ दी गई हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

प्रतापी =वीर और यशस्वी अंग-प्रत्यंग =शरीर के प्रत्येक अंग

पुनर्जीवित=फिर से जीवित अस्थि-पंजर =हड्डियों का ढाँचा

निरीह =असहाय तत्पर =तुरन्त तैयार होना

परामर्श =सलाह अशिष्ट =असभ्य, उद्दण्ड

शब्दों का खेल -

1.द्धकऋनीचे दिए गए शब्दों का शु) उच्चारण करो तथा अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखो-

अमरशक्ति, बहुशक्ति, उग्रशक्ति, अनन्तशक्ति, अशिष्ट, अंग-प्रत्यंग, अस्थि-पंजर, उद्दण्ड, परामर्श, मृत, पुनर्जीवित, क्रम, तत्पर

द्धखऋऐसे कम से कम तीन शब्द लिखो जिनके अन्त में 'शक्ति' शब्द जुड़ा हो।

द्धगऋ'सु' तथा 'कु' उपसर्ग जोड़कर तीन-तीन शब्द बनाओ -

जैसे - सु+पुत्र = सुपुत्रकु+पुत्र = कुपुत्र

द्धघऋ'अच्छे-बुरे' इन दोनों शब्दों के बीच की 'और' विभक्ति को हटाकर दोनों के बीच में योजक चिह्न द्ध-ऋ लगा दिया गया है। इस पाठ में इस प्रकार के बहुत से शब्द आए हैं। ढूँढ़ कर लिखो।

बोध प्रश्न

1.उत्तर दो -

द्धकऋराजा क्यों चिन्तित रहता था ?

द्धखऋराजा अमरशक्ति के पुत्र कैसी मूर्खता करते रहते थे ?

द्धगऋविष्णुशर्मा ने राजा से क्या कहा ?

द्धघऋविष्णुशर्मा ने राजा के बेटों को किस प्रकार शिक्षित किया ?

द्धəऋमित्र युवकों ने क्या किया ?

द्धचऋविद्या का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए ?

2.सोचो और बताओ -

ऌकऋअगर मृत शेर की जगह गाय होती तो क्या होता ?

ऌखऋपढ़ा–लिखा होना और बु(िमान होना, दोनों अलग बातें हैं। स्पष्ट करो।

ऌगऋमूर्ख पुत्र राजा बन जाते तो क्या होता ?

3.निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करो –

ऌकऋराजन् ! मेरे पास ऐसी सम्पत्ति है जो बाँटने और अभ्यास करने से बढ़ती जाती है यदि यह मेरे पास ही रहे तो यह घटने लगती है।

ऌखऋमुझे आप की सम्पत्ति की चाह नहीं है। मुझे आपके पुत्रें की भी चिन्ता नहीं है। मुझे तो चिन्ता यह है कि आज राजपुत्र ऐसे हैं तो कल का राजा कैसा होगा ?

ऌगऋशास्त्रें और विद्याओं में कुशल होना ही पर्याप्त नहीं है। लोक–व्यवहार को समझने तथा अच्छे–बुरे का ज्ञान होना भी जरूरी है।

ऌघऋविद्या की शक्ति तो बहुत है परन्तु उस शक्ति का बु(िमत्तापूर्वक प्रयोग करना आवश्यक है, अन्यथा वह शक्ति अपना ही विनाश कर सकती है।

तुम्हारी कलम से

- ऊँचे पदों पर सही व्यक्ति का चुनाव क्यों आवश्यक है ? सही व्यक्ति के क्या गुण होने चाहिए ?

अब करने की बारी

ऌकऋविष्णुशर्मा द्वारा सुनाई गई कहानी का अपनी कक्षा में अभिनय करो।

ऌखऋपंचतन्त्र तथा जातक कथाओं को अपने पुस्तकालय से किताब लेकर पढ़ो और कक्षा में सुनाओ।

ऌगऋइस पाठ में कितने अनुच्छेद हैं ? प्रत्येक अनुच्छेद की एक खास बात को लिखो।

इसे भी जानो –

मृत जीव–जन्तुओं के अस्थिपंजरों के अवशेषों द्धजीवाश्मोंत्र्ञ को देखकर उनके इतिहास के बारे में जाना जा सकता है कि वह किस युग में पैदा हुए, उनका रहन–सहन कैसा था, वह क्या खाते–पीते थे आदि। इस विज्ञान को *जीवाश्म विज्ञान द्धजीवाश्मिकीत्र्ञ* कहते हैं तथा जीवाश्मों की जानकारी प्राप्त करने वालों को *जीवाश्मवेत्ता* कहा जाता है।

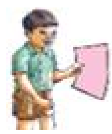

3

किस्मत का खेल

हर साल एक बड़े मन्दिर में वर्षा ;तु का उत्सव होता था। उत्सव में युद्धा का स्वांग होता था। युद्धा दो दलों में होता था। एक दल मन्दिर के पश्चिम की ओर रहने वालों का होता था और दूसरा दल पूर्व की ओर रहने वालों का। ढाल–तलवार लिए सैकड़ों लोग मैदान के दोनों ओर इकट्ठा होते थे। इशारा पाते ही वे एक दूसरे की ओर बढ़ते और लड़ना शुरू कर देते। इस लड़ाई में न कोई मरता न कोई घायल होता। सैकड़ों साल पहले उस स्थान पर दो राजाओं के बीच हुए युद्धा की याद में यह नकली यु) किया जाता था।

उत्सव के दिनों में बहुत बड़ा मेला भी लगता था। मेला कई दिनों तक चलता था। व्यापारी लोग देश के विभिन्न स्थानों से आते थे। तरह–तरह की चीजें बेचने के लिए सैकड़ों दुकानें होती थीं और कई खुले बाजार भी। लोग साल भर की चीजें खरीदने के लिए इस मेले का इन्तजार करते। मेले में सूई से लेकर हाथी तक तरह–तरह की चीजें बिकती थीं।

मैं छतरी खरीदने के लिए मेला जाना चाहता था। नाना जी ने मुझको दो रुपए दिए थे। मैंने अपने मामाजी से कहा कि वह चल कर छतरी खरीदवा दें। मामा जी ने कहा, हर्सिफ दो रुपए लेकर मेला जाओगे ? दो रुपए से क्या–क्या खरीदोगे ? मेले में बहुत सी चीजें खरीदने का मन करेगा।ह नाना जी ने उनकी बात सुनी तो मुझको दो रुपए और देकर कहा, हतुम्हारी जो मर्जी हो खरीद लेना।ह

मामा जी मुझको मेले में ले गए। हमारा साथी नानू भी हमारे साथ था। मेले में बहुत भीड़ थी। मैं मामा जी के पीछे–पीछे चल रहा था। रास्ते में उन्हें कुछ दोस्त मिल गए। वह उन्हें अपने साथ ले गए। मामा जी ने मुझसे कहा जब तक वह लौटें, मैं नानू के साथ घूमता रहूँ। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उनके आने तक कुछ न खरीदूँ।

नानू और मैं हर दुकान को देखने लगे। मैं बहुत सी चीजें खरीदना चाहता था, पर मुझे मामा जी के लौटने का इन्तजार था। हम उस दुकान पर आए जहाँ भाग्य का खेल चल रहा था। दुकानदार भला आदमी था। वह सबसे कह रहा था, हआओ, अपनी किस्मत आजमाओ।ह उसने हमें भी समझाया कि किस्मत कैसे आजमायी जाती है ? उसने कहा, हदेखो, यहाँ इनाम की छत्तीस चीजें रखी हैं। इन पर एक से लेकर छत्तीस तक नम्बर पड़े हैं। गोटें उल्टी रखी हैं, ताकि नम्बर न दिखाई दें। अब आप को बस यह करना है कि आठ आने दें और छः गोटें उठा लें। उन पर लिखे नम्बरों को जोड़ लें और जोड़कर हमें बता दें। जिस चीज पर वह नम्बर लिखा होगा, वह आपकी हो जाएगी। कोई खाली हाथ नहीं जाएगा। हर एक

को कुछ न कुछ जरूर मिलेगा। इनाम की चीजों के दाम चार आने से लेकर पचास रुपए तक हैं। अगर तुम्हारी किस्मत अच्छी हुई तो कोई कीमती चीज मिल जाएगी। यह तो किस्मत का खेल है, किस्मत का खेल।ह

एक बूढ़े आदमी ने अपनी किस्मत आजमायी। उसने अठन्नी देकर छः गोटें उठायीं। नम्बर जोड़े तो नौ निकला। उसको नौ नम्बर का इनाम दिया गया। बढ़िया घड़ी उसके हाथ लगी। घ ाड़ी तो सुन्दर थी पर बूढ़ा उसे लेना नहीं चाहता था। दुकानदार ने उसकी मदद की और चार रुपए में वह उससे खरीद ली। बूढ़ा खुश होकर चला गया।

फिर एक लड़के ने अपना भाग्य आजमाया। वह मुझसे कुछ ही बड़ा था। उसने भी अठन्नी देकर छः गोटें उठाईं। नम्बर जोड़े तो पन्द्रह निकले, और मिला क्या ? दो आने वाली छोटी सी कंघी, जो मुश्किल से चवन्नी की होगी। दुकानदार को लड़के पर तरस आया। उसने चवन्नी देकर कंघी खरीद ली। लड़के ने एक बार फिर अपनी किस्मत आजमायी। इस बार उसको तीन रुपये का फाउन्टेनपेन मिला। उसने तीसरी बार फिर कोशिश की और दस रुपए की कलाई–घड़ी मार ले गया। चौथी बार उसको एक टेबुल–लैम्प मिला जिसकी कीमत कम से कम चालीस रुपए होगी। वह लड़का बहुत ही खुश होकर चला गया।

मैं भी अपनी किस्मत आजमाना चाहता था। मैंने नानू की ओर देखा तो उसने भी हाँ कर दी। मैंने आठ आने देकर छः गोटें उठा लीं। मेरी किस्मत उतनी अच्छी नहीं निकली। मुझको सिर्फ दो पेंसिलें मिलीं। दुकानदार ने मुझसे वे पेंसिलें चवन्नी में खरीद लीं। मैंने फिर कोशिश की। इस बार स्याही की बोतल मिली। वह भी सस्ती चीज थी। दुकानदार ने वह भी चार आने में खरीद ली। मैंने तीसरी बार फिर गोटें उठाईं। किस्मत ने फिर भी साथ नहीं दिया।

मुझको बड़ी उम्मीद थी कि मुझको कोई बड़ा इनाम मिलेगा। मैं बार-बार अठन्नी देकर किस्मत आजमाता रहा, पर हर बार मुझको कोई छोटी सी चीज ही मिलती। अब मेरे पास कुल चार आने ही बचे, लेकिन दुकानदार ने फिर मेरे ऊपर मेहरबानी की। उसने कहा, कि मैं आखिरी दाँव चार आने देकर खेलूँ। इनाम मिलने पर हिसाब कर लिया जाएगा। मैंने आखिरी चवन्नी भी दाँव पर लगा दी।

लोग खड़े-खड़े देख रहे थे। कुछ मेरे ऊपर हँस रहे थे। नानू और मैं उस जगह गए जहाँ हमने मामा जी को छोड़ा था। मैं मामा जी के लौटने का इन्तजार करने लगा।

मामा जी आए तो मुझको देखकर बोले, हक्या बात है, करन ? परेशान क्यों लग रहे हो?ह मैं तो चुप रहा लेकिन नानू ने सारी बातें बता दी। मामा जी पहले तो बिगड़े, फिर मुस्करा कर मेरी पीठ थपथपाने लगे। उन्होंने मुझको अपने साथ ले जाकर एक अच्छी सी छतरी, बिस्कुट, मिठाई और कुछ चीजें खरीद दीं, फिर हम घर लौटे।

घर जाते हुए रास्ते में मामा जी ने बताया कि किस्मत के खेल वाले आदमी ने तुझको ठग लिया। मैंने कहा, हनहीं मामा जी, मेरी किस्मत खराब थी तो क्या करता ?ह मामा जी ने कहा, हनहीं बेटे, इसमें अच्छी या बुरी किस्मत का कोई सवाल नहीं था।ह मैंने कहा, हपर

मामा जी, मैंने खुद देखा कि एक बुड्ढे को घड़ी मिली और एक लड़के को दो तीन कीमती चीजें मिलीं।ह

मामा जी ने कहा, हृतुम नहीं जानते करन, वे सब दुकानदार के ही आदमी थे। उन्होंने यह चाल सिर्फ तुम लोगों को ृुसलाने के लिए चली थी। उनको अच्छी चीजें मिलते देख औरों का जी भी ललचा गया। उनको तो तुम्हारे पैसे से मतलब था और वह उन्हें मिल गया। अच्छा, उसके बारे में भूल जाओ और किसी से अपनी मूर्खता का जिक्र मत करना।ह

– शंकर

शंकर भारत के प्रसिद्धा कार्टूनिस्ट द्धकार्टून बनाने वालेऋ तथा बाल साहित्यकार हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ -

स्वांग=ढोंग, नकलकिस्मत=भाग्य

जिक्र=वर्णन, उल्लेखउम्मीद=आशा

शब्दों का खेल -

1.दिए गए अंश में उचित विराम-चिह्न लगाओ -

ाटक से ही शंख घड़ियाल नगाड़ा ढोल और खंजड़ी की आवाज सुनाई पड़ने लगी पुजारी गला ाड़-ाड़ कर मन्त्र पाठ करने लगे

भतीजों ने मुस्करा कर कहा महाराज इसके बारे में आपका क्या ख्याल है

राजा बोले यह तो शिक्षा का बड़ा सिद्धान्त जान पड़ता है

पीछे से किसी ने कहा महाराज आपने चिड़िया को भी देखा

2.ऐसे वाक्य की रचना करो -

द्धकऋजहाँ दो शब्दों के बीच में योजक चिह्न द्ध-ऋ का प्रयोग हुआ हो।

द्धखऋजिसके अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न द्ध?ऋ का प्रयोग हुआ हो।

द्धगऋजिसमें अल्प विराम चिह्न द्ध,ऋ का प्रयोग हुआ हो।

द्धघऋजिसमें विस्मयादि बोॠक चिह्न द्ध!ऋ का प्रयोग हुआ हो।

3.नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ -

तरह-तरह, ॠीरे-ॠीरे, भागते-भागते, रोते-रोते, हँसते-हँसते

4.नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं, इन्हें प्रश्नवाचक वाक्य में बदलो -

द्धकऋदो राजाओं के बीच हुए युद्धा की याद में नकली युद्ॠ किया जाता था।

द्धखऋवह मामा जी के पीछे-पीछे चल रहा था।

द्धगऋनानू ने मामा जी से सारी बात बता दी।

5.इन उदाहरणों को पढ़ो और समझो -

द्धकऋदीपिका और गीतिका ने अलग-अलग चित्र बनाए।

द्धखऋयह गीत दीपिका या गीतिका सुना सकती है।

द्धगऋदीपिका ने कहानी सुनाई(परन्तु गीतिका ने नहीं।

द्धघऋमैं कल आया था(लेकिन तुम नहीं आए।

द्धंऋबादल खूब गरजे(किन्तु वर्षा नहीं हुई।

6.अब एक-एक वाक्य तुम बनाओ जिसमें 'और', 'अथवा', 'किन्तु,', 'परन्तु' और 'लेकिन' का प्रयोग हुआ हो।

बोधृ प्रश्न

1.उत्तर दो -

द्धकऋवर्षा ;तु के उत्सव में लोग युद्धा का स्वांग किस प्रकार करते थे ?

द्धखऋकरन मेला किसके साथ गया तथा वह मेले से क्या-क्या खरीदना चाहता था ?

द्धगऋकरन के पहले किन-किन लोगों ने बाजी लगाई ?

द्धघऋकरन के पहले चार बार बाजी लगाने वाले लड़के को क्या वस्तुएँ मिलीं ?

द्धंऋमामा जी ने किस्मत के खेल के विषय में क्या समझाया ?

द्धचऋकरन की बाजी हारने के विषय में पहले क्या राय थी ?

2.सोचो और बताओ -

द्धकऋखेल में पहले बाजी लगाने वाले क्यों लगातार बाजी जीतते गए ?

द्धखऋकरन की जगह तुम होते तो क्या बाजी जीत जाते ? यदि 'हाँ' तो क्यों और 'नहीं' तो क्यों ?

द्धगऋयदि बूढ़ा आदमी और एक छोटा लड़का पहले बाजी नहीं जीतते तो किस्मत के खेल पर क्या प्रभाव पड़ता?

3.नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इन्हें कहानी के क्रम में लिखो –

द्धकऋघर जाते हुए रास्ते में मामा जी ने बताया कि किस्मत के खेल वाले आदमी ने तुझको ठग लिया था।

द्धखऋमैं बार–बार अठन्नी देकर किस्मत आजमाता रहा।

द्धगऋउत्सव के दिनों में बहुत बड़ा मेला भी लगता।

द्धघऋएक बूढ़े आदमी ने अपनी किस्मत आजमायी।

र्द्धऋमामा जी मुझे मेला ले गए।

द्धचऋfिर उस दुकान पर आए जहाँ भाग्य का खेल चल रहा था।

4.नीचे बायाँ स्तम्भ कारण और दायाँ स्तम्भ परिणाम के लिए बना है(किन्तु कहीं कारण गायब है तो कहीं परिणाम। पाठ के आऋार पर सोचो और भरो –

क्योंकि द्धकारणऋ इसलिए द्धपरिणामऋ

उत्सव में युद्धा का स्वांग होता था।
इसलिए इस लड़ाई में न कोई घायल होता और न कोई मरता था।
υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ
लोग सालभर की चीजें खरीदने केलिए इस मेले का इन्तजार करते।
रास्ते में मामाजी के कुछ दोस्त मिल गये।
υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

बूढ़ा खुश होकर चला गया।

लोग मेरे ऊपर हँस रहे थे।

υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

बुड्ढे को घड़ी और एक लड़के को दो-तीन कीमती चीजें मिलीं।

तुम्हारी कलम से

1. इन्हें करते समय क्या-क्या सावऋानी बरतनी चाहिए -

द्धकऋमेला जाते समय रास्ते में। द्धखऋमेले में घूमते समय।

द्धगऋमेले में कुछ खाते-पीते समय। द्धघऋमेले में कुछ खरीदते समय।

द्धंऋमेले के खेल-तमाशों को देखते समय।

अब करने की बारी

द्धकऋकहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में सुनाओ।

द्धखऋकिसी मेले में इस तरह के कितने खेल तुमने देखे हैं जिनमें कुछ लोग ठगते हैं ? उनकी सूची बनाओ।

द्धगऋतुम कहाँ-कहाँ मेले में गए हो तथा क्या-क्या खरीदा है ? सूची बनाओ।

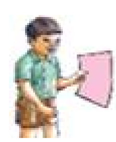

4

जब मैं पढ़ता था

मेरे पिता करमचन्द गांॠी राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। वे सदा न्याय करते थे।

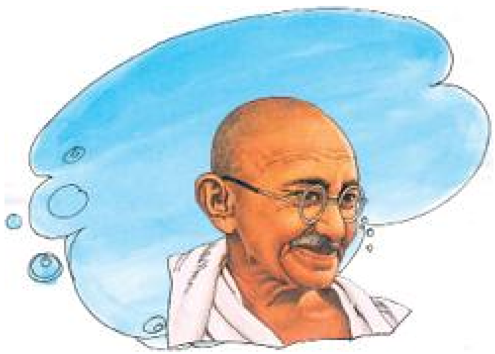

मेरी माता जी का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे ॠार्मिक विचारों की महिला थीं। पूजा–पाठ किए बिना भोजन नहीं करती थीं।

2 अक्टूबर सन् 1869 को पोरबन्दर में मेरा जन्म हुआ। पोरबन्दर से पिताजी जब राजकोट गए तब मेरी उम्र सात वर्ष की रही होगी। पाठशाला से फिर ऊपर स्कूल में और वहाँ से हाईस्कूल में गया। मुझे यह याद नहीं है कि मैंने कभी भी किसी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो। मैं बहुत संकोची था। एक बार पिताजी 'श्रवण–पितृभक्ति' नामक पुस्तक खरीद कर लाए। मैंने उसे बहुत शौक से पढ़ा। उन दिनों बाइस्कोप में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अन्ॠे माता–पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाले श्रवण कुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। मैंने मन ही मन तय किया कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक भी देखा था। बार–बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चन्द्र के सपने आते। बार–बार मेरे मन में यह बात उठती थी कि सभी हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें? यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चन्द्र की भाँति कष्ट उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया।

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं, यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैण्ड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुॠारने का प्रयत्न किया परन्तु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है?

सुलेख शिक्षा का एक जरूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो जाते हैं।

अपने आचरण की तरु मैं बहुत धयान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो, जिसके लिए शिक्षक मुझे दण्ड दे, तो यह मेरे लिए असह्य था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दुःख न था, पर मैं दण्ड का पात्र समझा गया, इस बात का बहुत दुःख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

दूसरी बात सातवीं कक्षा की है। उस समय हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे, फिर भी वे विद्यार्थियों के लिए प्रिय थे। वे स्वयं ठीक काम करते और दूसरों से भी ठीक काम लेते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिये थे। मेरा मन इन चीजों में न लगता था। अनिवार्य होने से पहले मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट या फुटबाल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ न जाने में मेरा संकोची स्वभाव भी कारण था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति अरुचि मेरी गलती थी। उस समय मेरे मन में गलत विचार घर किए हुए था कि व्यायाम का शिक्षण के साथ कोई सम्बन्ॠ नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत जरूरी है।

व्यायाम में अरुचि का दूसरा कारण था- पिताजी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल बन्द होते ही घर जाकर उनकी सेवा में लग जाता। व्यायाम अनिवार्य होने से इस सेवा में विघ्न

पड़ने लगा। मैंने पिताजी की सेवा के लिए व्यायाम से छुटकारा पाने का प्रार्थना पत्र दिया पर हेडमास्टर साहब कब छोड़ने वाले थे।

एक शनिवार को स्कूल सबेरे का था। शाम को चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल थे, इससे समय का पता न चला। बादलों से धोखा खा गया। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी, बता दी। उन्होंने उसे नहीं माना और मुझे एक या दो आना, ठीक याद नहीं कितना दण्ड देना पड़ा। मैं झूठा बना। मुझे भारी दु:ख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ यह कैसे सिद्धा करूँ। कोई उपाय नहीं था। मैं मन मारकर रह गया। बाद में समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए।

- मोहनदास करमचन्द गांधी

'बापू' और 'राष्ट्रपिता' के नाम से पुकारे जाने वाले महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र हुआ। इनकी दृष्टि में सभी मनुष्य एक परमात्मा की सन्तान हैं और बराबर हैं। इस प्रकार उन्होंने जाति-पाँति, ऊँच-नीच या धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेद को व्यर्थ बताया।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

सत्यप्रिय =सच्चाई चाहने वाला अप्रसन्न =नाराज

सत्यवादी = सच बोलने वाला गर्व =अभिमान

छात्रवृत्ति =वजीफा अनिवार्य =जो टाला न जा सके

असहनीय =सहन न करने योग्य असावधान =जो सावधान न हो

शब्दों का खेल

1.'धर्म' शब्द में 'इक' लगाने पर 'धार्मिक' बनता है। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में 'इक' लगाकर नए शब्द बनाओ-

मास..................................पक्ष..................................

वर्ष..................................सप्ताह...................................

2.नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखो-

सावधान ....पूर्ण...................................

रुचि..................................न्याय...................................

प्रसन्न ....सभ्य...................................

3.इसे भी जानो -

द्धकऋजो पिता का भक्त हो-पितृभक्त

द्धखऋजो सत्य बोलता हो-सत्यवादी

द्धगऋजिसे सत्य प्यारा हो-सत्यप्रिय

द्धघऋसत्य के लिए आग्रह-सत्याग्रह

4.नीचे लिखे शब्दों को शुद्धा रूप में लिखो-

अनुसाशन ....अपुर्ण ....

धार्मीक ....शुलेख ....

शाहसी ....लभकारी ....

5.नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करो-

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली

बोध प्रश्न-

1.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो-

द्धकऋगांध्री जी की माता का स्वभाव कैसा था?

द्धखऋ'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक देखकर गांध्री जी ने क्या निश्चय किया?

द्धगऋसैर करने की आदत से गांऋी जी को क्या लाभ हुआ?

द्धघऋगांऋी जी किस बात की तरु विशेष धयान देते थे ?

द्धॅऋइस पाठ से गांऋी जी के व्यक्तित्व के किन-किन गुणों का पता चलता है?

2.क्या होता था जब- द्धमौखिक उत्तर देंऋ

द्धकऋगांऋी जी से कभी कोई भूल हो जाती थी।

द्धखऋगांऋी जी जब किसी की सुन्दर लिखावट देखते थे।

द्धगऋगांऋी जी को स्कूल में कोई दण्ड मिलता था।

3.इन बातों के सम्बन्धा में तुम्हारे क्या विचार हैं -

द्धकऋसुन्दर लिखावट

द्धखऋप्रातःकाल भ्रमण

द्धगऋखेलने और व्यायाम

द्धघऋकोई भूल हो जाना

द्धॅऋसत्य बोलना

प्रातःकाल व्यायाम करना चाहिए।

इस वाक्य में प्रातःकाल और व्यायाम शब्दों का एक साथ प्रयोग हुआ है। ऐसे दो वाक्य और बनाओ जिनमें इन दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग हो।

....

....

तुम्हारी कलम से

अपनी पसन्द के व्यक्ति के बारे में कुछ वाक्य लिखो। तुम्हें वह क्यों पसन्द हैं ? तुम बड़े होकर किसके जैसा बनना चाहोगे ?

अब करने की बारी -

द्धकऋअपने बड़ों से सत्य हरिश्चन्द्र की कथा सुनकर कक्षा में सुनाओ।

द्धखऋगांऋी जी के जीवन से सम्बन्धित तस्वीरें इकट्ठा करो और एक उनका एलबम बनाओ।

द्धगऋगांऋी जी की प्रिय रामऋुन 'रघुपति राघव राजाराम' याद करो और विद्यालय की बाल सभा/गांऋी जयन्ती पर सुनाओ।

द्धघऋपत्र–पत्रिकाओं से गांऋी जी के जीवन से जुड़े प्रसंग चुनकर संग्रह करो।

इसे भी करो –

खाली स्थानों में परिवार के सदस्यों का नाम लिख कर अपने परिवार का वंश–वृक्ष बनाओ –

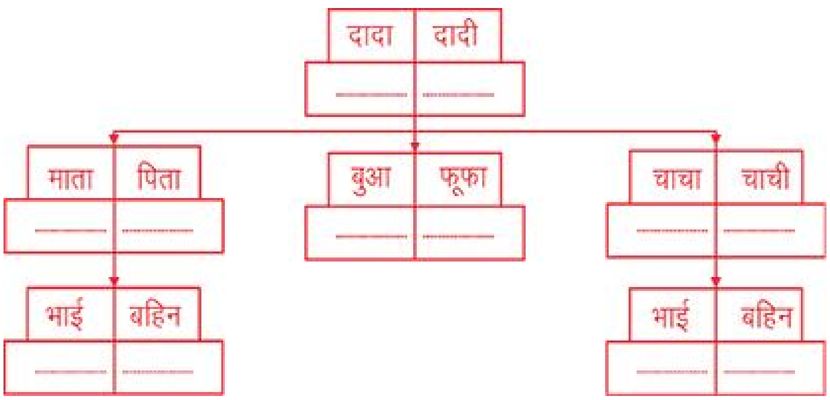

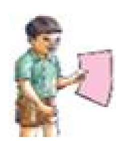

5

प्रकृति की सीख

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती, ऋैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

– सोहन लाल द्विवेदी

फतेहपुर जिले के बिंदकी नामक कस्बे में जन्मे कवि सोहन लाल द्विवेदी की कविताओं में राष्ट्र-प्रेम तथा राष्ट्रीय जागरण का स्वर मुखर है। 'दूऋबतासा' तथा 'शिशु-भारती' इनके प्रसिद्धा बालगीतों के संग्रह हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

तरल तरंग =पानी की चपल या चंचल लहर।

मृदुल =कोमल

उमंग =जोश, उत्साह

धैर्य =धीरज

भावबोध

1.निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो-

द्धकऋपर्वत क्या सन्देश दे रहा है ?

द्धखऋतरंग क्या कहती है ?

द्धगऋसंसार को ढक लेने की सीख कौन दे रहा है ?

द्धघऋप्रकृति से हमें क्या-क्या सीख मिलती है ?

2.नीचे स्तम्भ 'क' में प्रकृति के कुछ अंगों के नाम लिखे गए हैं। स्तम्भ 'ख' में उनसे मिलने वाली सीख बिना क्रम में लिखी गई हैं, उन्हें सही क्रम में लिखो–

क ख

पर्वत धैर्य न छोड़ो

सागर ढक लो तुम सारा संसार

तरंग गहराई लाओ

पृथ्वी हृदय में उमंग भर लो

नभ ऊँचे बन जाओ

3.रिक्त स्थानों को भर कर कविता को पूरा करो–

पर्वत कहता शीश उठाकर,

....

सागर कहता है..................

....

समझ रहे हो क्या कहती है

....

....

मीठी–मीठी मृदुल उमंग।

4.निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो –

द्धकऋसागर कहता है लहराकर, मन में गहराई लाओ।

द्धखऋपृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो, कितना ही हो सिर पर भार।

द्धगऋभर लो, भर लो अपने मन में, मीठी–मीठी मृदुल उमंग।

द्धघ्रूनभ कहता है ैलो इतना, ढक लो तुम सारा संसार।

तुम्हारी कलम से

1.क्या सीख मिलती है ?

 वृक्षों से - ूलों से -

 नदियों से - कोयल से -

अब करने की बारी -

द्धकऋपर्वत और लहराते हुए सागर का चित्र बनाओ।

द्धखऋ'प्रकृति वर्णन' से सम्बन्धिृत कविताओं का संकलन करो।

द्धगऋइस कविता को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाओ।

यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे, तो उसकी हर भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

. महात्मा गाँधी

कितना सीखा-1

1.निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो -

द्धकऋ'पथ मेरा आलोकित कर दो' शीर्षक कविता में कवि क्या वरदान माँग रहा है ?

द्धखऋनिश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कवि ने क्या माँगा और क्यों
माँगा है ?

द्धगऋगांधी जी किस भूल के लिए जीवन भर पछताते रहे और इसके लिए उन्होंने क्या सुझाव दिया है ?

द्धघऋबालक करन 'किस्मत का खेल' के प्रति कैसे आकर्षित हुआ?

2.इन पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिखो -

द्धकऋपृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो, द्धखऋपथ मेरा आलोकित कर दो।

कितना ही हो, सिर पर भार। नवल प्रात की नवल रश्मियों से

नभ कहता है, ैलो इतना, मेरे उर का तम हर दो।।

ढक लो तुम सारा संसार।।

3.द्धकऋनीचे दिए गए शब्दों में 'सु' तथा 'कु' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाओ और उनके अर्थ भी लिखो –

पात्र, मार्ग, योग, मति, बुद्धि

द्धखऋवर्तनी शुद्ध करो –

म्रित, असिश्ट, निदिष्ट, कृतग्य, पित्रभक्त, रंगना, हंसना

द्धगऋनीचे दिए गए शब्दों में से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखो –

सुनाया, युवक, मीठा, जुम्मन, ऋार्मिक, देखा, वह, भलाई, उसने, भला

4.विष्णुशर्मा द्वारा सुनायी गयी चार मित्रें की कहानी संक्षेप में सुनाओ।

अपने-आप 1

श्रवण कुमार

श्रवण कुमार अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। उसके वृद्ध माता-पिता देख नहीं पाते थे। श्रवण उनकी भली प्रकार देख-भाल और सेवा करता था।

एक बार माता-पिता ने कहा, ह्रबेटा, हम तीर्थ यात्र करना चाहते हैं, परन्तु क्या करें, देख नहीं सकते, अतः स्वयं यात्र करने में समर्थ नहीं हैं।ह्र श्रवण बोला ह्रआप चिन्ता न करें। मैं आपको यात्र पर ले चलूँगा।ह्र श्रवण ने दो टोकरियों से काँवर तैयार की। उसमें एक ओर माता को और दूसरी ओर पिता को बिठाया। काँवर उठाकर वह यात्र पर चल दिया।

श्रवण ने उन्हें अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण कराया। एक बार वे एक वन से होकर जा रहे थे। मार्ग में वृ) माता–पिता को प्यास लगी। श्रवण ने माता–पिता को छाँव में बिठाया और घ ाड़ा लेकर पास ही बहती नदी से पानी लाने चला गया।

उस समय अयोधया के राजा दशरथ वन में आखेट कर रहे थे। घड़े में पानी भरने की आवाज सुनकर उन्हें लगा कि कोई जंगली जानवर नदी में पानी पी रहा है। राजा ने तुरन्त शब्द–वेऋी बाण चला दिया।

बाण लगते ही श्रवण चीत्कार कर भूमि पर गिर पड़ा। राजा दौड़ कर वहाँ पहुँचे तो अपनी भूल पर उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ परन्तु अब क्या हो सकता था ?

श्रवण ने कहा, ह्मेरे वृ) माता–पिता मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। कृपा कर उन्हें पानी पिला दें।ह यह कहकर उसने प्राण त्याग दिए। राजा बहुत दु:खी मन से उसके वृ) माता–पिता के पास गए। उन्हें अपना अपराऋ बताकर क्षमा माँगी, किन्तु माता–पिता के दु:ख की सीमा न रही। वृ) पिता ने कहा, ह्जिस प्रकार पुत्र वियोग में हम प्राण त्याग रहे हैं उसी प्रकार तुम्हें भी अपने पुत्र वियोग का दु:ख भोगना होगा।ह श्रवण कुमार का नाम उनकी मातृ–पितृ भक्ति के लिए अमर है।

4.विष्णुशर्मा द्वारा सुनायी गयी चार मित्रें की कहानी संक्षेप में सुनाओ।

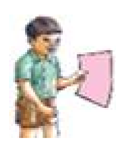

6

वनदेवी और राजा

हिमालय की तलहटी में एक राजा राज्य करता था। एक बार उसके मन में विचार आया कि वह एक ऐसा महल बनाए जैसा आज तक किसी ने न देखा हो। उसने निश्चय किया कि

वह ऐसा महल बनाएगा जो केवल एक ही स्तम्भ पर टिका हो और यह स्तम्भ उसके राज्य के सबसे विशाल वृक्ष से बनाया जाएगा।

हिमालय की ऊँची-ऊँची पहाड़ियों में अनेक विशाल वृक्ष होते हैं, चीड़, बाँस, देवदार। इनमें देवदार के वृक्ष सबसे ऊँचे, सुगन्ध्रित और मजबूत होते हैं। देवदार का अर्थ है 'देवताओं का वृक्ष'।

राजा ने प्रधानमन्त्री को बुलाकर कहा, ह्लकड़हारों से कहिए कि वे जंगल के सबसे ऊँचे और विशाल देवदार के वृक्ष को काटकर ले आएँ।ह नन्ही राजकुमारी बोली, ह्पिताजी, देवदार पवित्र वृक्ष है। इसकी लकड़ी से तो केवल मन्दिर बनाए जाते हैं।ह राजा बोला, ह्यह तो और भी अच्छी बात है। मेरा महल भी मन्दिर जैसा महिमावान बनेगा।ह

प्रधानमन्त्री ने पर्वतों से देवदार वृक्ष लाने के लिए अनेक लोगों को भेजा। वे लोग कुछ दिन बाद लौट आए। उन्होंने कहा, ह्महाराज, पर्वतों पर बहुत बड़े-बड़े देवदार वृक्ष हैं, परन्तु उतने बड़े वृक्षों को इतनी दूर तक खींच कर ला पाना सम्भव नहीं है।ह

राजा ने राजकुमार से कहा, ह्अपने घुड़सवारों को लेकर जाओ और घोड़ों से वृक्ष को खिंचवाकर यहाँ लेकर आओ।ह राजकुमार कुछ दिनों में ही घोड़ों के साथ वापस आ गया। उसने कहा, ह्महाराज वे वृक्ष इतने विशाल हैं कि हमारे घोड़े उन्हें एक इंच भी नहीं हिला पाएँगे।ह

राजा ने कहा, ह्ठीक है, अब तुम हाथियों को लेकर जाओ और वृक्ष को लेकर आओ।ह हाथी ऊँचे-नीचे पर्वतों पर चढ़ नहीं पाए और राजा के कारिन्दे वापस आ गए। राजा को

बहुत क्रोध आया। वह बोला, ह्यदि पर्वतों से देवदार का वृक्ष नहीं लाया जा सकता तो मैदान में तो कोई वैसा ही विशाल वृक्ष होगा। ऐसा वृक्ष ढूँढ़कर सात दिन में यहाँ लाया जाए।ह

राजा के कारिन्दों को महल के निकट ही एक वृक्ष मिल गया। आसपास के गाँव के लोग सदियों से इस वृक्ष की पूजा करते थे। वह वृक्ष दिव्य, मजबूत तथा विशाल था। उस वृक्ष पर वनदेवी का वास था।

गाँव के लोगों को जब यह ज्ञात हुआ कि राजा ने उस वृक्ष को काटकर उससे अपने महल का स्तम्भ बनाने का निर्णय कर लिया है तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। वे फूलमालाएँ लेकर उस वृक्ष के पास आए। उन्होंने दीपक जलाकर वृक्ष के चारों ओर रख दिए और उसकी शाखाओं में मालाएँ लटका दीं। तब वे वेदनापूर्ण स्वर में गीत गाने लगे। अपने गीत में उन्होंने वनदेवी को राजा का निर्णय बताया और उनसे राजा के निर्णय के लिए क्षमा माँगी।

वनदेवी ने लोगों की पुकार सुनी। शीघ्र ही वृक्ष की पत्तियाँ सरसराने लगीं और उसकी ऊपर की शाखाएँ नीचे झुक आई। लोगों को ज्ञात हो गया कि वनदेवी ने उनकी बात सुन ली है। वे अपने-अपने घरों को लौट गए।

उस रात राजा अपने महल में निद्रामग्न था। अचानक उसके स्वप्न में चमकते हरे पत्तों के परिऋ्रान में लिपटी एक दिव्य मूर्ति प्रकट हुई। पत्तियों की सरसराहट जैसी मऋ्रुर आवाज में उस देवी ने राजा से कहा, हहे राजन्, मैं देवदार के वृक्ष की देवी हूँ। लोगों का कहना है कि आप वह वृक्ष काटना चाहते हैं। मेरी विनती है कि आप यह विचार त्याग दें।ह राजा ने कहा, हहे देवी, मैं तो वृक्ष को काटने का निश्चय कर चुका हूँ। मेरे निकट के क्षेत्र में तुम्हारा वृक्ष ही सबसे विशाल है और महल के स्तम्भ के रूप में काम आ सकता है।ह वनदेवी ने फिर कहा, हराजन, विचार कीजिए सैकड़ों वर्षों से लोग मेरी पूजा करते आ रहे हैं, मैंने सदैव लोगों का कल्याण किया है। मुझ पर पक्षी बसेरा बनाते हैं। मैं यात्रियों को शीतल छाया देती हूँ। वन्य प्राणी मेरे तने से अपने शरीर को खुजलाकर आराम देते हैं। मेरे नीचे हजारों लताएँ पनपती हैं। मैं मिट्टी को कटने से रोकती हूँ। बच्चे मेरे आस-पास खेलते हैं। वन से आती हुई स्त्रियाँ पल भर मेरी छाया में ठहरकर विश्राम करती हैं। वृक्ष को काटने से इन सभी को कष्ट होगा।ह

राजा ने कहा, हहे ममतामयी वनदेवी, आपका कथन पूर्णतया सत्य है, मगर मैं क्या करूँ? मैं आपके वृक्ष को काटने का निश्चय कर चुका हूँ और अब निश्चय को नहीं बदल सकता।ह वनदेवी ने अपना सिर झुका लिया और दु:खी स्वर में बोली, हहे राजन! यदि तुम्हारा यही निश्चय है तो मेरी एक विनती सुन लो। मेरे शरीर को तीन हिस्सों में काटकर गिराना। सबसे पहले मेरे हरे-भरे मुकुट जैसे शीर्ष भाग को काटना। तब मेरे शाखाओं वाले मधय भाग को गिराना। सर्वाऋ्रिक सुदृढ़ और मजबूत आऋ्रार को सबसे अन्त में काटना यही मेरी प्रार्थना है।ह

राजा को बहुत आश्चर्य हुआ, उसने कहा, हहे वनदेवी ! आपकी प्रार्थना बड़ी विचित्र है! आप मृत्यु का कष्ट तीन बार क्यों भोगना चाहती हैं ?ह

वनदेवी ने कहा, हराजन, कारण स्पष्ट है। मेरे नीचे भूमि पर सैकड़ों देवदार के पौत्र्रे उग आए हैं। यदि मुझे एक ही बार में काटकर गिराएँगे तो मेरे भार से यह सभी पौत्र्रे नष्ट हो जाएँगे। यदि मुझे तीन बार में थोड़ा-थोड़ा करके काटोगे तो सम्भवतः कुछ पौत्र्रे बच जाएँ जो बड़े होकर ृिर लोगों के काम आएँगे। क्या तुम्हें मेरी यह प्रार्थना स्वीकार है ?ह

हदेवी, आपकी प्रार्थना मुझे स्वीकार हैह राजा ने कहा। देवी स्वप्न से विलीन हो गई।

दूसरे दिन राजा ने अपने परिवारजनों, मन्त्रियों, दरबारियों और जनता को बुलाकर कहा, हअब मेरे महल का स्तम्भ देवदार के तने के स्थान पर पत्थर का बनेगा। वृक्ष पर एक महान आत्मा रहती है जो सदा लोगों की भलाई का कार्य करती है। वृक्ष को नहीं काटा जाएगा।ह राजा ने अपना महल पत्थर के स्तम्भ का बनवाया। उसके चारों ओर सुन्दर बाग लगवाया जिसमें बहुत से वृक्ष और ॄल-पौत्र्रे थे। बच्चे और बड़े-बूढ़े इस बाग में आते। वृक्षों की शीतल छाया में बैठते। बच्चे वहाँ खेला करते।

राजा की तरह अन्य लोगों ने भी लकड़ी से मकान बनाना बन्द कर दिया। अब वे भी पत्थरों के मकान बनाने लगे। जंगल में वृक्ष अपनी विशाल भुजाएँ ॅैलाकर लोगों को छाया और जीवनदायिनी हवा प्रदान करते रहे।

- रस्किन बान्ड

देहरादून में जन्मे रस्किन बान्ड ने बच्चों के लिए अनेक कहानियाँ लिखी हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

तलहटी =तली वेदनापूर्ण =दु:ख से भरा

अनूठा =विलक्षण, निराला शीर्ष भाग=चोटी, सबसे ऊपर का भाग

सुगन्धित=सुगन्ध से युक्त निद्रामग्न=नींद में डूबा

स्तम्भ =खम्भा निर्णय =निश्चय

महिमावान=महिमा युक्त कारिन्दे =मातहत, सेवक

परित्र्ाान =वस्त्र पूर्णतया=पूरी तरह

जीवनदायिनी=जीवन देने वाली विलीन=छिप जाना

शब्दों का खेल

1.निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया को ढूँढ़ कर लिखो -

द्धकऋहिमालय की तलहटी में एक राजा राज्य करता था।

द्धखऋराजकुमारी बोली, ह्पिताजी, देवदार तो पवित्र वृक्ष है।ह

द्धगऋमेरे महल का स्तम्भ देवदार के तने के स्थान पर पत्थर का बनेगा।

2.वीर सिपाही देश की रक्षा करते हैं।

ऊपर लिखे गए वाक्य में 'वीर' शब्द सिपाही की विशेषता बता रहा है ऐसे शब्द विशेषण कहलाते हैं। नीचे लिखे गए वाक्यों में विशेषण छाँटो-

द्धकऋतुम बहुत मीठा बोलते हो।

द्धखऋसफ़ेद कपड़े सुन्दर लगते हैं।

द्धगऋकविता अच्छी लड़की है।

द्धघऋकड़ी मेहनत रंग लाती है।

द्धङऋधारती गोल है।

3.इन वाक्यों को पढ़ो -

सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

चलते-चलते वह थक गया।

पढ़ते-पढ़ते कब रात बीत गयी, उसे पता ही नहीं चल पाया।

- अब तुम भी वाक्य बनाओ जिनमें नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग हो -

गाते-गातेखेलते-खेलते

हँसते-हँसतेरोते-रोते

4.इन वाक्यों को शु) करके लिखो -

द्धकऋहिमालय तलहटी में एक राजा राज्य करती थी।

द्धखऋउसके स्वप्न में एक दिव्य मूर्ति प्रकट हुआ।

द्धगऋमेरा विनती है कि आप यह विचार त्याग दें।

द्धघऋवृक्ष को नहीं काटी जाएगी।

बोध प्रश्न

1.उत्तर दो -

द्धकऋराजा किस प्रकार का महल बनाना चाहता था ?

द्धखऋराजा ने अपने प्रऋानमन्त्री को क्या आज्ञा दी ?

द्धगऋराजकुमारी ने राजा से क्या कहा ?

द्धघऋगाँव के लोगों ने राजा का निर्णय ज्ञात होने पर क्या किया ?

र्द्धऋवनदेवी ने स्वप्न में राजा से क्या निवेदन किया ?

द्धचऋवनदेवी ने वृक्ष को तीन बार में काटने को क्यों कहा ?

द्धछऋवनदेवी के अंतिम निवेदन से राजा पर क्या प्रभाव पड़ा ?

2.सही विकल्प चुनो–

द्धकऋगाँव के लोग देवदार वृक्ष की पूजा करते थे, क्योंकि

- वह बहुत विशाल था।
- उस पर वनदेवी का निवास था।
- राजा ने उन्हें ऐसा आदेश दिया था।

द्धखऋवनदेवी राजा के स्वप्न में प्रकट हुई क्योंकि –

- वह राजा से भेंट करना चाहती थी।
- वह राजा से बदला लेना चाहती थी।
- वह राजा को वृक्ष काटने से रोकना चाहती थी।

द्धगऋराजा के ींसला बदल लेने का अन्य व्यक्तियों पर क्या प्रभाव पड़ा –

- उन्होंने भी अपने मकान पत्थरों से बनवाए।
- उन्होंने राजा का आदेश मानना छोड़ दिया।
- उन्होंने अपने मकान नष्ट कर दिए।

3.सोचो और बताओ –

द्धकऋक्या यह वास्तविक कहानी है ? तुम क्या समझते हो ? अपने उत्तर का कारण भी दो।

द्धखऋक्या इस कहानी का अन्त किसी दूसरे प्रकार से भी हो सकता है ?
कैसे ?

द्धगऋकहानी के किस अनुच्छेद ने तुम्हें सबसे ज्यादा प्रभावित किया, और क्यों?

द्धघऋक्या इस कहानी का और भी कोई शीर्षक हो सकता है ?

तुम्हारी कलम से –

1.'पेड़ हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी हैं ?' इस विषय पर अपने विचार लिखो। नीचे दिये गये संकेतों की मदद ले सकते हो –

मनुष्यों के लिए – ढल, शुद्धा हवा, लकड़ी, वस्त्र, कागज, दवा ..... आदि
जीव-जन्तुओं के लिए – आश्रय, भोजन, छाया .... आदि।
अब करने की बारी

- अपने विद्यालय के पुस्तकालय से 'रस्किन बाण्ड' की हिन्दी में अनूदित अन्य कथाएँ पढ़ो।

अपने विद्यालय/गाँव-मोहल्ले, पास-पड़ोस में वृक्ष लगाओ।

इसे भी जानो

जहाँ जंगल है, वहाँ पानी है, सफ़ हवा है, सुन्दरता है और सम्पन्नता भी। गाँव वाले जंगल से प्यार नहीं करेंगे तो किससे करेंगे ? सुख-दुःख में वही उनके काम आता है। उसी से गाँव स्वर्ग जैसा बनता है।

कुछ लोग गाँव से जंगल का रिश्ता तोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, लेकिन अब महिलाएँ, बच्चे, बूढ़े, जवान सब सजग हो चुके हैं। *गढ़वाल* का *'चिपको आन्दोलन'* इसकी मिसाल है। जहाँ महिलाएँ और बच्चे यह कहते हुए पेड़ों से चिपक गए कि ह्बिना हमें काटे पेड़ नहीं काट सकोगेह। मजदूर कुल्हाड़ी ही नहीं चला सके, क्योंकि कटने वाले पेड़ के तने से गाँववासी लिपट जाते थे।

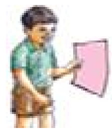

7

वीर अभिमन्यु

ज़आप इस तरह सोच में क्यों बैठे हैं महाराज ! युद्ध के क्या समाचार हैं ञ्ञ सोलह वर्ष के अभिमन्यु ने युधिष्ठिर के चरण छूकर पूछा।

ञ्समाचार अच्छे नहीं हैंए बेटा ! लेकिन तुम क्यों चिन्ता करते हो ६ हम लोग तो हैं हीञ्ञ युधिष्ठिर ने कहा।

ज़्मुझे भी बताइएञ्ञ अभिमन्यु ने आग्रह किया।

युधिष्ठिर बोले . ज़्यह तो तुम जानते ही हो कि अभी तक हमारी जीत हो रही थी। कौरव सेना के बहुत से वीर मारे गए हैं परन्तु आज जब अर्जुन यहाँ नहीं हैंए तब कौरवों ने चक्रव्यूह की रचना की है और हमें ललकारा हैञ्ञ

ज़्तो इसमें चिन्ता की क्या बात है ञ्ञ . अभिमन्यु ने पूछा।

युधिष्ठिर ने कहाए ज़्तुम नहीं जानते कि चक्रव्यूह का तोड़ना कितना कठिन है ६ उसमें सेना को चक्करदार घेरे में खड़ा किया जाता है। व्यूह में सात द्वार होते हैं और हर द्वार को तोड़ने की एक विशेष विधि होती है। हममें से तुम्हारे पिता अर्जुन के अलावा

और कोई चक्रव्यूह तोड़ना नहीं जानता। यदि हम कल चक्रव्यूह की लड़ाई में नहीं जाते तो हमारी हार मानी जाएगी।ऋ

ज़आप चिन्ता न करें। मुझे युद्ध में जाने की आज्ञा देंए मैं चक्रव्यूह तोड़ दूँगाऋ अभिमन्यु ने कहा। युधिष्ठिर बोलेए ज़्तुमने चक्रव्यूह तोड़ने की विद्या कब सीखी झ अभिमन्यु ने उत्तर दियाए ज़्महाराज एक बार पिताजी ने माँ से चक्रव्यूह तोड़ने का वर्णन किया था। उस समय मैं माँ के पेट में था और मैंने यह वर्णन सुना। तभी से मैं यह विद्या जानता हूँए केवल व्यूह से निकलना नहीं जानताए क्योंकि जब अन्तिम द्वार तोड़ने का वर्णन आया तभी माँ को नींद आ गई और पिताजी ने वर्णन बन्द कर दिया।ऋ

ज़अन्तिम द्वार को तो मैं अपनी गदा से ही तोड़ दूँगाऋ भीम ने गदा हिलाते हुए गरज कर कहा।

युधिष्ठिर ने अभिमन्यु से कहा . ज़्लेकिन तुम अभी बालक होए हम तुम्हें लड़ाई में कैसे भेज सकते हैं झ अभिमन्यु ने कहा . ज़्महाराजए मैं भी वीर.पुत्र हूँ। शत्रु ललकारे और मैं बैठा रहूँए यह कैसे हो सकता है झ

युधिष्ठिर करते ही क्या ! उन्होंने अभिमन्यु को युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी। चक्रव्यूह के द्वार पर गुरु द्रोणाचार्य खड़े थे। अभिमन्यु ने दूर से ही उनके चरणों में बाण छोड़कर प्रणाम किया। द्रोणाचार्य समझ गए कि यह अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु ही है। बाणों की बौछार करता हुआ अभिमन्यु व्यूह के भीतर घुस गया। उसके पीछे भीम और दूसरे पाण्डव वीर थे। भीम ने द्रोणाचार्य के रथ को उठाकर घोड़ों समेत आकाश में फेंक दिया और व्यूह में घुस गए।

व्यूह के अगले द्वार पर जयद्रथ था। अभिमन्यु का उससे घोर युद्ध हुआ। उसे हराकर अभिमन्यु भीतर घुस गयाए परन्तु भीम और दूसरे पाण्डवों को जयद्रथ ने व्यूह के भीतर न जाने दिया। अभिमन्यु अकेला पड़ गयाए लेकिन अकेले ही वह सबसे युद्ध करता रहा। उसके बाणों की वर्षा से कौरवों की सेना के हाथीए घोड़ेए पैदल सैनिक सब गिरने लगे। वह जिधर भी मुड़ जाता उधर मैदान साफ हो जाता।

अभिमन्यु की वीरता देखकर कौरवों में खलबली मच गई। दुर्योधन ने जब देखा कि चक्रव्यूह का अन्तिम द्वार टूटने ही वाला है तो उसने अपने सात महारथियों को ललकार कर कहाए ज़आप देखते क्या हैंह एक साथ मिलकर इसे क्यों नहीं मार डालतेझ यह सुनते ही सातों महारथियों ने उसे घेर लिया और उस पर चारों ओर से बाणों की वर्षा करने लगे।

किन्तु कहाँ वह एक और कहाँ सात महारथी ! उसका सारथी मार डाला गया। धनुष भी काट दिया गया। जब उसके पास कोई हथियार नहीं रहा तो वह रथ के पहिए को ही हाथ में लेकर शत्रुओं पर झपटा लेकिन उसका पहिया भी काट डाला गया। वह निहत्था हो गया और बाणों से उसका शरीर छलनी हो गया।

अभिमन्यु ने शत्रुओं को धिक्कारा और द्रोणाचार्य की ओर मुड़कर कहाए ज़गुरुवर! आपके रहते हुए यह कैसी लड़ाई हो रही हैए जिसमें निहत्थे पर वार होता है। आप क्यों नहीं बोलतेझ

द्रोणाचार्य कुछ कह न सके। उनका सिर नीचा हो गया। इतने में दुःशासन के पुत्र ने पीछे से अभिमन्यु के सिर पर गदा मार दी। वह वीर धरती पर गिर पड़ा और फिर कभी न उठा।

युद्ध में अभिमन्यु को वीरगति प्राप्त हुई। अपने साहस और शौर्य के कारण वह सदा के लिए अमर हो गया। सात महारथियों से घिर जाने पर भी वह विचलित नहीं हुआ और अकेले उनसे युद्ध करता रहा। उसकी वीरता की कहानी आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करती है।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

अन्तिम ॽ आखिरी निहत्था ॽ जिसके हाथ में कोई अस्त्र.शस्त्र न हो

आकाश ॽ आसमान सारथी ॽ रथ हाँकने वाला

वीरगति ॽ युद्ध में वीरतापूर्वक शौर्य ॽ वीरता

लड़ते हुए मारा जाना

शब्दों का खेल

(क) नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो .

बाणों की बौछार करना
खलबली मचाना
सिर नीचा होना
खुशी का ठिकाना न रहना

(ख) शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ो .

युधिष्ठिरए अभिमन्युए चक्रव्यूहए व्यूहए निहत्थाए शौर्य

(ग) नीचे लिखे शब्दों के समानार्थक शब्द बताओ .

कठिनए आकाशए युद्धए शत्रुए अलावाए धरतीए आज्ञाए प्रणए बाणए जीवए नींदए कहानी

(घ) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम.चिह्नों का प्रयोग करो .

अभिमन्यु ने कहा महाराज म ॐ भी वीर पुत्र हूँ।

समाचार अच्छे नहीं हैं बेटा लेकिन तुम क्यों चिन्ता करते हो।

महाराज मैं वीरपुत्र हूँ शत्रु ललकारे और मैं बैठा रहूँ यह कैसे हो सकता हैॽ

पढ़ो और समझो .

वीर का पुत्र ॽ वीरपुत्र राजा और रानी ॽ राजा.रानी

राजा का पुत्र ॽ राजपुत्र रात और दिन ॽ रात.दिन

वीरों की गति > वीरगति राम और लक्ष्मण > राम.लक्ष्मण

देवताओं का लोक > देवलोक अन्दर और बाहर > अन्दर.बाहर

अब तुम करो .

गृह का स्वामी > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ आगे और पीछे > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

राष्ट्र का ध्वज > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ ऊपर और नीचे > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

वन में वास > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ माता और पिता > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

पुष्पों की वर्षा > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ हम और तुम > υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

बोध प्रश्न

1ण उत्तर दो .

(क) पाण्डवों और कौरवों का युद्ध किस नाम से प्रसिद्ध है ६

(ख) युधिष्ठिर क्यों चिन्तित थे ६

(ग) अभिमन्यु ने गुरु द्रोणाचार्य को कैसे प्रणाम किया ६

(घ) चक्रव्यूह के भीतर अभिमन्यु के साथ दूसरे पाण्डव वीर क्यों न जा सके६

(ङ) अभिमन्यु के सिर पर गदा किसने मारी ६

(च) अभिमन्यु के जीवन से तुम्हें क्या प्रेरणा मिलती है ६

2ण किसनेए किससे कहा ६

ज़आप इस तरह सोच में क्यों बैठे हैं महाराज ! युद्ध के क्या समाचार हैं ॼ
ज़तुम नहीं जानते चक्रव्यूह तोड़ना कितना कठिन है ॼ
ज़अन्तिम द्वार तो मैं अपनी गदा से ही तोड़ दूँगा।ॼ
ज़आप लोग देखते क्या हैं ६ एक साथ मिलकर क्यों नहीं मार डालते ॼ
ज़गुरुवर आपके रहते यह कैसी लड़ाई ॼ

तुम्हारी कलम से .

तुम्हारे आस.पास भी किसी बच्चे ने विपत्ति के समय बहादुरी का परिचय दिया होगा। वह घटना कैसे घटी अपने शब्दों में लिखो।

अब करने की बारी.

(क) कहानी का कक्षा में अभिनय करो।

(ख) इसी प्रकार की वीरता की कहानियाँ अपने बड़ों से सुनो।

इसे भी जानो

युधिष्ठिर ने अभिमन्यु से कहा . ज़्लेकिन तुम अभी बालक होए हम तुम्हें लड़ाई में कैसे भेज सकते हैं ध्र

इस वावक्य में युधिष्ठिर एवं अभिमन्यु (नाम) का प्रयोग हुआ है। ज़्किसी वस्तुए व्यक्ति एवं स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैंए जैसे. गीताए रमेशए मोहनए मथुराए प्रयागए मेजए कलमझ आदि।

इसी वाक्य में अभिमन्यु (नाम) की जगह पर ष्तुमष्ठ और ष्तुम्हेंष्ठ का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार युधिष्ठिर की जगह ष्हमष्ठ सर्वनाम शब्द का प्रयोग हुआ है। किसी नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैंए जैसे . मैंए तुमए हमए आपए मेराए तुम्हाराए आपकाए उसकाए उसे आदि।

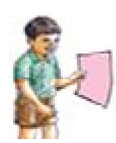

हाँ में हाँ

मुरझाए फूल

बसन्त आया तो राजा कृष्णदेव राय का बगीचा फूलों से भर उठा। राजा बहुत प्रसन्न हुए और मन्त्री से बोलेए ज़्ऐसा प्रबन्ध करो कि यह बगीचा सदा ही ऐसा रहे।झ

यह सुनकर मन्त्री की सिट्टी.पिट्टी गुम हो गई। भला फूल सदा खिले हुए कैसे रह सकते हैं। हाथ जोड़कर बोलेए ज़्महाराज ! फूलों के रंग.रूप रोकने का काम तो सेनापति ही ठीक प्रकार से कर सकते हैं।ॅ

राजा ने सेनापति को बुलाकर मन की बात कही। वह भी घबरा गए और बोलेए ज़्महाराज! मेरे दादाजी एक बात कहा करते थे। फूलों का रंग.रूप तभी तक रह सकता हैए जब तक उन पर परियाँ मंडराती रहें। सेना देखकर तो परियाँ भाग जाएंगी। यह काम मुझसे अच्छा तेनालीराम कर सकता है। परियाँ उससे डरेंगी नहीं।ॅ

बेचारा तेनालीराम फँस गया। मन्त्री और सेनापति खुश। राजा ने तेनालीराम को बुलाकर कहाए ज़्मैं चाहता हूँ मेरा बाग सदा फूलों से इसी तरह भरा रहे। तुम इसका ध्यान रखो। खबरदार कोई भी फूल मुरझाने न पाए।ॅ तेनालीराम हाथ जोड़कर बोलाए ज़्महाराज जो फूल मुरझा गए हैं उनका क्या करूँ ३ ज़्उन्हें तोड़कर फेंक दो।ॅ राजा ने कहा।

तेनालीराम कमर कस कर बगीचे में जुट गया। पहले दिन उसने एक पौधे से मुरझाए फूल तोड़ेए दूसरे दिन दूसरे से। जब तक वह अन्तिम पौधे तक पहुँचा पहले पौधे के कुछ और फूल मुरझा गए। वह फिर आरम्भ से मुरझाए हुए फूल तोड़ने में लग गया।

राजा ने बाग में फूल कम होते देखे। उन्होंने तेनालीराम को बुलाया और पूछताछ की। तेनालीराम बोलाए ज़्महाराज अभी तो मैं आपके आदेश के अनुसार मुरझाए फूल ही तोड़ रहा हूँ। देख.भाल कैसे शुरू करूँ ‍ष्

सुनते ही राजा हँस पड़े।

सवारी का प्रबन्ध

बुन्देलखण्ड की एक लोक कथा है.

एक राजा थे। राज.काज से थक गए थे। एक दिन दरबार में मन्त्री से बोले. ज़्मन्त्री जीए सोचता हूँए हम लोग गंगा.स्नान कर आएँ।ष्

राजा की बात सुनते ही मन्त्री जी चट से बोले. ज़्बहुत शुभ विचार है महाराज! आपके पूर्वजों ने तो कई बार गंगा जी की यात्रा की है। अवश्य चला जाए।ष्

राजा ने पूछा. ज़्तो मन्त्री जीए फिर चलने का कोई शुभ मुहूर्त निकलवाएँ।ष्

मन्त्री बोले. ज़्मुहूर्त की क्या बात महाराज ! सबसे बड़ा मुहूर्त इच्छा ही है। जिस दिन महाराज चलने का विचार करें वही शुभ मुहूर्त है।ष्

राजा बोले. ज़्सवारी का प्रबन्ध भी तो होना चाहिए।ष्

मन्त्री जी ने कहा. ज़्हाँ महाराजए सवारी तो होनी ही चाहिए। गंगा जी बहुत दूर हैंए परन्तु सवारी की आपके यहाँ क्या कमी है ६ एक.से.एक बढ़कर सवारियाँ हैं।ष्

राजा ने पूछा. ज़्कौन.सी सवारी ठीक रहेगी ‍ष्

मन्त्री जी बोले. ज़सवारी वही ठीक रहेगी जिसमें श्रीमान को सुविधा हो।

राजा बोले. ज़मन्त्री जी हाथी कैसा रहेगा ?

मन्त्री जी बोले. ज़महाराजए उत्तम ! हाथी जैसी सवारी ध वाहए क्या कहना ! आनन्द से चले जा रहे हैं। जहाँ ठहरना चाहेंए ठहर सकते हैं। जब चलना हैए चलें। राजाओं की सवारी तो हाथी ही है। ठाट से हौदा कसा हो. महाराज की सवारी चली जा रही हो। आगे पीछे नौकर.चाकर साज.सामान लिए चल रहे हों। दूर से देखने वाले देखें. कोई रईस चला आ रहा है।

राजा बोले . ज़गंगा जी तो बहुत दूर हैं। हाथी से तो महीनों में कहीं पहुँच पाएंगे। चींटी की चाल चलता है।

मन्त्री ने उत्तर दिया . ज़सो तो है ही महाराज। हाथी से ज्यादा सुस्त जानवर दूसरा नहीं।

राजा ने कहा. ज़तो फिर ऊँट ?

मन्त्री जी बोले. ज़ऊँट ठीक हैए महाराज ! उत्तम सवारी है। कोसों की मंजिल एक दिन में पूरी करने के लिए ऊँट से बढ़कर कोई सवारी नहीं।

राजा बोले. ज़परन्तु कई दिनों का खटराग है। ऊँट पर बैठे.बैठे कूबड़ निकल आएगा। कमर तो टूट ही जायेगी। ऊँट बलबलाता भी बहुत है।

मन्त्री जी बोले. ज़छोडिए भी ऊँट को। कमर दुखने की बात तो है ही। आपका पेट भी हिल जाएगा। ऊँट भी कोई सवारी है ध देखने में कितना भधा है। ऊँट और गधे में

अधिक अन्तर नहीं।”

राजा ने कहा. ज़्मेरी समझ में घोड़ा ठीक रहेगा।”

मन्त्री जी ने कहा. ज़्हाँ महाराज ! घोड़ा बिल्कुल ठीक है। मैदान होए चाहे पहाड़ होए घोड़ा सब जगह चला जाएगा। वीरों की सवारी हैए और सब में शानदार। जी चाहे जहाँ रुकिएए जब चलिए। घोड़े की दुलकी चाल का क्या कहना ?”

राजा बोले. ज़्पर एक बात हैए घोड़े पर घण्टों बैठना तो कठिन ही हैए दो.चार घण्टों की कोई बात नहीं। कायदे से बैठना पड़ता है।”

मन्त्री जी बोले. ज़्सो तो है ही महाराज ! काठी और काठ को एक समान समझिये। धूप अलग लगेए पानी से भी बचाव नहीं। मनमौजी जानवर है। जाने कब किस खाई. खन्दक में पटक दे।”

राजा ने पूछा. ज़्मन्त्री जीए पालकी कैसी रहेगी ?”

मन्त्री जी बोले. ज़्पालकी का क्या कहना महाराज ! यही तो राजा की सवारी है।”

राजा बोले. ज़्परन्तु पालकी में बैठकर गंगा जी में स्नान के लिए जाने की बात कुछ जँचती नहीं। लोग हँसेंगे तो नहीं ?”

मन्त्री जी ने कहा. ज़्हँसने की बात तो है ही महाराज ! पालकी पर लदकर चलना तो जीते जी ही मुर्दों की तरह जाने के बराबर है।”

राजा ने कहा. ज़्तब तो कोई सवारी ठीक नहीं बैठती तो फिर मन्त्री जीए गंगा स्नान के लिए जाने की बात रहने ही दें।”

मन्त्री जी बोले. ज़्उत्तम विचार है महाराज ! गंगा भी क्या कुछ विशेष हैं ६ यहीं सब आनन्द है। कहा भी गया है. मन चंगा तो कठौती में गंगा।ू

राजा ने कहा. ज़्हाँए तो फिर यही तय है। कौन इस यात्रा के पचड़े में पड़े।ू

और फिर राजा ने गंगा यात्रा का विचार त्याग दिया।

इसे ही कहते हैं ज़्झूठ.मूठ हाँ में हाँ मिलाना। बच्चों ! तुम इस आदत से बचना।ू

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

मुहूर्त ऽ कार्य प्रारम्भ करने का समय काठ ऽ सूखी लकड़ी

काठी ऽ घोड़े की पीठ पर कसने वाली पचड़ा ऽ झमेलाए झंझट

जीनए जिसके नीचे काठ लगा सुस्त ऽ ढीला

रहता है। बलबलाना ऽ ऊँट का बोलना

दुलकी चाल ऽ घोड़े की एक विशेष चाल

शब्दों का खेल

1ण नीचे लिखे उदाहरण को पढ़ो और समझो .

दो चूहे कहीं घूमने निकले। रास्ते में उन्हें हाथी मिला। एक चूहे ने मूँछें फड़काते हुए उससे लड़ने को कहा। दूसरे चूहे ने कहा कि वह दो से घबरा गया हैए लड़ेगा नहीं।

इस अनुच्छेद का संवाद शैली में परिवर्तन इस प्रकार से होगा .

एक चूहा . अरे ओ हाथी! बोल क्या मुझसे लड़ेगा ६

दूसरा चूहा . रहने देए वह घबरा गया है। हम दो हैं न। वह हमसे नहीं लड़ेगा।

अब तुम भी नीचे दिए गए अनुच्छेद को संवाद शैली में बदलो .

अकबर ने बीरबल से देर से आने का कारण पूछा। बीरबल ने बताया हुजूर कोई खास बात नहीं थी। मेरा बच्चा जिधी है उसे मनाने में देर हुई।

बोधप्रश्न ़

1़ उत्तर दो .

(क) राजा कृष्णदेव राय ने मन्त्री को क्या आदेश दिया ?

(ख) तेनालीराम फूलों की देखरेख की जिम्मेदारी में कैसे फँसा ?

(ग) तेनालीराम ने राजा के आदेश का पालन कैसे किया ?

(घ) बुन्देलखण्ड की लोक.कथा में किस तरह के लोगों के प्रति व्यंग्य किया गया है ?

(ङ) इस लोक.कथा में यातायात के किन.किन साधनों का नाम आया है ?

(च) ‘हाँ में हाँ’ लोक.कथा से क्या सीख मिलती है ? संक्षेप में लिखो।

2़ सोचो और बताओ .

(क) तेनालीराम की जगह तुम होते तो क्या करते ?

(ख) यदि राजा के मन्त्री तुम होते तो क्या सलाह देते ?

तुम्हारी कलम से . किसी स्थान की यात्रा की योजना बनाओ।

किन.किन साधनों से जाओगे ?
कौन.कौन साथ होंगे ?
वहाँ क्या.क्या करोगे ?
खर्च का भी अनुमान करके लिखो।

अब करने की बारी .

इसी प्रकार की अन्य लोक.कथाओं, हास्य कविताओं, चुटकुलों का संग्रह करो तथा मित्रों को सुनाओ और उनसे भी सुनो।
बुन्देलखण्ड की लोक.कथा में यातायात के कुछ साधनों का नाम आया है। यातायात के उन साधनों के नाम लिखो जो इस कथा में नहीं हैं।
इस पाठ में आये मुहावरे ढूँढ़ो और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

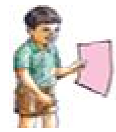

9

सरकस

होकर कौतूहल के बस मेंए

गया एक दिन मैं सरकस में।

भय.विस्मय के काम अनोखेए

देखे बहु व्यायाम अनोखे।

एक बड़ा.सा बन्दर आयाए

उसने झटपट लैंप जलाया।

डट कुर्सी पर पुस्तक खोलीए

आ तब तक मैना यों बोली।

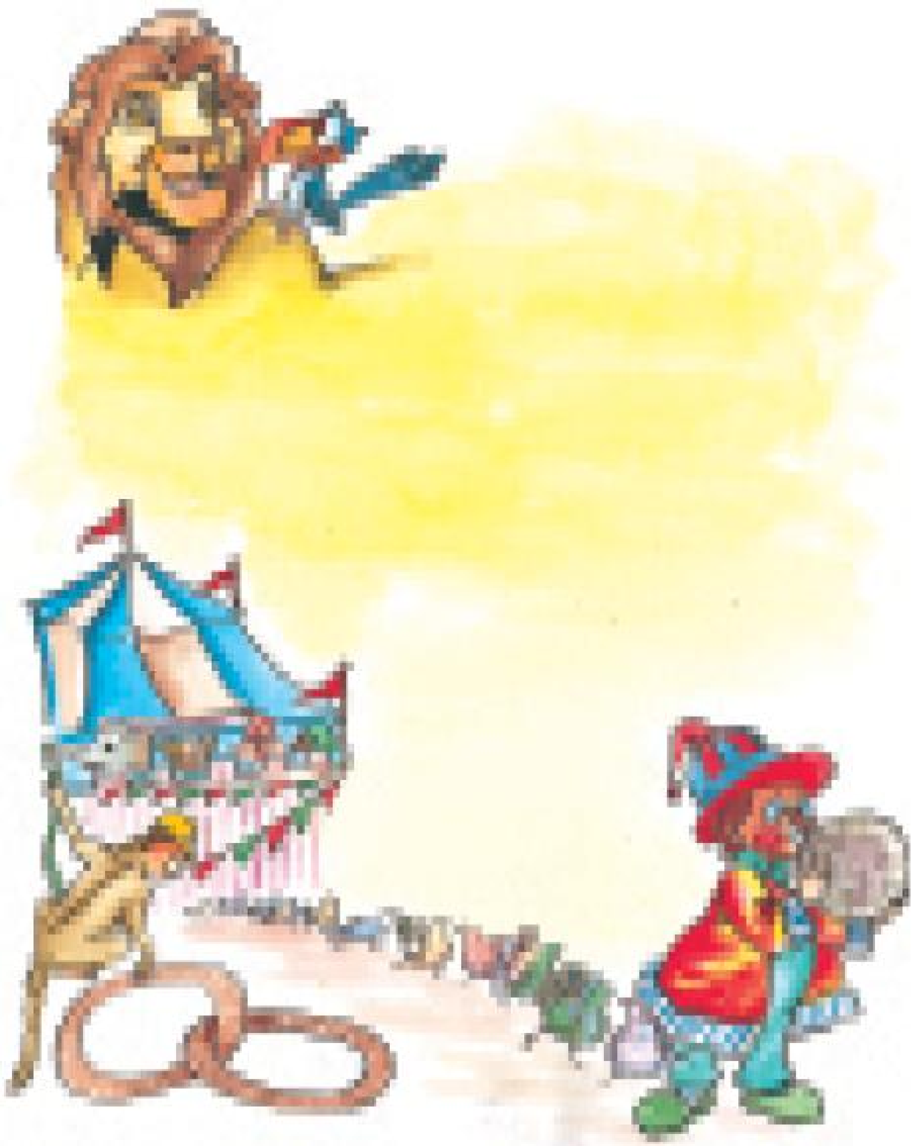

हाजिर है हजूर का घोड़ाए

चौंक उठाया उसने कोड़ा।

आया तब तक एक बछेराए

चढ़ बन्दर ने उसको फेरा।

एक मनुष्य अन्त में आयाए

पकड़े हुए सिंह को लाया।

मनुज सिंह की देख लड़ाईए
की मैंने इस भाँति बड़ाई।
कहीं साहसी जन डरता हैए
नर नाहर को वश करता है।
मेरा एक मित्र तब बोलाए
भाईए तू भी है बस भोला।

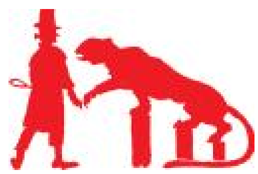

यह सिंही का जना हुआ हैए
किंतु स्यार यह बना हुआ है।
यह पिंजड़े में बन्द रहा हैए
कभी नहीं स्वच्छन्द रहा है।

छोटे से यह पकड़ा आयाए
मार.मारकर गया सिखाया।
अपने को भी भूल गया हैए
आती इस पर मुझे दया है।

. मैथिलीशरण गुप्त

ष्टचिरगाँवष्ठ झाँसी में पैदा हुए मैथिलीशरण गुप्त को ष्टराष्ट्रकविष्ठ की उपाधि से सम्मानित किया गया। ष्टद्वापरष्ठए ष्टसाकेतष्ठए ष्टभारत.भारतीष्ठए ष्टजयद्रथ.वधष्ठए ष्टयशोधराष्ठ आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

कौतूहल ऽ जिज्ञासा भय.विस्मय ऽ डर और आश्चर्य

स्वच्छन्द ऽ स्वतन्त्र सिंही का जना हुआ है ऽ शेरनी ने जन्म दिया है।

मनुज ऽ मनुष्य नाहर ऽ सिंह

भाव बोध ण

1ण उत्तर दो .

(क) कवि सरकस में क्यों गया ६

(ख) कवि ने सरकस में क्या.क्या देखा ६

(ग) सरकस के शेर को देखकर कवि के मन में क्या भाव उत्पन्न हुआ ६

(घ) पिंजड़े में बन्द जानवरों.पक्षियों के मन में क्या.क्या विचार उठते होंगे ६

2ण नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो .

(क) ष्होकर कौतूहल के बस मेंए

गया एक दिन मैं सरकस में।ष्

(ख) ष्कहीं साहसी जन डरता हैए

नर नाहर को वश करता है।ष्

(ग) ष्यह सिंही का जना हुआ हैए

किन्तु स्यार यह बना हुआ है।ष्

3ण इनके समानार्थी शब्द लिखो .

बन्दरए शेरए तोताए स्वच्छन्दए मित्रए लड़ाईए स्यारए जन

4ण विलोम शब्द लिखो . साहसीए स्वतन्त्रए प्रसन्नताए दयालु

5ण कविता की पंक्तियाँ पूरी करो .

यह पिंजड़े में बन्द रहा हैए ण्।

छोटे से यह पकड़ा आयाए ण्।

6ण कविता की दो पंक्तियों का अर्थ दिया जा रहा है। कविता की उन पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखो .

गुलामी की रोटियाँ खा.खाकर यह अपनी वीरता तथा पराक्रम की बात भूल गया है। इसे नहीं पता कि मैं शेर हूँ। इसकी दशा पर मुझे दया आ रही है।

7ण दिए गए उदाहरण को पढ़ो और ऐसे तीन वाक्य तुम भी बनाओ जिनमें ष्साष् का प्रयोग हो।

अभिमन्यु.सा वीर बालक बनो।
लड़का बन्दर.सा चंचल है।

8ण (क) इस कविता में आए तुकान्त शब्दों की गिनती करो।

(ख) ऐसे दस तुकान्त शब्द लिखो जो तुम्हें अच्छे लगते हों।

तुम्हारी कलम से

तुमने भी कभी सरकस देखा होगा। सरकस देखने का अपना अनुभव लिखो।

अब करने की बारी

प्रत्येक खाने में दिए गये अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले तुम कितने शब्द सोच सकते हो ह उनकी सूची बनाओ। यदि प्रत्येक खाने में दस शब्द लिखते हो तो ष्टअच्छाष्ठए यदि बीस शब्द तो ष्टबहुत अच्छाष्ठए यदि बीस से ज्यादा तो ष्टउत्कृष्टष्ठ। उदाहरण देखो.

आ	सु	वि
आमए आलू आजए आकार आधारए आघात आलोकए आखेट आरामए आचार्यए आतंकए आहटए आदेशए आशय आवरणए आचरण आतिथ्यए आनन्द आलेखए आरोहए आचमन ण्		

कितना सीखा.2

1ण निम्नलिखित प्रश्नों का मौखिक उत्तर दो .

(क) वनदेवी ने अन्त में राजा से क्या अनुरोध किया और क्यों ह

(ख) अभिमन्यु ने चक्रव्यूह तोड़ने की कला सीखने के विषय में युधिष्ठिर को क्या बताया ध

(ग) किस आधार पर कह सकते हो कि अभिमन्यु सच्चा वीरपुत्र और साहसी था ध

(घ) तेनालीराम एक बुद्धिमान व्यक्ति थाए यह किस घटना से पता चलता है ध

(ङ) ष्हाँ में हाँष् लोक.कथा से क्या सन्देश मिलता है ध

(च) सरकस के शेर को देखकर कवि और उसके दोस्त के बीच क्या बातचीतहुई ध

2ण अधूरी पंक्तियाँ पूरी करो.

एक बड़ा.सा बन्दर आयाए

णणण

डट कुर्सी पर पुस्तक खोलीए

णणण

3ण नीचे दी गयी पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो.

(क) कहीं साहसी जन डरता हैए नर नाहर को वश करता है।

(ख) यह सिंही का जना हुआ हैए किन्तु स्यार यह बना हुआ है।

4ण नीचे दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो.

मेजबानए पर्यावरणए वीरपुत्रए प्रतीक्षा

5ण कोष्ठक में दिए गए सर्वनामों में से चुनकर वाक्य पूरा करो.

(वहए उसकाए तुमए तुम्हारे)

(क) णणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणण घर मेरे घर के पास है।

(ख) णणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणण प्रतिदिन व्यायाम करता है।

(ग) णणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणणण पिताजी का क्या नाम है ध

(घ) मुझे विश्वास है कि ण् जरूर आओगे।

6ण (क) दिए गए शब्दों का विशेषणध्क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग करते हुए एक. एक वाक्य बनाओ.

वीरए धीरे.धीरेए सुन्दरए फूट.फूटकर

(ख) एक.एक ऐसे वाक्य की रचना करो जिसमें. अल्प विरामए पूर्ण विराम तथा प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग हुआ हो।

7ण **क्या होता यदि.**

(क) पिता की अनुपस्थिति में अभिमन्यु युद्धभूमि में न जाता ६

(ख) राजा अपने महल के चारों ओर पेड़.पौधे न लगवाता ६

8ण अपने क्षेत्र में प्रचलित कोई लोक.कथा सुनाओ।

9ण शब्दों में लगे उपसर्ग को उनके सामने लिखो .

शब्द उपसर्ग

प्रहार

विहार

आहार

अनुपस्थित

निरुत्साहित

10ण पेड़.पौधे हमारे लिए उपयोगी हैंए विषय पर एक अनुच्छेद में अपने विचार लिखो।

अपने.आप 2

सत्यवादी हरिश्चन्द्र

प्राचीन काल में हरिश्चन्द्र नाम के एक राजा हुए। वह अपनी प्रजा में सत्यवादिताए दानए परोपकार आदि गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी पत्नी का नाम तारामती और

पुत्र का नाम रोहित था।

देवराज इन्द्र की प्रेरणा से मुनि विश्वामित्र ने एक बार उनकी सत्यवादिता और दानशीलता की परीक्षा लेनी चाही। वह हरिश्चन्द्र के स्वप्न में प्रकट हुए और दान में उनका सम्पूर्ण राज.पाट माँग लिया। हरिश्चन्द्र ने उन्हें स्वप्न में ही सब कुछ दान कर दिया।

अगले दिन प्रातः मुनि विश्वामित्र राजा हरिश्चन्द्र के दरबार में उपस्थित हुए और अपनी दक्षिणा स्वरूप एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ माँगीं। हरिश्चन्द्र स्वप्न में अपना सर्वस्व दान कर चुके थे। अब दक्षिणा चुकाने के लिए कोई साधन शेष न था। राजा हरिश्चन्द्र के द्वार से मुनि बिना दक्षिणा लिए चले जाएं यह भी सम्भव न था। कोई उपाय न देखकर हरिश्चन्द्र ने दक्षिणा चुकाने के लिए स्वयं को बेचने का निर्णय लिया।

एक ब्राह्मण ने तारामती और रोहित को पाँच सौ स्वर्ण मुद्राओं में बोली लगाकर खरीद लिया परन्तु दक्षिणा के लिए अब भी पाँच सौ स्वर्ण मुद्राओं की कमी थी। अन्त में राजा हरिश्चन्द्र को श्मशान घाट में कर वसूल कर दाह संस्कार सम्पन्न कराने वाले कालू नाम के व्यक्ति ने पाँच सौ स्वर्ण मुद्राओं में खरीद लिया।

तारामती ब्राह्मण के घर चूल्हा.चौका और अन्य घरेलू काम.काज करती थी। रोहित फुलवारी से फूल.पत्तियाँ और लकड़ी आदि लाता था। हरिश्चन्द्र श्मशान पर आने वाले शव के परिवार वालों से कर वसूला करते थे।

एक दिन प्रातः जब रोहित फुलवारी से फूल लेने गया तभी एक विषैले सर्प ने उसे डस लिया। असहाय तारामती पुत्र को गोद में उठाकर अंत्येष्टि के लिए श्मशान ले गई। हरिश्चन्द्र देखते ही उसे पहचान गए किन्तु ऐसे संकट के समय में भी उन्होंने सत्य और धैर्य को नहीं छोड़ा। उन्होंने तारामती से शवदाह हेतु कर माँगा।

तारामती के पास कर देने के लिए कुछ भी नहीं था। विवश होकर वह अपनी

धोती का आधा भाग फाड़कर जैसे ही कर के रूप में देने के लिए तत्पर हुईंए वैसे ही मुनि विश्वामित्र और देवतागण प्रसन्न होकर प्रकट हो गए। उन्होंने हरिश्चन्द्र और तारामती के धैर्यए दानशीलता और न्याय की प्रशंसा करते हुए उन पर पुष्प बरसाए।

मुनि विश्वामित्र के आशीर्वाद से रोहित पुनः जीवित हो गया। हरिश्चन्द्र का राज.पाट वापस मिल गया। वे सत्यवादी और दानी राजा के रूप में सदा के लिए अमर हो गए।

सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र्र के सम्बन्ध में भारतेन्दु जी ने लिखा है .

ज़्चन्द टरैए सूरज टरैए टरै जगत ब्योहार।

पै दृढ़ हरिचन्द कोए टरै न सत्य विचार।॥

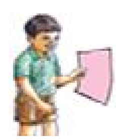

10

मलेथा की गूल

मध्य गढ़वाल की घाटियों में एक गाँव है . मलेथा। इसकी प्राकृतिक सुषमा देखते ही बनती है। मलेथा के दक्षिण.पश्चिम की ओर पहाड़ की एक शृंखला अलकनंदा नदी तक चली गई है। दूसरी ओर एक पहाड़ी नदी चंद्रभागा तीव्र वेग से बहती हुई अलकनंदा में मिल जाती है।

विचित्र बात यह थी कि दोनों ओर नदियाँ रहने पर भी मलेथा गाँव में सिंचाई का कोई साधन न था क्योंकि इन नदियों और गाँव के बीच पहाड़ खड़े थे। पानी के अभाव में सारे खेत बंजर पड़े रहते थे। गाँव के किसान हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते पर कोई उपाय न कर पाते थे। पहाड़ के उस पार से गाँव में पानी लाने का कोई साधन न था।

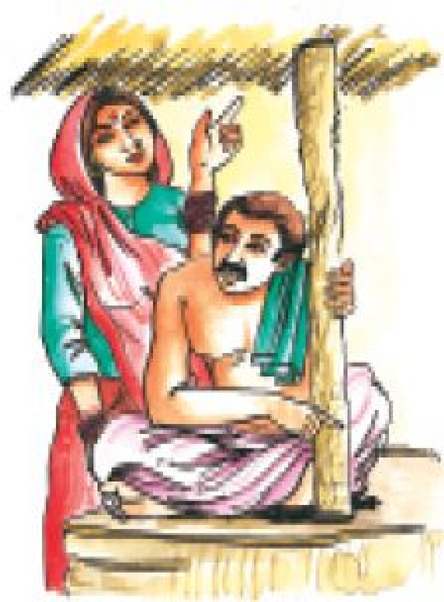

मलेथा गाँव में एक उत्साही युवक था माधो सिंह। उसके मन में सदैव एक सपना उभरता रहता था कि यदि नदी का पानी किसी प्रकार हमारे खेतों तक आ जाता तो हमारे खेत भी हरी.भरी फसलों से लहलहा उठते। यह कार्य अत्यन्त ही दुष्कर था किन्तु उसे पूरा करने के लिए माधो सिंह के मन में अनेक प्रकार के विचार उठते रहते थे।

एक दिन माधो सिंह के मन में एक विचार का🕉ध उठा। उसने अपनी पत्नी से कहाए ज़्यदि हम जी.जान से कोशिश करें तो हमारे गाँव में पानी आ सकता है॥

पत्नी ने बड़ी उत्सुकता से पूछाए ज़्कैसे ॼ माधो सिंह ने कहाए ज़्नदी के किनारे जो पहाड़ खड़ा हैए वही इस ओर पानी लाने में बाधक है। इसकी तलहटी में भीतर ही भीतर यदि एक सुरंग बना ली जाये तो पहाड़ के उस ओर से नदी का पानी इस ओर आ सकता है॥

पत्नी बोल उठीए ज़्इतना विशाल पहाड़ काटकर सुरंग बनाना क्या सम्भव है ॼ

माधो सिंह ने दृढ़ विश्वास के साथ कहाए ज़्यह तो कार्य प्रारम्भ करने पर ही पता चलेगा। सोचो तोए इस कार्य से हमारे गाँव का कितना कल्याण होगा ञ्च

पत्नी ने कहाए ज़्मैं इस महान कार्य में आपके साथ हूँ।ञ्

माधो सिंह ने प्रतिज्ञा की . ष्टजब तक मेरे शरीर में रक्त की एक भी बूँद रहेगीए मैं अपने गाँव मलेथा तक गूल निकालकर पानी लाने का प्रयास करूँगा। मैं तब तक चैन की नींद नहीं सोऊँगाए जब तक मलेथा के एक.एक खेत तक पानी नहीं आ जाता।ष्ट

अपने स्वप्न को साकार करने के लिए माधो सिंह गैंती.फावड़ा लेकर इस भगीरथ प्रयास में जुट गया। कार्य अत्यन्त दुष्कर थाए लेकिन उसको विश्वास था कि उसका सपना अवश्य पूरा होगा। जब वह गाँव के सूखे खेतों की ओर देखता तो उसका निश्चय और भी दृढ़ हो जाता।

माधो सिंह चट्टान पर गैंती जमाता और उस पर हथौड़े की चोट से चट्टान के टुकड़े जमीन पर आ गिरते। हफ्ते.डेढ़ हफ्ते में ही उसने काफी गहरी सुरंग खोद दी। इससे उसका उत्साह और भी बढ़ गया। माधो सिंह के साहस और धैर्य को देखकर गाँव के अन्य व्यक्ति भी इस कार्य में आ जुटे।

उसने दिन.रात एक करके कठोर पहाड़ को छेदकर गूल का निर्माण पूरा कर दिखाया। मलेथा की प्यासी धरती पर पानी बहने लगा।

आज भी मलेथा के शाक.स़ब्जियों से भरे खेत वीर माधो सिंह के असीम धैर्य और कठोर श्रम की गवाही दे रहे ह ॐ ।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

शृंखला > कतार प्रयास > कोशिश
तीव्र > तेज दुष्कर > बहुत कठिन
साकार > पूर्ण होना गूल > पानी की नाली

शब्दों का खेल

1ण पाठ में एक वाक्य आया है ष्मैं तब तक चैन की नींद नहीं सोऊँगा जब तक मलेथा के एक.एक खेत तक पानी नहीं आ जाता।ष् ऐसे तीन वाक्यों की रचना करो जिनमें ष्तब तकष् और ष्जब तकष् शब्दों का प्रयोग हुआ हो।

2ण नीचे लिखे शब्दों को उदाहरण के अनुसार बदलो.

उत्साह . उत्साही पराक्रम .

साहस . परिश्रम .

बलिदान . उद्यम .

3ण नीचे लिखे शब्दों में से संज्ञा शब्द छाँटो.

तीव्रए साकारए फावड़ाए माधो सिंहए प्रयासए मलेथाए खेतए गढ़वालए गैंतीए सुन्दर

4ण ष्सुषमाष् शब्द का अर्थ सौन्दर्य एवं शोभा भी होता है ऐसे शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। नीचे लिखे शब्दों के दो.दो पर्यायवाची शब्द लिखो.

पवनए जलए पृथ्वीए कमलए घर

5ण अपने वाक्यों में प्रयोग करो.

पहाड़ए साहसए विचलितए तीव्रए बंजरए सुरंगए उत्साहए श्रमए निश्चयए पानी

6ण उचित स्थान पर विराम.चिह्नों का प्रयोग करो.

माधव प्रातःकाल उठकर सैर करने जाता है जलपान के बाद विद्यालय जाता है वहाँ खूब मेहनत से पढ़ता हैए सभी उसकी प्रशंसा करते हैं

बोध प्रश्न

1ण उत्तर दो .

(क) मलेथा के खेत बंजर क्यों पड़े रहते थे ?

(ख) नदी का पानी गाँव में क्यों नहीं आता था ?

(ग) माधो सिंह के मन में क्या सपना उभरता था ?

(घ) माधो सिंह ने अपनी प्रतिज्ञा कैसे पूरी की ?

(ङ) इस पाठ से हमें क्या सीख मिलती है ?

(च) इस पाठ का कौन सा भाग तुम्हें सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

तुम्हारी कलम से

तुम्हारे पास.पड़ोस में भी ऐसी घटनाएँ घटी होंगी जब किसी ने कठिन समझे जाने वाले कार्य को कर दिखाया होगा। वह घटना कैसे घटीए अपने शब्दों में लिखो।

अब करने की बारी

(क) प्रस्तुत कथा को अपने शब्दों में सुनाओ।

(ख) प्रथम दो अनुच्छेद सुलेख में लिखो।

(ग) तुम्हारे आस.पास कहाँ.कहाँ जल बरबाद हो रहा है ? सोचो और रोकने के उपाय भी बताओ।

(घ) पढ़ो और करो . यहाँ एक सूचना है जो नवीन के गाँव में एक दिन सूचना.पट्ट पर लगाई गई .

कृपया ध्यान दें। प्रातः 6 बजे से सायं 5 बजे तक दिनांक 15ण्01ण्2016 को प्राथमिक विद्यालय में पाँच वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो की मुफ्त खुराक पिलायी जायेगी। अतः सभी ग्रामवासियों से अनुरोध है कि इस अवसर का लाभ अवश्य उठाएँ।

. ग्राम प्रधानए रूपपुर टंडोला

तुम भी ऐसी सूचना बना सकते हो। अपने विद्यालय के किसी कार्यक्रम के विषय में एक सूचना बनाओ और उसे सूचना.पट्ट पर लगाओ।

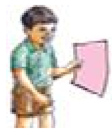

11

ज़्टोकरी में क्या है ड्ढ

गर्मी की छुट्टियों का अन्तिम दिन है। अदिति अपनी नानी के पास से घर लौट रही है। वह अपने गाँव जाने के लिए तैयार हो रही है।

नानी . अदिति ! मैंने यह टोकरी भी बाँधकर रख दी है। इसे भी अपने साथ ले जाना।

अदिति . टोकरी में क्या हैए नानी जी ध

नानी . चलोए तुम स्वयं अनुमान लगाकर बताओ।

अदिति . अच्छाए मुझे सोचने दो ! या तो इसमें मिठाई हैए या फल !

नानी . मिठाई नहींए फल है।

अदिति . तब तो इसमें अवश्य ही सेब होंगे।

नानी . नहींए सेब नहीं हैंए फिर से सोचो।

अदिति . ठीक है नानी। अच्छा यह तो बताओ कि यह फल छोटे पौधे पर लगता है अथवा पेड़ पर ध्

नानी . पेड़ पर।

अदिति . तब तो यह नारंगी है।

नानी . नहीं बिटियाए नारंगी भी नहीं है।

अदिति . अच्छाए यह पीला है या लाल ध्

नानी . पीला है।

अदिति . तब यह आम होगा।

नानी . नाए नाए आम भी नहीं है।

अदिति . अच्छाए मुझे फिर से सोचने दो। इसकी आकृति कैसी है ध्

नानी . गोल है।

अदिति . तब अमरूद होगा।

नानी . नहीं। अमरूद नहीं है।

अदिति . अच्छा यह स्वाद में कैसा हैए मीठाए खट्टा या कसैला ६

नानी . इसका स्वाद खट्टा है।

अदिति . तो यह जरूर माल्टा होगा।

नानी . नहींए बिटिया। तुम करीब.करीब तो पहुँच गयी होए फिर भी थोड़ा प्रयास करो।

अदिति . ठीक हैए नानीए अच्छा बताओ। यह किस काम मंे आता है ६

नानी . यह अचार और शरबत बनाने के काम आता है।

अदिति . नानी ! अब मैं जान गई कि यह ण् है।

नानी . हाँए शाबाश ! ठीक बताया बिटिया।

अभ्यास प्रश्न

1ण उत्तर दो .

(क) अदिति कहाँ रहती है ६

(ख) क्या अदिति की नानी उसके साथ रहती हैं ६

(ग) क्या अदिति फल को खोज पाई ६

(घ) वह फल कौन.सा था ६

2ण नीचे लिखी पहेली को बूझो और पूरा करो . पहेली का उत्तर ज़्मूलीॄ है। अब प्रश्नों का उत्तर देने में प्रतीक्षा की सहायता करो .

दीक्षा . मैंने बाजार से कुछ खरीदा। यह मेरे थैले में है।

प्रतीक्षा . यह फल होगा या सब्ज़ी ६

दीक्षा .

णण

णणणणणणणणणण

प्रतीक्षा . यह जमीन के ऊपर उगता है या अन्दर ६

दीक्षा .

णण

णणणणणणणणणण

प्रतीक्षा . यह सफेद है या रंगीन ६

दीक्षा .

णण

णणणणणणणणणण

प्रतीक्षा . तब यह मूली है।

एक पहेली और

यहाँ तुम्हें प्रश्न बनाने हैं। उनके उत्तर दिए गए हैं। कोष्ठक में दिए गए संकेतों का उपयोग कर सुमन को प्रश्न बनाने में मदद करो .

विमल . मेरे पास एक जानवर की तस्वीर है। क्या तुम बता सकती हो कि यह तस्वीर किसकी है ६

सुमन . क्या यह जंगल में रहता है ६

विमल . नहींए यह घर में रहता है।

सुमन .
णणण
णणणणणणणणणण (माँस)

विमल . नहींए यह घास खाता है।

सुमन .
णणण
णणणणणणणणणण (सींग)

विमल . नहींए इसके सींग नहीं होते हैं।

सुमन .
णणण
णणणणणणणणणण (तेज दौड़ता)

विमल . हाँए यह तेज रफ्तार से दौड़ता है।

सुमन .
णण
णणणणणणणणणण (ताँगा खींचता)

विमल . हाँए यह ताँगा खींचता है।

सुमन . तब यह एक घोड़े की तस्वीर है।

अब करने की बारी .

1ण इस प्रकार की पहेलियाँ तुम भी बनाकर अपने मित्रों से पूछो और आनन्द लो।

2ण (क) इसके ऊपर ताल बनाओए इसके ऊपर नहरेंए

इसके ऊपर नदियाँ बहतींए जिनमें उठतीं लहरें।

कोई इसमें बाग लगाता कोई करता खेतीए

यह सबको देती है सब कुछए पर किससे क्या लेती ६

बताओ.कौन ह

υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

(ख) बादल लेकर उड़ती हूँ

नहीं किसी को दिखती हूँ

बताओ.क्या ह

υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

(ग) एक पहेली तुम भी ढूँढ़कर लिखो .

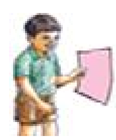

बाल गंगाधर तिलक

एक बार अध्यापक ने कक्षा में छात्रों को गणित के कुछ प्रश्न हल करने के लिए दिए। कक्षा के सभी छात्र तल्लीन होकर अपना कार्य कर रहे थे। एक छात्र चुपचाप बैठा था। शिक्षक ने उससे पूछाए ज़्तुम गणित के प्रश्न क्यों नहीं कर रहे होञ्च छात्र ने कहाए ज़्मैंने प्रश्नों को हल कर लिया है।ञ्च आश्चर्यचकित शिक्षक ने पूछाए ज़्कहाँञ्च छात्र. ष्टमस्तिष्क में।ष्ठ शिक्षक . ष्टअच्छा तो उत्तर बताओ।ष्ठ बालक ने खड़े होकर शिक्षक द्वारा दिए गए सारे प्रश्नों को मौखिक रूप से ही हल कर दिया। अद्भुत प्रतिभा का धनी यह बालक गंगाधर तिलक था।

तिलक का जन्म 23 जुलाई सन् 1856 को महाराष्ट्र के कोंकण जिले के रत्नागिरि स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर राव और माता का नाम पार्वती बाई था। इनका बचपन का नाम ष्केशवष्ठ था। छोटा होने के कारण घर में लोग इन्हें ष्बालष्ठ कहकर पुकारते थे। बाद में यही नाम प्रचलित हो गया। इनके पिता की शिक्षा में गहरी रुचि थी। उन्होंने अपने पुत्र की शिक्षा.दीक्षा पर पूरा ध्यान दिया।

तिलक कुशाग्र बुद्धि के थे। विद्यालय जाने से पूर्व ही इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ याद कर लिए थे। इनकी प्रतिभा से शिक्षक बहुत प्रभावित थे। गणितए इतिहास और संस्कृत इनके प्रिय विषय थे। गणित के कठिन से कठिन प्रश्न वे मौखिक रूप से हल कर लेते थे। खेलों में इनकी विशेष रुचि नहीं थीए फिर भी नियमित रूप से व्यायाम करते थे।

तिलक की किशोरावस्था के पूर्व ही इनके माता.पिता का देहान्त हो गया। इनका विवाह सत्यभामा बाई से हुआ। विवाह में इन्होंने दहेज में कुछ नहीं लिया। सन् 1877 ई0 में बी0ए0 परीक्षा उत्तीर्ण कर इन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त कर ली। इसके बाद वकालत करने लगे।

तिलक शिक्षा को स्वतन्त्रता का आधार मानते थे। इसके लिए इन्होंने सन् 1880 में ष्न्यू इंगलिश स्कूलष्ठ और सन् 1885 में ष्दक्षिणी शिक्षा समाजष्ठ (डेकन एजूकेशन सोसायटी) की स्थापना की। इन्होंने यह भी अनुभव किया कि देशभक्ति और राष्ट्रीय

चेतना जगाने के लिए शिक्षा के प्रसार के साथ.साथ पत्र.पत्रिकाओं का प्रयोग भी आवश्यक है। अतः इन्होंने ष्टकेसरीष्ठ तथा ष्टमराठाष्ठ नाम के समाचार पत्र भी निकाले। इन समाचार पत्रों के माध्यम से ये ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष करने का सन्देश देते थे। पत्रों के माध्यम से इन्होंने स्वतन्त्रता के प्रति लोगों में नयी चेतना जगाई। इनके लेख सबका ध्यान आकर्षित करते थे। इनके कार्यों और विचारों के कारण सब लोग इनका आदर करने लगे और इनके नाम के साथ ष्टलोकमान्यष्ठ शब्द प्रचलित हो गया।

तिलक ने विधवा.विवाह एवं महिला.शिक्षा पर जोर दिया। बाल.विवाह जैसी कुरीति का विरोध भी इन्होंने किया। तिलक ने मजदूरों की दशा सुधारने के लिए आन्दोलन चलाया। इन्होंने स्वदेशी की भावना का भी प्रचार किया।

तिलक के स्वतन्त्र एवं उग्र विचारों से रुष्ट होकर अंग्रेज सरकार इन्हें बार.बार जेल में डालती रही। सन् 1907 के सूरत कांग्रेस अधिवेशन में इन्होंने सिंह गर्जना की. ष्ट**स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे।**ष्ठ ब्रिटिश सरकार ने इन पर सन् 1908 में राजद्रोह का मुकदमा चलाया और छः वर्ष की सजा देकर मांडले (म्याँमार) जेल में डाल दिया। यह समाचार पूरे भारत में आग की तरह फैल गया। इसके विरोध में मुम्बई के बाजार तथा मिलें बन्द हो गईं। जेल में इन्होंने तीन पुस्तकों की रचना की। पहली पुस्तक थी ष्टगीता रहस्यष्ठ जो बहुत प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक से इनकी विद्वता और अध्ययनशीलता का परिचय मिलता है। अन्य दो पुस्तकें थीं . ष्टओरियनष्ठ और ष्टआर्कटिक होम इन वेदाजष्ठ। छः वर्ष की सजा पूरी कर वे 1914 में मांडले जेल से बाहर आए। बाहर आकर वे फिर स्वतन्त्रता प्राप्ति के लक्ष्य में जी जान से जुट गए। अपनी लगन तथा निष्ठा के बल पर इन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की सुदृढ़ आधारशिला रखी।

स्वतन्त्रता.संग्राम का यह चमकता नक्षत्र 1 अगस्त 1920 को सदा के लिए अस्त हो गया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचारए देशभक्ति और स्वातंत्र्यण्प्रेम हमारे लिए सदा ही प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

तल्लीन = पूरी तरह लगा हुआ मस्तिष्क = दिमाग
प्रतिभा = योग्यता कुशाग्र = तीव्र
रुष्ट = नाराज जन्मसिद्ध = जन्म से प्राप्त
कुरीति = बुरी प्रथा विद्वता = ज्ञान, अध्ययनशीलता
निष्ठा = विश्वास, श्रद्धा

शब्दों का खेल -

1. वाक्य पूरा करो -

प्रत्येक वाक्य की खाली जगह में उसके दाईं ओर लिखे शब्द का सही रूप लिखो। उदाहरण के लिए पहला वाक्य देखो -

तिलक नियमित रूप से व्यायाम करते थे। (नियम)

तिलक शिक्षा को .... का आधार मानते थे। (स्वतन्त्र)

उनके लेख सबका ध्यान .... करते थे। (आकर्षण)

2. नीचे दिए गए शब्दों को उदाहरण के अनुसार स्त्रीलिंग में बदलो - जैसे:

लेखक - लेखिका शिक्षक -

बालक - नायक -

3. शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ो.

आश्चर्य, शिक्षा, संस्कृत, विशेष, कुशाग्र, किशोरावस्था, राष्ट्रीय, संघर्ष, सन्देश, आकर्षित, स्रोत, स्वतन्त्र, रुष्ट, उत्तीर्ण, रुचि, विद्वत्ता, सुदृढ़, स्वदेशी।

4. नीचे दिए गए शब्दों का अर्थ बताते हुए अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो -

स्वदेशी - आदर -

कुरीति - कुशाग्र -

5. समान अर्थ वाले शब्द बताओ.

रुष्ट . सम्मान .

कठिन . निर्धन .

6ण ष्स्वतन्त्रष् शब्द में ष्ताष् लगाने पर ष्स्वतन्त्रताष् बनता है। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में ष्ताष् जोड़कर नए शब्द बनाओ.

निर्धन ण सज्जन .

मानव . उदार .

बोध प्रश्नण

1ण पाठ के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो .

(क) बालक गंगाधर तिलक ने प्रश्नों को कैसे हल किया ६

(ख) तिलक के नाम के साथ ष्लोकमान्यष् कैसे जुड़ा ६

(ग) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने क्या नारा दिया ६

(घ) पाठ में लोकमान्य तिलक की किन.किन विशेषताओं का वर्णन किया गया है ६

2ण नीचे लिखे प्रत्येक शीर्षक पर दो.तीन वाक्य लिखो.

तिलक का बचपन
तिलक की शिक्षा
स्वतन्त्रता के लिए तिलक का योगदान

अब करने की बारी .

लोकमान्य तिलक के जीवन से जुड़े रोचक प्रसंगों का संकलन करो।

इसे भी जानो .

निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों के बहुवचन रूप पढ़ो और समझो .

सर्वनाम शब्द बहुवचन रूप

वह वे

यह ये

उसने उन्होंने

उसका उनका

उसके उनके

इसने इन्होंने

इसका इनका

मैं हम

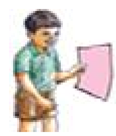

13

भक्ति.नीति माधुरी

कबीर

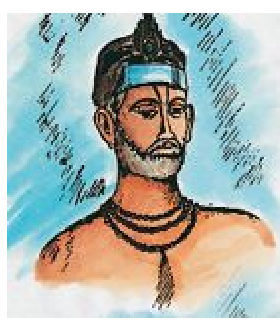

सांच बराबर तप नहींए झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै सांच हैए ताके हिरदै आप।।
वृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैए नदी न संचै नीर।

परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर।।

रहीम

बिगरी बात बनै नहींए लाख करै किन कोय।
रहिमन बिगरे दूध कोए मथे न माखन होय।
जो रहीम उत्तम प्रकृतिए का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहिंए लिपटे रहत भुजंग।।

***कबीर*रू ये जाति.पाँतिए ऊँच.नीचए धार्मिक.भेदभाव आदि का जोरदार खंडन करने वाले सन्त कवि थे। इनका दृष्टिकोण मानवतावादी था। इनकी रचनाएँ तीन रूपों . ष्साखीष् ष्सबदष् और ष्रमैनीष् में हैं।**

***रहीम*रू ये सम्राट अकबर के ष्नवरत्नोंष् में से एक थे। इनके नीतिपरक दोहे जन.जन में प्रसिद्ध हैं। रहीम दोहावलीए रहीम सतसई इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।**

सूरदास

मैयाए कबहिं बढ़ैगी चोटी ६

किती बार मोहिं दूध पियत भईए यह अजहूँ है छोटी।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यौंए ह्वै है लाँबी.मोटी।

काढ़त.गुहत न्हवावत जैहैए नागिनि सी भुइँ लोटी।

काचौ दूध पियावति पचि.पचिए देति न माखन.रोटी।

सूरज चिरजीवौ दोउ भैयाए हरि.हलधर की जोटी।।

मीरा

बसौ मोरे नैनन में नन्दलाल।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डलए अरुन तिलक दिये भाल।

मोहनि मूरति साँवरी सूरतिए नैना बने बिसाल।

अधर.सुधा.रस मुरली राजतए उर वैजन्ती माल।।

छुद्र घण्टिका कटि.तट सोभितए नूपुर सबद रसाल।

मीरा प्रभु संतन सुखदाईए भगत बछल गोपाल।।

सूरदासरू *आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क के किनारे ष्टरुनकताष्ठ नामक गाँव में पैदा हुए थे। इन्होंने कृष्ण की लीलाओं का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। ये कृष्ण भक्त कवियों में सर्वोपरि हैं। सूरसागर इनका प्रसिद्ध महाकाव्य है।*

मीरा**रू इनका जन्म राजस्थान में मेवाड़ के पास ष्टचोकड़ीष्ठ गाँव में हुआ था। ये बचपन से ही कृष्ण भक्त थीं। इनकी रचनाओं में कृष्ण के प्रति प्रेमभाव का वर्णन है।**

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

हिरदै त्र हृदय भखै त्र खाता है

संचै त्र एकत्र करनाए परमारथ त्र दूसरों की भलाई

कुसंग त्र बुरी संगत मकराकृत त्र मछली का आकार

भुजंग त्र सर्प विष त्र जहर

बल त्र बलदाऊ बेनी त्र चोटी

काढ़त त्र बाल झाड़ना गुहत त्र गुहना या चोटी करना

भूइँ त्र जमीन काचो त्र कच्चा

पचि.पचि त्र बार.बार चिरजीवौ त्र दीर्घायु

जोटी त्र जोड़ी भगत बछल त्र भक्त वात्सल्यए भक्त को स्नेह देने वाला

अरुन त्र लाल कटि.तट त्र कमर के नीचे का भाग

भाल त्र मस्तक मोहनि त्र मोह लेने वालीए आकर्षक

अधर त्र होंठ सुधा त्र अमृत

राजत त्र शोभित छुद्र घण्टिका त्र छोटी.छोटी घण्टियाँ या घुँघरू

उर त्र हृदय नूपुर त्र घुँघरू

भाव बोध

1ण उत्तर दो .

सज्जन व्यक्तियों की तुलना वृक्षों और नदियों से क्यों की गई है ६
बुरी संगत का प्रभाव किस प्रकार के लोगों पर नहीं पड़ता है ६
श्रीकृष्ण की चोटी नागिन की तरह क्यों हो जाएगी ६
मीरा ने कृष्ण के किस रूप का वर्णन किया है ६
मीरा ने कृष्ण के किन गुणों का बखान किया है ६

2ण नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो।

ष्परमारथ के कारने साधुन धरा शरीरष्ठ।
ष्सांच बराबर तप नहींए झूठ बराबर पापष्ठ।
ष्रहिमन बिगरे दूध कोए मथे न माखन होयष्ठ।
ष्काचो दूध पियावत पचि.पचिए देत न माखन रोटीष्ठ।
ष्मोर.मुकुट मकराकृत कुण्डल अरून तिलक दिए भालष्ठ।

3ण कॉलम ष्कष्ठ में लिखे गए अशुद्ध शब्दों का मिलान कालम ष्खष्ठ में लिखे गए शुद्ध शब्दों से करोरू.

ष्कष्ठ ष्खष्ठ

सोभित परमार्थ

बिसाल अरुण

परमारथ विशाल

अरुन मूर्ति

संचै वृक्ष

भखै संचय

वृच्छ भक्षण

मूरति शोभित

तुम्हारी कलम से

कबीर और रहीम के दोहों से तुमने क्या सीखा ? अपनी कॉपी पर लिखो।

अब करने की बारी .

मीरा और सूरदास के पद में किसका वर्णन किया गया है।
इस पाठ के दोहे एवं पदों को प्रतिदिन पढ़कर दुहराओ। तुम देखोगे कि ये दोहे एवं पद तुम्हें स्वतः याद हो जाएँगे।

कितना सीखा.3

1ण **निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो**.

कण माधो सिंह ने अपनी पत्नी से खेतों तक पानी लाने के लिए क्या उपाय बताया?

खण माधो सिंह के किस कथन से सिद्ध होता है कि वह एक उत्साही और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति था ?

गण कबीरदास ने सज्जन पुरुषों की तुलना वृक्षों तथा नदियों से क्यों की है?

घण ‘फटे दूध से मक्खन नहीं निकलता’ इस उदाहरण से रहीमदास जी क्या कहना चाहते हैं ?

ङ माँ यशोदा ने बालक कृष्ण को गोद में उठाकर क्या किया और क्या कहा?

चण उस घटना का वर्णन करो जब तिलक ने गणित के प्रश्नों को कक्षा में मौखिक ही हल कर दिया था ?

छण स्वतन्त्रता प्राप्ति में बाल गंगाधर तिलक का क्या योगदान रहा ?

2ण निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो.

कण रूठे सुजन मनाइएए जो रूठे सौ बार।

रहिमन फिरि.फिरि पोहिए टूटे मुक्ताहार।।

खण लोकमान्य बाल गंगाधर के विचारए देशभक्ति और स्वातंत्र्यणप्रेम हमारे लिए सदा ही प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

3ण (क) इन शब्दों में ‘इत’ प्रत्यय लगाकर नवीन शब्द बनाओ.

प्रकाशए प्रभावए प्रवाहए आलोक

(ख) मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो.

भगीरथ प्रयास
थोथा चना बाजे घना
मनचंगा तो कठौती में गंगा
हाथ मलना
ऊँट के मुँह में जीरा
आँखों का तारा होना

(ग) नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखो.

भय ՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙ प्रकाश ՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙ
राजा ՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙ शिक्षा ՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙ
रानी ՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙ उष्ण ՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙՙ

4ण नीचे दो.दो शब्दों के जोड़े दिये गये हैं। यदि दोनों के अर्थ समान हों तो ष्टसष्ठ पर और विपरीत हों तो ष्टविष्ठ पर घेरा लगाओ.

कण कम . अधिक स वि घण शत्रु . मित्र स वि
खण आदर . सम्मान स वि डण हर्ष . प्रसन्नता स वि
गण सुख . दुःख स वि चण जन्मभूमि . मातृभूमि स वि

5ण नीचे दिए गए शब्दों को एक साथ मिलाकर लिखो .

किशोर . अवस्था त्र ՙՙՙ
वृद्ध . अवस्था त्र ՙՙՙ
बाल्य . अवस्था त्र ՙՙՙ
प्रौढ़ . अवस्था त्र ՙՙՙ

अपने आप 3

चित्रात्मक मुहावरे

ऑंख का तारा होना
मुँह में पानी आना
अन्धे की लाठी

पैरों में बेड़ी पड़ना
चिराग तले अँधेरा
हाथी चला जाता है और
कुत्ते भौकते रहते हैं

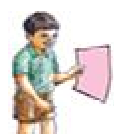

14

हौसला

उसे देखा तो क्षण भर को विश्वास ही नहीं हुआ, कि वह माइकल है। यहाँ इस बुलन्दी पर ! तो क्या जीवन से हार मान चुका माइकल अपने दु:ख से उबर चुका है ?

पन्द्रह जुलाई सन् उन्नीस सौ उन्यासी। जुलाई का दूसरा सप्ताह। अपनी माँ के साथ हमारी कक्षा में एक बच्चा आया। उसका उसी दिन दाखिला हुआ था। स्वस्थ, गोल-मटोल। छोटी-छोटी आँखे, घुँघराले बाल, हँसता हुआ सा चेहरा। कुछ ही दिनों में अपने व्यवहार और प्रतिभा के बल पर वह कक्षा में सबकी आँखों का तारा हो गया। विद्यालय की सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेता। संगीत और चित्रकला तो जैसे उसे विरासत में मिले थे।

माइकल कब मेरा सबसे खास दोस्त हो गया, मुझे भी पता न चला। साथ-साथ रहना, खेलना, पढ़ना, खाना-पीना। मित्र के साथ-साथ वह मेरा प्रतिद्वन्दी भी था। कक्षा में सबसे अधिक अंक पाने के लिए हम दोनों में होड़ लगी रहती। वह संगीत में प्रथम रहता, तो मैं खेल में। माइकल चित्रकला में पुरस्कार पाता,

मैं भाषण में। उसे गणित में ज्यादा अंक मिलते तो मुझे हिन्दी में। यह हमारे बीच की स्वस्थ प्रतिस्पर्धाा ही थी, जिसने निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। ह्देखना मैं एक दिन अच्छा संगीतकार बनूँगाह – माइकल आत्मविश्वास से कहता।

समय पंख लगाकर उड़ रहा था कि अचानक वह हो गया जिसके बारे में किसी ने सोचा भी न था। एक दिन सुबह-सुबह मैं और माइकल विद्यालय पहुँचे ही थे, कि प्रधाानाचार्य जी ने अपने कक्ष में बुलवा लिया। प्रधाानाचार्य जी बहुत प्रसन्न थे। बोले, ह्बेटा, तुम दोनों ने हमारे विद्यालय का सदैव गौरव बढ़ाया है। चेन्नई में बच्चों की राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता होने वाली हैं। मैंने वहाँ के लिए तुम दोनों का नाम भेज दिया है। मैं चाहता हूँ, कि तुम देश भर में अपने विद्यालय का नाम रोशन करो। तुम्हारी शिक्षिका मंजीत साथ रहेंगी। परसों ही जाना होगा, इसलिए मंजीत जी से मिलकर तैयारियाँ कर लो।ह

हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। प्रधाानाचार्य जी के चरण स्पर्श कर मंजीत मैडम से मिले और जी-जान से तैयारियों में जुट गए।

पूरे एक सप्ताह तक हम चेन्नई में रहे। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। माइकल ने संगीत में स्वर्ण पदक जीता, मैंने भाषण में। हमें और भी कई पुरस्कार मिले। वहाँ कई प्रदेशों के बच्चे हमारे दोस्त बन गए। अब हम जल्द से जल्द घर पहुँचना चाहते थे।

कहते हैं कि विपत्ति कभी बताकर नहीं आती। जरा सी असावधाानी जीवन भर की खुशियों को ग्रहण लगा देती है। वापसी में ऐसा ही हुआ। बस पकड़ने की जल्दी में माइकल ने चौराहे पर जली लाल बत्ती नहीं देखी और बस की चपेट में आ गया। होश आने पर वह अस्पताल में था और दोनों टाँग गँवा चुका था। रंग में भंग पड़ गया। सबकी आँखों में सिर्फ आँसू थे।

इस दुर्घटना ने माइकल को मानसिक रुप से असंतुलित कर दिया। वह निराशा के गर्त में चला गया। समझाने पर कहता, ह्सब कुछ खत्म हो गया। माइकल के ऊपर आई इस विपत्ति ने मुझे झकझोर कर रख दिया। वह मेरा सर्वाधिाक प्रिय मित्र था। अब मैं किसके साथ खेलता- कूदता ?ह कक्षा में किससे होड़ लेता ?

इस बीच माइकल के पिताजी का तबादला चण्डीगढ़ हो गया, अपनी माँ, पिताजी और बहन के साथ माइकल शहर छोड़ रहा था तो लग रहा था जैसे मेरे शरीर से कोई प्राण ले जा रहा है। ह्चाचा जी! चाची जी! दीदी!..... माइकल का बहुत धयान रखना-कहते समय मेरी आँखों से अचानक ही आँसू बह निकले थे।ह

माइकल चण्डीगढ़ जा चुका था। कुछ दिनों तक दीदी की चिट्ठियाँ आती रहीं, जो धीरे–धाीरे कम होती गईं। वर्षों के अन्तराल ने हमें एक दूसरे से लगभग दूर कर दिया था।

शिक्षा पूरी करने के बाद मैं अधयापक बन गया। कक्षा के बच्चों में अभी भी मेरी निगाहें माइकल को ढूँढ़ती, पर माइकल का कोई अता–पता न था।

कहते हैं, इतिहास खुद को दोहराता है। लगभग ऐसा ही हुआ। अपने विद्यालय के बच्चों की टीम लेकर मुझे मुम्बई जाना पड़ा। इस बार मैं बहुत सावधाान था। ह्सभी बच्चे सड़क के नियमों का पालन करेंगेह मैंने चेतावनीपूर्वक कहा।

प्रतियोगिताओं का उद्घाटन प्रारम्भ हुआ। उद्घोषक ने बताया कि उद्घाटन एक महान संगीतज्ञ के द्वारा किया जाना है। परदे के पीछे से वाद्य–यन्त्र बजना प्रारम्भ हुए। मंच पर धीरे–धीरे अन्धाकार से प्रकाश ैलने लगा। व्हील चेयर द्धपहिया कुर्सीत्र्ञ्च पर माइक हाथ में थामे मुख्य अतिथि मंच पर आए। सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। अरे ! यह तो मेरे बचपन का मित्र माइकल है – मैं चौंक उठा। मेरी आँखें खुशी से भर आईं।

माइकल ने बेहद मधाुर गीत सुनाया। गाते–गाते उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी। मैंने हाथ हिलाकर अभिवादन किया। कार्यक्रम समाप्त होते ही मैं दौड़कर मंच पर गया। माइकल ने मुझे गले लगा लिया। ह्हम दोनों बचपन के मित्र हैंह– माइकल ने मेरे विद्यार्थियों को बताया। इसके बाद माइकल हम सबको वहाँ ले गया जहाँ वह रुका हुआ था।

तुम्हें याद है न अवनीश, वह दुर्घटना। टाँगे गँवा देने से मैं जिन्दगी से निराश हो गया था। अपने को अक्षम समझने लगा था। उस समय रोज़ी दीदी ने मुझे हताशा से उबारा। दीदी मुझे संभालतीं, किताबें लातीं, कैसेट लातीं। उन्होंने मुझे गिटार भी लाकर दिया। ह्तुम एक दिन जरूर प्रसि) संगीतकार बनोगेह दीदी कहतीं। धाीरे–धाीरे मैंने संगीत का अभ्यास प्रारम्भ किया और अपने सपने को साकार किया। मैं अपना एक संगीत का स्कूल भी चलाता हूँ, जहाँ तमाम बच्चे मु"त में संगीत सीख रहे हैं।

बच्चे उत्सुकता से माइकल की बातें सुन रहे थे। वह कह रहा था, ह्प्यारे बच्चों! बड़ी से बड़ी विपत्ति भी सब कुछ समाप्त नहीं करती। विपत्ति के समय हौसला बनाए रखना जरूरी होता है। अगर आपमें हिम्मत है, हौसला है तो आपको अपना लक्ष्य प्राप्त होकर रहेगा।ह

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

बुलन्दी = ऊँचाई, उत्कर्ष प्रतिद्वन्दी = मुकाबला करने वाला

दाखिला = प्रवेश प्रतिस्पर्धा = होड़

प्रतिभा = असाधाारण बु)िमत्ता हौसला = हिम्मत/उत्साह

या गुण लक्ष्य = उद्देश्य

हताशा = निराशा

शब्दों का खेल

1. नीचे दिए गए मुहावरों का अर्थ शिक्षक से पूछकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो-

द्धकत्र आँखों का तारा होना

द्धखत्र जी-जान से जुटना

द्धगत्र खुशियों को ग्रहण लगना

द्धघत्र रंग में भंग पड़ना

2. नीचे लिखे शब्दों का शु) उच्चारण करो और अपनी कॉपी में लिखो-

व्यवहार, प्रतिद्वन्दी, प्रतिस्पर्धा, प्रेरणा, विभिन्न, असन्तुलित, सर्वाधिाक, दृष्टि

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए शब्द के सही रूप से करो -

- दुर्घटना ने माइकल को .... कर दिया। द्धअसन्तुलनत्र
- बच्चे .... से माइकल की बातें सुन रहे थे। द्धउत्सुकतात्र
- रोज़ी दीदी ने मुझे .... से उबारा। द्धहताशत्र

4. इन वाक्यों को पढ़ो और समझो -

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्य काल
माइकल ने गाना गाया। रोजी पुस्तक लाई।	माइकल गाना गा रहा है। रोजी पुस्तक ला रही है।	माइकल गाना गाएगा। रोजी पुस्तक लाएगी।

अब, इन वाक्यों के सामने उनके काल लिखो -

वाक्य काल

- पिताजी ने बहुत सी बातें बताईं।
- कल विद्यालय की छुट्टी रहेगी।
- रजिया खाना खा रही है।
- अगले माह दीपावली है।
- राघव और श्रेया व्यायाम कर चुके हैं।

बोध प्रश्न

1. उत्तर दो -

द्धकऋ माइकल किस गुण के कारण सबकी आँखों का तारा हो गया था ?

द्धखऋ माइकल के साथ दुर्घटना क्यों हुई ?

द्धगऋ दुर्घटना से माइकल पर क्या प्रभाव पड़ा ?

द्धघऋ रोजी ने माइकल को हताशा से कैसे उबारा ?

द्धऋ माइकल अपना सपना कैसे पूरा कर पाया ?

2. किसने किससे कहा ?

द्धकऋ हदेखना मैं एक दिन अच्छा संगीतकार बनूँगा।ह

द्धखऋ हतुम दोनों ने हमारे विद्यालय का सदैव गौरव बढ़ाया है।ह

द्धगऋ हमाइकल का बहुत धयान रखना।ह

द्धघऋ हसभी बच्चे सड़क के नियमों का पालन करेंगे।ह

द्धऋ हहम दोनों बचपन के मि> हैं।ह

द्धचऋ हतुम एक दिन जरूर बड़े संगीतकार बनोगे।ह

ह्छऋ हअगर आपमें हिम्मत है, हौसला है तो आपको अपना लक्ष्य प्राप्त होकर रहेगा।ह

3. सोचो और बताओ -

ह्कऋ इस पाठ का शीर्षक हौसला क्यों रखा गया है ?

ह्खऋ इस पाठ का तुम क्या शीर्षक देना चाहोगे ?

तुम्हारी कलम से

1. अपने क्षेत्र के किसी ऐसे बच्चे से मिलो जो शारीरिक रूप से समर्थ नहीं है। सोचो और लिखो, तुम उसकी मदद कैसे कर सकते हो।

अब करने की बारी

ह्कऋ अपने बड़ों से ऐसे व्यक्तियों के बारे में पता करो जिन्होंने शारीरिक अक्षमता पर विजय प्राप्त कर दुनिया में नाम रोशन किया। उनके बारे में अपनी कक्षा में बताओ।

ह्खऋ पता करो, तुम्हारी कक्षा में कोई ऐसा बच्चा तो नहीं जो किसी प्रकार की शारीरिक अक्षमता से ग्रस्त है। योजना बनाओ, तुम उसके लिए क्या-क्या सहयोग दे सकते हो ?

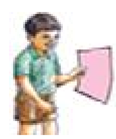

15

ओणम

भारत को 'त्योहारों का देश' कहा जाता है। यहाँ वर्ष भर त्योहारों की ॠूम रहती है। ये त्योहार जन-जीवन में चेतना, उत्साह और एकता का संचार करते हैं।

दक्षिण भारत में केरल राज्य का एक विशेष त्योहार है – ओणम। लगातार तीन माह की भारी वर्षा के बाद आकाश स्वच्छ और चमकीला नीला हो जाता है। तालाबों, झीलों, नदियों और झरनों में जल की बहुतायत हो जाती है। कमल और लिली पूरे सौन्दर्य के साथ खिलकर महक उठते हैं। फसलें पककर झूमने लगती हैं। यही समय होता है फसलों के घर आने का, झूमने और खुशियों का त्योहार ओणम मनाने का। यह श्रावण मास में मनाया जाता है। मलयालम में इस माह को 'चिंगमासम' कहते हैं। इस समय ऐसा लगता है मानो प्रकृति भी ओणम के स्वागत की तैयारियाँ कर चुकी हो।

प्रत्येक त्योहार के साथ कोई न कोई कथा जुड़ी रहती है। 'ओणम' के साथ राजा महाबलि की पौराणिक कथा जुड़ी है। प्राचीन काल में महाबलि नाम के राजा केरल में राज्य करते थे। उनके राज्य में चारों ओर सुख और समृद्धि फैली थी। महाबलि अत्यन्त पराक्रमी थे। उन्होंने अपने पराक्रम से पृथ्वी और पाताल लोक का स्वामी बनने के बाद आकाश की ओर अधिकार बढ़ाना प्रारम्भ किया। देवराज इन्द्र की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने वामनरूप धारण कर महाबलि से दान में सम्पूर्ण पृथ्वी और आकाश माँग लिया तथा महाबलि को पाताल लोक भेज दिया। राजा महाबलि की प्रार्थना पर प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें वर्ष में एक बार पृथ्वी पर अपने राज्य में आने का आशीर्वाद दिया। केरलवासियों का दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक वर्ष महाबलि 'तिरुओणम' के दिन केरल राज्य में आते हैं। इस दिन महिलाएँ उनके स्वागत के लिए अपने घरों के प्रवेशद्वार विभिन्न प्रकार से सजाती हैं और रात्रि में दीप जलाती हैं।

ओणम आनन्द और उल्लास का पर्व है। यह पाँच दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन घर की लिपाई–पुताई और पास–पड़ोस को स्वच्छ किया जाता है। सब घरों के आँगन रंग–बिरंगे टूलों की गोलाकार आकृतियों ढ्ढूलचक्रोंत्र से सजाए जाते हैं जिसे 'पूक्कलम' कहते हैं। पूक्कलम की सजावट में परिवार के स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी उत्साहपूर्वक योगदान देते हैं। विष्णु और महाबलि की मूर्तियों को चावल के आटे और नन्हे–नन्हे स्फ़ेद द्रोण पुष्पों से सजाया जाता है। पूक्कलम के निकट दीप रखकर इन मूर्तियों का पूजन किया जाता है।

ओणम का दूसरा दिन सर्वाऋिक महत्वपूर्ण होता है। इसे 'तिरुओणम' कहते हैं। 'तिरुओणम' पारिवारिक जनों के मिलन, पारस्परिक प्रेम और सहयोग का पर्व है। इस दिन बाहर गए हुए लोग परिवार में लौट आते हैं और उल्लासपूर्वक मिलजुलकर त्योहार मनाते हैं। सभी लोग नए और स्वच्छ वस्त्र ऋारण करते हैं। मधयाह्न काल में सब एक साथ बैठकर केले के पत्ते पर भोजन करते हैं। यहाँ केले के पत्ते पर भोजन करना अत्यन्त पवित्र माना जाता है।

ओणम के दिन भोजन में विविऋ प्रकार के व्यंजन और पकवान सम्मिलित रहते हैं। इनमें चावल, दाल, पापड़, सांभर, खिचड़ी, उप्पेरी ढ्ढपकौड़ीत्र, पायसम् ढ्ढखीरत्र आदि मुख्य हैं। ऋान, नारियल और केला केरल की मुख्य उपजें हैं। विविध पकवान और व्यंजन इन्हीं से बनाए जाते हैं।

ओणम के अवसर पर खेल और मनोरंजन के अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बालिकाएँ और स्त्रियाँ ताली बजाते हुए समूह में मनमोहक नृत्य करती हैं, जिसे 'कैकोट्टिकली' नृत्य कहा जाता है। नाचते समय वे गाती हैं –

‘हमने घर को खूब सजाया

आओ महाबलि, आओ।

फैले सुख और शान्ति सभी में

सबको वर दे जाओ’ .....

गाँव और नगरों में खेलकूद की अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। इनमें नदियों और निकटवर्ती समुद्र में आयोजित नौका–दौड़ सर्वाधिक आकर्षित करती है। यह आरमुला नामक स्थान पर होती है। दूर–दूर के गाँवों से सर्पाकार नौकाएं पम्बा नदी के तट पर लाई जाती हैं और उनकी पूजा की जाती हैं। इस दिन सर्पनौका–दौड़ का आयोजन किया जाता है। वर्ष भर ग्रामवासी इस दिन के लिए नौकाओं को विशेष रूप से तैयार करते हैं। उनकी मरम्मत रंगाई–पुताई की जाती है। प्रत्येक गाँव वाले अपनी नौकाएं लेकर गर्व से प्रतियोगिता में आते हैं। गाँव के सभी वर्गों के व्यक्ति इन विशालकाय नौकाओं में बैठते हैं। परम्परागत पोशाकें पहने नौकागीत गाते हुए सब लोग अपने चप्पू एक निश्चित ताल में एक साथ चलाते हैं। दौड़ में विजेता रही नौकाओं को पुरस्कृत किया जाता है। नौका–दौड़ को देखने के लिए देश–विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

माना जाता है कि 'तिरुओणम' के तीसरे दिन महाबलि अपने लोक को लौट जाते हैं। इसलिए तिरुओणम के दिन आँगन में बनाई गई कलाकृतियाँ तीसरे दिन हटा ली जाती हैं लेकिन अगले दो दिन तक ओणम चलता रहता है। केरलवासी बीते हुए ओणम की मधुर यादों और अगले ओणम की प्रतीक्षा में पुनः खुशी से अपने कार्यों में लग जाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

श्रावण माह = सावन का महीना उल्लास = खुशी

मधयाह्न काल = दोपहर का समय चेतना = प्राण

पौराणिक = पुराणों से ली गयी घटना प्रतीक्षा = इन्तजार

पराक्रमी = वीर, प्रतापी संचार = फैलना

निकटवर्ती = समीप का पर्यटक = सैलानी

शब्दों का खेल

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो -

(क) दक्षिण भारत में ओणम .... का प्रमुख त्योहार है।

(ख) यह .... मास में मनाया जाता है।

द्धगऋ ओणम .... और .... का पर्व है।

द्धघऋ तिरुओणम के .... दिन .... अपने लोक लौट जाते हैं।

2. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे शब्दों का एक ही वाक्य में प्रयोग करो -

- यदि, तो - यदि वर्षा नहीं होती तो मैं समय से घर पहुँच जाता।
- जैसे ही, वैसे ही -
- जहाँ तक, वहाँ तक -
- यद्यपि, फ़िर भी -

बोध प्रश्न -

1. उत्तर दो -

द्धकऋ भारत को त्योहारों का देश क्यों कहा जाता है ?

द्धखऋ 'ओणम' किस राज्य में मनाया जाता है ?

द्धगऋ 'पूक्कलम' किसे कहते हैं ?

द्धघऋ 'ओणम' के साथ कौन-सी पौराणिक घटना जुड़ी है ?

र्द्धऋ 'तिरुओणम' क्यों महत्वपूर्ण है ?

द्धचऋ नौका-दौड़ प्रतियोगिता कैसे होती है ?

तुम्हारी कलम से

1. तुम्हारे गाँव/पड़ोस में भी ऐसे त्योहार मनाए जाते होंगे। किसी त्योहार के बारे में अपने शब्दों में लिखो -

द्धकऋ उसे कब मनाया जाता है ?

द्धखऋ कैसे मनाया जाता है ?

द्धगऋ क्या-क्या तैयारियाँ की जाती हैं ?

द्घघऋ क्या-क्या पकवान बनाए जाते हैं ?

द्ङऋ उस त्योहार को क्यों मनाते हैं ?

द्घचऋ उस दिन कौन-कौन से गीत गाए जाते हैं ?

द्घछऋ तुम्हें यह त्योहार क्यों अच्छा लगता है ?

पता करो -

'ओणम' का त्योहार फसल काटने के बाद मनाया जाता है। पता करो कि हमारे और कौन-कौन से त्योहार फसल चक्र से जुड़े हुए हैं ?

अब करने की बारी -

द्घकऋ अपने किसी मित्र को अपने यहाँ मनाए जाने वाले त्योहार के बारे में पत्र लिखो।

द्घखऋ दूसरे राज्यों में मनाए जाने वाले त्योहारों के विषय में जानकारी करो।

द्घगऋ ओणम के दिनों में प्रकृति का क्या रूप होता है ? इस वर्णन को चित्र का रूप दो और रंग भरो।

द्घघऋ इस वर्ग में कुछ त्योहारों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखो -

हो	क	र	द	वै
ली	क्रि	क्षा	श	शा
लो	स	ब	ह	खी
ह	म	न्धा	रा	ई
ड़ी	स	न	ग	द

द्ङऋ बड़ों की मदद से जानो -

- केरल की राजऋानी
- केरल की भाषा

- केरल की प्रमुख नदी
- केरल का प्रसि) नृत्य
- केरल का कोई और त्योहार
- केरल का प्रसि) उद्योग-धान्ऋा

द्धचऋ अपने यहाँ किसी त्योहार में गाया जाने वाला कोई गीत लिखो।

इसे भी जानो -

विराम-चिह्न : विराम का अर्थ होता है - रुकना, विश्राम लेना। बातचीत के दौरान अभिप्राय को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में रुकना पड़ता है। लिखते समय इन विरामों को दिखाने के लिए हम कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं। ये **विराम-चिह्न** कहलाते हैं। कुछ विराम-चिह्न इस प्रकार हैं -

विराम-चिह्न	**प्रयोग कहाँ**	**उदाहरण**
अल्प विराम द्ध,ऋ	वाक्य में सबसे कम रुकने के लिए तथा एक ही प्रकार के शब्दों को अलग करने के लिए	राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ् न दरबार में पधारे।
पूर्ण विराम द्ध।ऋ	वाक्य पूरा होने पर अन्त में	मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ।
प्रश्नवाचक द्ध?ऋ	वाक्य के अन्त में जिनमें प्रश्न सूचित हों	तुम्हारा कमरा कहाँ है ?
विस्मयबोधक द्ध!ऋ	वाक्य के अन्त में खुशी, घृणा, दुःख या हैरानी प्रकट करने के लिए	अरे ! वह आगरा नहीं गया।
योजक चिह्न द्ध-ऋ	दो शब्दों के बीच उन्हें जोड़ने के लिए	आज-कल वह घर नहीं आता।

इकहरा अवतरण चिह्न द्ध' 'ऋ	किसी विशेष शब्द या पद को उद्धृत करने के लिए उनके ऊपर	वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की।
दोहरा अवतरण चिह्न द्धह हऋ	किसी के कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए शुरू और अन्त में	स्वामीनाथ बोला – हदादी, मुझे आपसे एक बात कहनी है।ह
निर्देश चिह्न द्ध ऋ	संवाद में नाम के बाद	कृष्ण – हमाँ, मैं गाय चराने जाऊँगा।ह

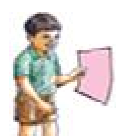

16

ग्राम श्री

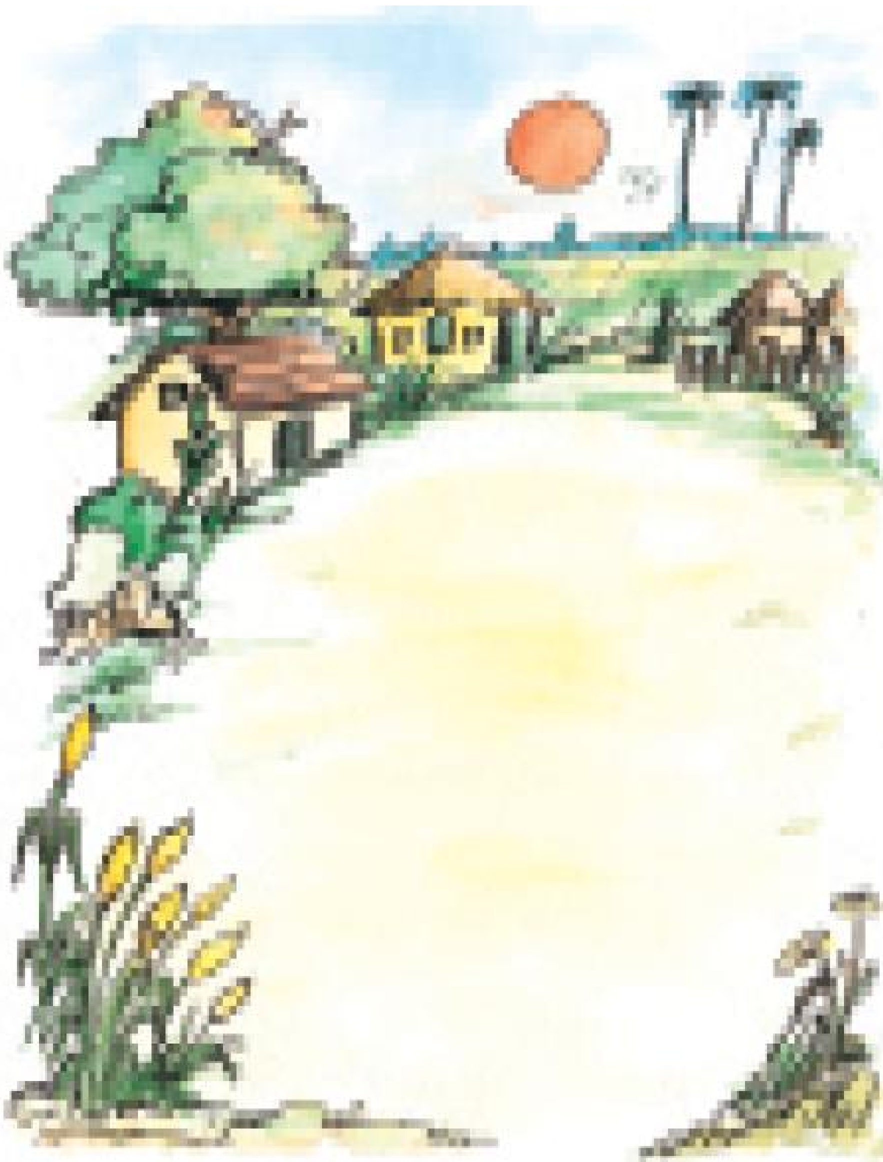

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल-सी कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली।
अब रजत स्वर्ण मंजरियों से
लद गईं आम्र तरु की डाली।
झर रहे ढाक, पीपल के दल,

हो उठी कोकिला मतवाली।
महके कटहल, मुकुलित जामुन,
जंगल में झरबेरी झूली।
फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम

आलू, गोभी, बैंगन, मूली।
पीले मीठे अमरूदों में
अब लाल-लाल चित्तियाँ पड़ीं,

पक गए सुनहले मधुर बेर
अँवली से तरु की डाल जड़ीं।
लहलह पालक, महमह धनिया
लौकी औ सेम फलीं, फैलीं,
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिरचों की बड़ी हरी थैली।
– *सुमित्रनन्दन पन्त*

कौसानी द्धअल्मोड़ाऋ में जन्मे सुमित्रनन्दन पन्त को ***'प्रकृति का सुकुमार कवि'*** *कहा जाता है। इनकी रचनाओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों का मनोरम वर्णन हुआ है। लोकायतन, ग्राम्या, चिदम्बरा, ग्रन्थि, पल्लव इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

दूर तलक = दूर तक आम्र तरु = आम के वृक्ष

रवि = सूर्य मुकुलित = अऋखिली

अँवली = छोटा आँवला दाड़िम = अनार

रजत स्वर्ण मंजरियों से = रुपहले और सुनहले आम के बौरों से

भावबोध

1. उत्तर दो –

द्धकऋ खेतों में कैसी हरियाली ौली है ?

द्धखऋ हरियाली से लिपटी सूर्य की किरणें कैसी लगती हैं ?

द्धगऋ आम में बौर कब आते हैं ?

द्धघऋ कोयल किस ;तु में मतवाली होकर कुहुकती है ?

द्धंऋ बसन्त ;तु में प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन होने लगते हैं ?

2. नीचे बाई ओर कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई हैं। दाई ओर उनसे सम्बन्ध्रित भाव व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ गलत क्रम में लिखी गई हैं। उन्हें सही क्रम में लिखो –

चाँदी की सी उजली जाली – मखमल के समान कोमल हरियाली

लद गईं आम्र तरु की डाली – चाँदी के रंग जैसी स्रफेद जाली

हो उठी कोकिला मतवाली – छोटे आँवले से वृक्ष की डालियाँ लद गई

अँवली से तरु की डाल जड़ी - आम के वृक्ष की डाल बौर से लद गई

मखमल सी कोमल हरियाली - कोयल आनन्द में मतवाली हो उठी

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से - अध खिले जामुन

मुकुलित जामुन - चाँदी और सोने के रंग के आम के बौर से।

3. **जाली-डाली :** इसी प्रकार के अन्य तुकान्त शब्दों को कविता में से ढूँढ़कर लिखो।

तुम्हारी कलम से

द्धकऋ किस ;तु में क्या मिलता है ?

ग्रीष्म ;तु वर्षा ;तु शीत ;तु

फल ....

सब्ज़ी ....

द्धखऋ इनमें से जो भी फल और सब्ज़ी तुम्हें अच्छी लगती है, उस पर छोटी सी कविता लिखो।

अब करने की बारी

1. कविता में आए फलों और सब्ज़ियों की अलग-अलग सूची बनाओ।

2. कविता को कंठस्थ करो और कक्षा में सुनाओ।

इसे भी जानो

जब हम बहुत-सी चीजों को याद रखना चाहते हैं तो उनकी एक सूची बनाते हैं। नीचे दी गयी सूचियों को पढ़ो-

होली की सूची

रंग, गुलाल, पिचकारी,

रंग-बिरंगी टोपी, गुब्बारे, नए कपड़े,

गुझिया, हलवा, मिठाइयाँ, मुखौटे

नए शब्द जो इस सप्ताह मैंने सीखे

उपकार, प्रकार, दिशा–निर्देश
अविरल, प्रवाह, सुगति

अब तुम भी अपनी सूची बनाओ –

जो चीजें तुम्हें बाजार से खरीदनी हैं–

अगले रविवार को जो काम तुम्हें करने हैं–

तुम इस तरह की और भी सूचियाँ बना सकते हो।

17

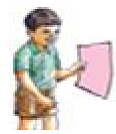

बच्चों का पूछताछ केन्द्र

सड़क के नुक्कड़ पर लकड़ी की एक छोटी-सी दुकान थी। उस पर पूछताछ केन्द्र लिखा हुआ था।

पूछताछ केन्द्र में एक महिला बैठती थी। वह लोगों के उन सवालों के जवाब देती थी, जो उससे पूछे जाते थे। महिला प्रतिदिन दुकान पर बैठती थी, लेकिन एक दिन अचानक कहीं चली गयी और वह दुकान खाली हो गई।

कुछ दिन दुकान खाली ही रही। एक दिन एक चंचल लड़की चीची सड़क पर घूम रही थी। उसने खाली दुकान देखते ही पूछताछ केन्द्र के ऊपर 'बच्चों का' शब्द लिख दिया और दुकान में जाकर बैठ गई। अब वह प्रतीक्षा करने लगी कि कोई आए और उससे सवाल पूछे।

सबसे पहले दो जुड़वाँ भाइयों ने बच्चों के पूछताछ केन्द्र को देखा। वे उत्सुक आए और चीची से पूछा –

हअगर कोई पिताजी की घड़ी से खेल रहा हो और वह गिरकर टूट जाए तो क्या करना चाहिए ?ह

हपिताजी से पूछना चाहिए कि जब घड़ी नहीं थी तब लोग समय कैसे मालूम करते थे।ह

चीची की बात सुनकर भाइयों ने एक दूसरे की तरु देखा और वहाँ से चले गए। उसके बाद सुनहरे बालों वाला एक बच्चा वहाँ आया और पूछने लगा -

हखरगोश किस तरह चिल्लाते हैं ?ह बच्चों का पूछताछ केन्द्र

चीची ने जवाब दिया - हखरगोश बिल्कुल नहीं चिल्लाते। वे ॠीरे-ॠीरे बातचीत किया करते हैं।ह

हक्यों ?ह छोटे बच्चे ने आश्चर्य से पूछा।

हक्योंकि उनको चिल्लाना पसन्द नहींह चीची ने बिल्कुल शान्त भाव से उत्तर दिया। कुछ ही देर में बच्चों के पूछताछ केन्द्र के सामने बच्चों की बहुत लम्बी कतार लग गई।

एक लड़की ने पूछा - हएक साॠारण कुत्ते को चतुर चालाक बनाने के लिए क्या-क्या सिखाना जरूरी है ?ह

हकुछ खास नहीं, कुत्ते को स्वयं ही कड़ा अभ्यास करके चतुर चालाक बनने दोह चीची ने जवाब दिया।

बच्चे एक से एक सवाल कर रहे थे, लेकिन चीची जवाब देने में उनसे भी आगे थी।

हचाँद रात में रोशनी देता है और सूरज दिन में, ऐसा क्यों ?ह एक बच्चे ने पूछा।

हयह उन्होंने आपस में तय कर रखा है,ह चीची ने जवाब दिया।

हकाले भालू को स्रुेद भालू किस तरह बनाया जाए ?ह भोली ने पूछा।

हॠो-ॠो कर सफ़ करकेह चीची बोली।

स्कूल का एक छात्र भारी बस्ता लेकर उदास मन से पंक्ति में खड़ा था। अपनी बारी आने पर पूछा –

ह्गणित में अगर कम नम्बर आएँ, तो किस तरह ठीक किए जाएँ ?ह

ह्गणित में जो खराब नम्बर मिले हों, वे भाषा में अच्छे नम्बरों से ठीक किए जा सकते हैंह चीची ने तुरन्त उत्तर दिया।

ह्वाह–वाह।ह छात्र अत्यन्त प्रसन्न हो गया।

चश्मा लगाये हुए एक बहुत गम्भीर–से दिखने वाले लड़के ने पूछा –

ह्बड़ों को सब कुछ करने की स्वतन्त्रा है, बच्चों को हर बात के लिए मना किया जाता है, ऐसा क्यों ?ह

बच्चों का पूछताछ केन्द्र ह्यह प्रश्न गलत है। बड़ों को भी सब कुछ करने की स्वतंत्रा नहीं हैह – चीची ने सख्ती से उत्तर दिया।

हअभी मुझे एक सवाल और पूछना हैह चश्मा लगाए हुए लड़के ने कहा।

'पूछो' चीची बोली।

हहवा का घर कहाँ है ? यह क्या खाती-पीती है ?'' लड़के ने पूछा।

हयह तो अभी तक खुद हवा को भी मालूम नहीं,ह चीची ने सोच-विचार कर उत्तर दिया।

हदीदी, जब रेलगाड़ी आती है तो सड़क का ाटक बन्द क्यों कर दिया जाता है?ह बड़ी-बड़ी आँखों वाले गोलू ने बेहद जिज्ञासा से पूछा।

हजिससे रेलगाड़ी सड़क पर न आ जाए,ह चीची ने तत्परता से कहा।

तभी एक पहलवान सा दिखने वाला लड़का आया।

हक्या तुम तरबूज को एक ही बार में दाँत से काट सकती हो ?ह उसने पूछा।

हहाँ मैं काट सकती हूँ,ह चीची ने कहा।

हशर्त लगा लो तुम नहीं काट सकतीं !ह ... लड़का बोला।

हशर्त लगाती हूँ।ह

चीची पूछताछ केन्द्र से बाहर निकली। पूछताछ केन्द्र पर एक कागज लिखकर चिपका दिया हपूछताछ केन्द्र शर्त लगाने के लिए बन्द है।ह

अभ्यास प्रश्न

1. तुमने अक्सर रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन तथा अन्य जगहों पर 'पूछताछ केन्द्र' लिखा देखा होगा। 'पूछताछ केन्द्र' में तुमने किसी पुरुष या महिला को बैठे देखा होगा, जो सबको विभिन्न जानकारियाँ देते हैं जैसे - कहाँ से कहाँ को बस/रेलगाड़ी कितने बजे जाएगी, किस जगह के लिए कहाँ से बस/रेलगाड़ी मिलेगी, आदि।

इस कहानी में 'बच्चों का पूछताछ केन्द्र' है, बच्चों के सवाल हैं, बच्चों के ही जवाब। तुम भी अपनी कक्षा में बच्चों का पूछताछ केन्द्र बनाओ और चीची की जगह किसी बच्चे को बैठाओ और निम्नलिखित विषय पर प्रश्न पूछो -

प्रश्न- हाथों की स्फाई क्यों आवश्यक है ?

उत्तर- भोजन के समय कीटाणु गन्दे हाथों से हमारे पेट में प्रवेश करता है। भोजन से पहले एवं शौच के बाद ठीक ढंग से हाथों की स्फाई संक्रमण फैलाने वाले रोगाणुओं एवं लगभग 40 प्रतिशत बीमारियों से बचाव करती है।

प्रश्न- हाथों को धाोने का सही तरीका क्या है ?

उत्तर- चीची ने नीचे दिए गए चित्रें के द्वारा हाथ धाोने का सही तरीका इस तरह बताया-

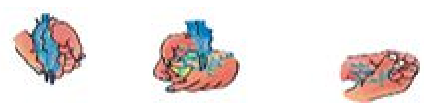

पानी से हाथों को गीला करना

साबुन का

उपयोग

20 सेकेण्ड

हाथों को

आपस में रगड़ना

नाखूनों में जमी मैल एवं अंगुलियों को साफ करना

बहते हुए पानी से हाथ धाोना

साफ तौलिये से हाथ पोंछना

2. नीचे दो वर्गों के शब्दों को जोड़कर सार्थक शब्द बनाओ। जैसे : कक्षा + कक्ष = कक्षाकक्ष

कक्षा जन्म मातृ राष्ट्र राग यु) चाल अधययन वन्य पाठ्य वीर कर्म चरण **धर्म**

द्वेष धवज शील पुस्तक चलन जीव वीर

भूमि पादुका कक्ष शील भक्त द्वेष भूमि

3. नीचे दिए गोले को देखो। इसमें 'ब' अक्षर से शुरु होने वाले शब्द दिए गए हैं जो क्रमशः दो, तीन, चार और पाँच अक्षरों से मिलकर बने हैं।

- इसी आद्धार पर तुम भी लिखो 'र' अक्षर से शुरू होने वाले शब्द जो इसी क्रम में क्रमशः दो, तीन, चार और पाँच अक्षरों से मिलकर बने हों।

र

- इसे तुम खेल की तरह भी खेल सकते हो। कक्षा में अपनी दो टीम बना लो। अब क्रमशः दो, तीन, चार, और पाँच अक्षरों से मिलकर बने शब्दों की अन्त्याक्षरी खेलो।

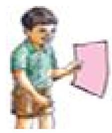

18

मोहम्मद साहब

हजरत मोहम्मद साहब का जन्म अरब के प्रसिद्‌धा नगर मक्का में हुआ था। उनकी माता का नाम आमिना तथा पिता का नाम अब्दुल्लाह था। उनके जन्म के दो माह पूर्व ही पिता का निऋन हो गया था। छः वर्ष की अवस्था में ही उनकी माता भी चल बसीं। उनकी माता के देहान्त के बाद उनका पालन–पोषण उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने किया। उनके दादा के देहान्त के बाद चाचा अबूतालिब ने उनका पालन किया।

मोहम्मद साहब बचपन से ही बड़े नेक और शान्त स्वभाव के थे। बड़े होने पर वे अपने चाचा के साथ व्यापार के लिए आस–पास के देशों में जाने लगे थे। वे बड़ी लगन से काम करते थे। उनकी मेहनत और ईमानदारी की प्रशंसा दूर–दूर तक ैल गई। इसीलिए बाहर जाते समय लोग अपने आभूषण और बहुमूल्य सामान उनके पास रख जाते थे और वापस आकर ले लिया करते थे।

उन दिनों अरब देश में बहुत–सी कुरीतियाँ प्रचलित थीं। अरब निवासी अनेक किस्म के अन्ऋविश्वासों में जकड़े हुए थे। वे जादू–टोने में विश्वास करते थे। लोग जुआ खेलते थे और मदिरा पीकर आपस में लड़ते–झगड़ते थे। छोटी–छोटी बातों पर अकड़ दिखाते और एक दूसरे के प्राणों के प्यासे हो जाते थे। कुछ लोग लड़कियों को पैदा होते ही मार देते थे। ऊँची–ऊँची दरों पर सूद पर पैसा उऋार देते थे। इन बुराइयों को देखकर मोहम्मद साहब को बहुत दु:ख होता था। उनका मन अशान्त हो उठता था। मक्का के पास की पहाड़ियों में 'हिरा' नाम की एक गुफ़ा थी। वे प्राय: उस गुफ़ा में जाकर चिन्तन करते और धयान लीन हो जाते। वे समाज की बुराइयों को दूर करके उसे समृद्‌धि और सहयोग के रास्ते पर बढ़ाना चाहते थे।

उन्होंने लोगों को बताया कि ईश्वर एक है। सबको उसकी उपासना करनी चाहिए। उसी ने सबको पैदा किया है और वही सबकी रक्षा करता है। उन्होंने यह भी बताया कि सभी मनुष्य बराबर हैं, कोई ऊँचा या नीचा नहीं है। उनका कहना था कि मनुष्य की वह रोजी सबसे पवित्र है, जो उसने अपने हाथ से मेहनत करके कमायी है। वे बदला लेने से क्षमा कर देना अच्छा समझते थे। वे कहते थे कि पड़ोसी को कष्ट देने वाला आदमी कभी जन्नत में नहीं जा सकता।

उन्होंने कहा कि आदमी को अपनी आमदनी का एक भाग दूसरों के कल्याण में लगाना चाहिए। दूसरों की अमानत की रक्षा करनी चाहिए। सभी ॠर्मों का आदर करना चाहिए। सूदखोरी नहीं करनी चाहिए। बुरी आदतों जैसे शराब पीना, जुआ खेलना आदि से दूर रहना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य की भलाई के लिए उन्होंने अनेक उपदेश दिए। मोहम्मद साहब के बताए हुए रास्ते पर चलने वाले मुसलमान कहलाए और उनके ॠर्म का नाम इस्लाम पड़ा। इस्लाम का अर्थ है – शान्ति में प्रवेश करना।

आरम्भ में मक्का वालों को मोहम्मद साहब की बातें पसन्द न आईं। वे उन्हें तरह-तरह से कष्ट देने लगे। वे उन्हें और उनके साथियों को बुरा-भला कहते और उन पर पत्थर बरसाते। एक वृद्धा स्त्री तो उनसे इतनी रुष्ट थी कि जब वे रास्ते से निकलते तो उन पर कूड़ा ॆंकती और रास्ते में काँटे बिखेर देती लेकिन मोहम्मद साहब उस रास्ते से चुपचाप निकल जाते और उस बुढ़िया से कुछ न कहते। एक दिन वे उसी रास्ते से जा रहे थे तो न उन पर कूड़ा ॆंका गया और न काँटे ही बिखेरे गए। उन्होंने पड़ोसियों से पूछा तो मालूम हुआ कि वह स्त्री बीमार है। मोहम्मद साहब उसका हाल पूछने गए। इस बात का उस स्त्री पर अच्छा प्रभाव पड़ा और उनका बहुत आदर करने लगी।

मक्का वालों के विरोॠ के बाद भी मोहम्मद साहब बराबर उपदेश देते रहे। मक्का वालों ने उन्हें तरह-तरह के प्रलोभन दिए किन्तु इनका मोहम्मद साहब पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मक्का वालों का विरोॠ बढ़ता ही गया और मोहम्मद साहब ने समझ लिया कि अब उनका यहाँ रहना कठिन है। अतः उन्होंने मदीना जाने का निश्चय किया।

उन्होंने अपने पास रखी हुई दूसरों की ॠरोहर को अपने चचेरे भाई हजरत अली को सौंप दिया और उनको यह समझाया, हलोगों को उनकी ॠरोहर लौटाकर तुम भी मदीना चले आना।ह

अब मोहम्मद साहब अपने मित्र अबूबक्र के साथ मदीना की ओर चल दिए। वे पहले शहर के बाहर एक गुा में रुके। मक्का वाले जब उनके घर में घुसे तो मोहम्मद साहब वहाँ न मिले। वे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते शहर के बाहर गुा की ओर चले। लोगों को अपनी ओर आते देखकर अबूबक्र घबराए, मगर मोहम्मद साहब ने कहा, हअबूबक्र! घबराओ नहीं, खुदा हमारे साथ है। वह हमारी रक्षा करेगा।ह कहा जाता है कि उसी

समय मकड़ी ने ग़ुा के मुँह पर जाला बुन दिया। जब मोहम्मद साहब के विरोधी उन्हें ढूँढ़ते–ढूँढ़ते ग़ुा के पास पहुँचे, तब उन्होंने ग़ुा के द्वार पर मकड़ी का जाला तना हुआ पाया। इससे उन्होंने समझा कि ग़ुा में कोई नहीं है। वे आगे बढ़ गए और मोहम्मद साहब को न पा सके।

तीन दिन ग़ुा में रहने के बाद मोहम्मद साहब ऊँटनी पर चढ़कर मदीना की ओर चल पड़े। मक्का से मदीना की यात्र 'हिजरत' कहलाती है और इसी से हिजरी सन् शुरू होता है।

कुछ दिन बाद मोहम्मद साहब ने एक मस्जिद बनाने की बात सोची। मस्जिद बनाने के लिए जो जमीन पसन्द की गई, वह दो अनाथ बच्चों की थी। ये बच्चे जमीन मु“त में देना चाहते थे, किन्तु मोहम्मद साहब ने मु“त की जमीन लेने से मना कर दिया। एक अन्सारी ने इस जमीन का मूल्य चुका दिया। इस जमीन पर मोहम्मद साहब ने एक मस्जिद बनवाई। वे मस्जिद से मिले हुए कमरे में रहने लगे, कुछ समय बाद यह मस्जिद ह्णमस्जिदे नब्वीह के नाम से प्रसिद्धा हुई।

धीरे–धीरे मोहम्मद साहब के समर्थकों की संख्या बढ़ती गई और उनका यश चारों ओर ꣸ैल गया। मगर मक्का वाले उनसे झगड़ा करते ही रहे। अन्त में मोहम्मद साहब ने मक्का पर विजय प्राप्त कर ली। मक्का वाले बहुत घबराए कि अब मोहम्मद साहब उनसे बदला लेंगे, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने घोषणा की, ह्णमक्का वालो ! डरो नहीं। मैं किसी से बदला लेने नहीं आया हूँ। मैं उन सबको माफ़ करता हूँ, जिन्होंने मेरे साथियों और सम्बन्धियों को मार डाला और मुझे मारना चाहा। मक्का वालो, नेकी के रास्ते पर चलो।ह

मोहम्मद साहब के इस व्यवहार का मक्का वालों पर बहुत असर पड़ा। उन्होंने मोहम्मद साहब से क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि आप अब यहीं रहें। मोहम्मद साहब ने कहा, ह्णआज मैं तुम लोगों से बहुत खुश हूँ परन्तु जिन लोगों ने संकट में मेरा साथ दिया था, मैं उन्हें कैसे छोड़ दूँ? वैसे मैं हज करने हर साल मक्का आता रहूँगा।ह यह कहकर मोहम्मद साहब मदीना लौट गए और वहीं रहने लगे। जब उनका देहान्त हुआ तो उनकी कब्र मस्जिद से सटे हुए उसी कमरे में बनाई गई, जिसमें वे रहते थे।

कुरआन ईश वाणी है। यह एक पवित्र धार्म ग्रन्थ है। कुरआन को खुदा का कलाम भी कहते हैं। मोहम्मद साहब के सन्देश हदीस की किताबों में संकलित हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

सूदखोरी = ब्याज लेने का काम धरोहर = अमानत में रखी वस्तु

समृद्धि = खुशहाली हिजरत = मोहम्मद साहब की मक्का

जन्नत = स्वर्ग से मदीने की यात्र

उपासना = पूजा हज = मुसलमानों का एक धार्मिक

कार्य जो मक्का जाकर पूरा करते हैं।

प्रलोभन = लालच

रोजी = कमाई, जीविका

ईश-वाणी = ईश्वर की वाणी कलाम = कथन

शब्दों का खेल

1. 'देह' और 'अन्त' मिलाकर शब्द बनता है- देह + अन्त = देहान्त। इसी प्रकार नीचे दिये गये शब्दों को मिलाकर नया शब्द बनाओ -

सुख + अन्त = ... प्राण + अन्त = ...

दुख + अन्त = ... दिन + अन्त = ...

2. 'पालन-पोषण' में दो शब्दों का योग है। इस तरह दो शब्दों के मेल से बने शब्दों को **युग्म शब्द** कहते है। पाठ में आगे ऐसे युग्म शब्दों को ढूँढ़ कर लिखो -

3. 'साधारण' शब्द का विलोम बनाने के लिए उसके पहले 'अ' जोड़ देते हैं और शब्द बन जाता है- असाधारण। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के पूर्व 'अ' लगाकर उनके विलोम शब्द बनाओ-

सहयोग .... निश्चय.......................................

धर्म .... शान्त ....

4. नीचे कुछ मुहावरे और उनके अर्थ दिए गए हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो-

(क) अकड़ दिखाना - घमण्ड करना

(ख) प्राणों का प्यासा होना - मार डालने पर उतारू होना

(ग) बुरा भला कहना - बुराई करना

द्धघऋ अपनी बात पर जमे रहना – दृढ़ होना

5. रिक्त स्थानों में सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए–

द्धकऋ मोहम्मद साहब समाज की .... को दूर करना चाहते थे।
द्धबुराइयों/अच्छाइयोंऋ

द्धखऋ मनुष्य की वह रोजी सबसे पवित्र है जो उसने हाथ से .... करके कमाई है।
द्धआलस्य/मेहनतऋ

द्धगऋ मोहम्मद साहब के सन्देश .... में संकलित हैं। द्धबाइबिल/हदीसऋ

द्धघऋ कुरआन एक .... ग्रन्थ है। द्धपवित्र/पुरानाऋ

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो –

द्धकऋ मोहम्मद साहब के जन्म के समय अरब में क्या–क्या बुराइयाँ ैली थीं ?

द्धखऋ इस्लाम का क्या अर्थ है ?

द्धगऋ हिजरत किसे कहते हैं ?

द्धघऋ मोहम्मद साहब ने मानवता को क्या संदेश दिया ?

2. वर्ण पहेली में कुछ महापुरुषों के नाम छिपे हैं। तीर की दिशा में उन्हें खोजो और लिखो–

ख्वा	अ	बु	ल	क	ला	म	आ	ज़ा
जा	गौ	वि	ई	सा	म	सी	ह	द
मु	त	वे	म	द	न	मो	ह	न
ई	म	का	शे	म	हा	त्मा	गा	मा
नु	बु	न	ख	क	बी	र	धाी	ल
द्दी	)	न्द	स	गु	रु	ना	न	वी

न	चि	श्ती	ली	म	चि	श्ती	क	य

3. नीचे लिखे शब्दों का शुद्धा उच्चारण करो-

प्रसिद्धा, अवस्था, प्रशंसा, एकान्त, चिन्तन, समृद्धि, हिजरत, घोषणा, क्षमा, प्रार्थना

तुम्हारी कलम से

पाँच बातें लिखो जो मोहम्मद साहब ने मानवता की भलाई के लिए कहीं।

अब करने की बारी

क. गौतम बु), ईसा मसीह और गुरुनानक की जीवनियाँ अपने बड़ों से सुनो।

ख. प्रथम अनुच्छेद को सुलेख में अपनी कापी में लिखो।

ह्ईश्वर एक है और वह एकता को पसन्द करता है।ह

हजरत मोहम्मद

कितना सीखा-4

1. नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दो -

क. 'हौसला' कहानी से क्या सीख मिलती है ?

ख. ओणम त्योहार किसका प्रतीक है ?

ग. ओणम मनाने के पीछे कौन सी कथा जुड़ी है ?

घ. 'ग्राम श्री' कविता में किस ;तु की झलक मिलती है। उस ;तु की पाँच विशेषताएँ बताओ।

´ मोहम्मद साहब ने लोगों को क्या शिक्षा दी ?

च. मक्का विजय के बाद मोहम्मद साहब ने मक्कावासियों से क्या कहा ?

2. पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो-

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से

लद गई आम्र तरु की डाली।

झर रहे ढाक, पीपल के दल,

हो उठी कोकिला मतवाली।।

3. नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखो -

क. जो उचित-अनुचित का विवेक रखता हो-

ख. जो पढ़ा-लिखा हो-

ग. जो पढ़ा-लिखा न हो-

घ. वाहनों को चलाने वाला-

4. दोनों शब्दों को मिलाकर लिखो-

राजा का दरबार = ...

सेना का पति = ...

वीरों की भूमि = ...

5. वाक्यों को उपयुक्त शब्दों का चयन कर पूरा करो-

द्धमौसी, मित्र, चाचा, बहिनजीत्र

क. प्रतिभा ने बूढ़े मोची से पूछा- ह........................ आप का घर कहाँ है ?ह

ख. विकास ने रजिया से कहा- ह............. आज खेलने का मन कर रहा है।ह

ग. विपिन ने अपनी माँ की बहिन को पुकारा, ह........................ यहाँ आइए।ह

घ. सुत्र्ञा ने अपनी शिक्षिका से कहा- ह........................ मैंने काम पूरा कर लिया है।ह

6. उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करो-

तरह तरह के चहचहाते पक्षी आसमान में उड़ते हुए अठखेलियाँ करते हैं रंग बिरंगी तितलियाँ खिले ठूलों पर मँडराती दिखाई देती हैं

7. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्‌धा करो -

द्धकत्र मैदान में अनेकों बच्चे दौड़ रहे थे।

द्धखत्र एक पेंसिल का मूल्य र्सिफ दो रुपए मात्र है।

द्धगत्र पेड़ों में पक्षी चहचहा रहे थे।

द्धघत्र मैं ठीक समय पर पहुँच गया था(तो वह नहीं मिला।

र्द्धत्र अभिषेक अथवा अमजद ने पत्र लिखे।

8. किसी त्योहार के बारे में 10 पंक्तियाँ लिखो।

9. कोई एक कहानी सुनाओ जो तुमने अपने दादा-दादी अथवा नाना-नानी से सुनी हो।

अपने आप - 4

हमसे सब कहते

नहीं सूर्य से कहता कोई

ॠूप यहाँ पर मत ैलाओ,

कोई नहीं चाँद से कहता

उठा चाँदनी को ले जाओ।

कोई नहीं हवा से कहता

खबरदार जो अन्दर आई,

बादल से कहता कब कोई

क्यों जल ॠार यहाँ बरसाई?

िर क्यों हमसे भै"या कहते

यहाँ न आओ, भागो जाओ,

अम्मा कहती हैं ह्घर भर में

खेल खिलौने मत ैलाओ।ह

पापा कहते ह्बाहर खेलो,

खबरदार जो अन्दर आएह

हम पर ही सब का बस चलता

जो चाहे वह डाँट बताए।

– निरंकार देव सेवक

निरंकार देव सेवक बाल गीतकार के रूप में प्रसि) हैं। इन्होंने बच्चों के लिए सुन्दर बालगीत एवं कविताएँ लिखी हैं। इनका जन्म बरेली में हुआ।

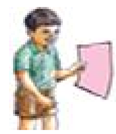

19

सोहना

छोटू सड़क से जा रहे स्कूली बच्चों को देख रहा है। रोज सुबह जब बच्चे कन्ऋे में बस्ता टाँगे, हँसते–बोलते अपने–अपने विद्यालय को जाते हैं तो छोटू का दिल बैठ–सा जाता है। उसे अपना घर, माता–पिता, भाई–बहिन और अपना स्कूल याद आने लगता है। वह भी ऐसे ही बस्ता लेकर स्कूल जाता था, परन्तु अब तो यह सब सपना हो गया।

तभी दुकान के मालिक की कड़कदार आवाज सुनायी दी, हऐ छोटू, कहाँ मर गया, बरतन क्या तेरा बाप आकर ऋोएगा ?ह छोटू ने मेज पर पड़े जूठे बरतन उठाए और नल के नीचे ले जाकर उन्हें ऋोने लगा।

आज का यह छोटू दो महीने पहले छोटू नहीं था। तब तो उसका नाम सोहना था। अपने घर–परिवार के साथ नदी किनारे गाँव में रहता था। घर में माता–पिता, दादा–दादी और छोटी बहिन थे। वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। गाँव के बच्चों के साथ वह स्कूल जाता। शाम को अमराई में दूसरे बच्चों के साथ लुका–छिपी, कबड्डी, गुल्ली–डंडा खेलता। घर पर ऋौरी गाय के बछड़े को सहलाता। सुबह–शाम घर के छोटे–मोटे कामों में हाथ बँटाता। माँ उसे प्यार से सोहना कहतीं। अपने पास बिठाकर दूऋ–रोटी खिलातीं।

एक दिन स्कूल में उसकी किताब खो गई। पढ़ाई के समय गुरुजी ने किताब न होने पर उसे एक थप्पड़ लगा दिया। सोहना के बाल-मन को चोट लगी। शाम को घर आकर उसने पिताजी को बताया तो वह भी डाँटने लगे। अपनी चीजें ठीक से सम्भाल कर नहीं रखता है। बस! यहीं से यह सारी भूल शुरु हो गई। उसके मन में बैठ गया कि अब वह स्कूल में नहीं पढ़ेगा। घर पर भी नहीं रहेगा। सब उसे ही डाँटते हैं। एक क्षण को भी उसके दिमाग में नहीं आया, कि उसे उसकी भलाई के ही लिए तो डाँटते हैं। प्यार भी तो उतना ही करते हैं। यह सब सोचने की उसे अक्ल ही कहाँ थी?

रात को ही वह चुपचाप उठा और घर से भाग आया। कैसे-कैसे वह कहाँ-कहाँ पहुँचा, किस तरह छुप-छुप कर इस शहर में आया और आखिर इस ढाबे में बरतन ऋोने का काम करने लगा। ढाबे वाले की गालियाँ, मार-पीट सब सहता रहा। घर लौटने का उसका बहुत मन करता(परन्तु लज्जा के कारण पाँव ही नहीं उठते हैं। उसके माता-पिता उसके बिना कितना परेशान होंगे। कहाँ-कहाँ उसे नहीं खोजा होगा ? पर वह घर कैसे जाए ?

यहाँ तो सुबह चार बजे से रात को ग्यारह बजे तक काम ही काम। ढाबे का मालिक उसे आऋे घण्टे के लिए भी खेलने के लिए नहीं छोड़ता। जब दूसरे लड़के बाहर खेलते हैं तो उसका मन उसके वश में नहीं रहता। कहीं हाथ से कोई प्याला छूट गया तो फ़िर बस लात-घूसे।

रात को सात बजे से ही उसे नींद आने लगती है पर आराम कहाँ ? नींद में ही वह मेजें साफ़ करता, पानी भरता, जूठे बरतन उठाता। शाम को उसे जल्दी खाना इसलिए नहीं देते कि वह जल्दी सो न जाए। दस साल का बच्चा ! काम खत्म होने तक उसे कुछ होश ही नहीं रहता। किसी कोने में लुढ़ककर सो जाता। किसी को इस बात की चिन्ता नहीं कि उसने खाया या नहीं। सुबह चार बजते ही मालिक फ़िर लात मार कर जगा देता। फ़िर वहीं काम, गालियाँ और लात-घूसे।

आह ! वह क्यों घर छोड़कर चला आया। माँ का प्यारा सोहना छोटू क्यों बन गया ! यह तो उसके खेलने-खाने और पढ़ने के दिन थे।

रोज की तरह आज भी छोटू ट्रे में जूठे गिलास लिए ऋोने जा रहा था। सामने सड़क पर कुछ बच्चे गेंद खेल रहे थे। छोटू खेल में खो गया। तभी ढाबे के मालिक का भयानक चेहरा सामने दिखायी दिया। डर के मारे छोटू के हाथ से ट्रे छूट गयी और छन्न से गिलास टूट गया।

मालिक ने डंडा उठाया और छोटू की ओर झपटा।

सोहना एक ही झटके में उठ खड़ा हुआ। नहीं, वह ऐसे राक्षसों की मार खाने के लिए पैदा नहीं हुआ है। नहीं, अब वह छोटू नहीं रहेगा। वह अपने घर जायेगा। स्कूल में पढ़ेगा। बड़ा होकर अपना जीवन स्वयं सँवारेगा।

सोहना छूटे हुए तीर की तरह सड़क पर पहुँच गया। ढाबे का मालिक दुकान पर खड़ा देखता रह गया। सोहना के छोटे-छोटे पैर तेजी से उठ रहे थे। उसकी आँखों में उसका गाँव और उसका सपना तैर रहा था।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

ढाबा = सड़क के किनारे बने भोजनालय कड़कदार = तेज

जिसमें प्रायः वाहन चालक और धौरी = ऋवल, स्फेद

यात्री भोजन करते हैं। झपटा = तेजी से लपका

अमराई = आमों का घना बाग ट्रे = कप, गिलास रखने का पात्र

शब्दों का खेल

1. कड़क में 'दार' शब्द जोड़कर 'कड़कदार' शब्द बना है इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में 'दार' जोड़कर कुछ और शब्द बनाओ तथा उनके अर्थ भी लिखो ?

इज्जत, मजे, हवा, ऋृार, चमक, माल, चौकी, दुकान

2. तद्भव शब्दों के सही तत्सम रूप को तीर के निशान से जोड़ो -

तद्भव शब्द - तत्सम शब्द

घर - भ्राता

भाई - स्वप्न

सपना - ग्राम

गाँव - गृह

3. सोहना गाय के बछड़े को धाीरे-धाीरे सहलाता है।

ऊपर लिखे वाक्य में 'सहलाता' क्रिया और धाीरे-धाीरे क्रिया विशेषण है। नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया और क्रिया विशेषण पहचानकर लिखो।

द्धकऋ माँ उसे अपने पास बिठाकर दूधा-रोटी प्यार से खिलाती थी।

द्धखऋ रात को वह चुपचाप उठा और भाग खड़ा हुआ।

द्धगऋ किसी कोने में लुढ़ककर सो जाता है।

द्धघऋ मालिक का भयानक चेहरा देखकर सोहना थर-थर काँपने लगा।

बोध प्रश्न

1. उत्तर दो -

द्धकऋ बचपन में सोहना कौन-कौन से खेल खेलता था ?

द्धखऋ सोहना के परिवार में कौन-कौन सदस्य थे ?

द्धगऋ सोहना घर छोड़कर क्यों भागा ?

द्धघऋ ढाबे पर सोहना को क्या-क्या करना पड़ता था ?

द्धङऋ ढाबे का मालिक उसके साथ कैसा बर्ताव करता था ?

द्धचऋ छोटू के हाथ से ट्रे कैसे छूटी ?

द्धछऋ ढाबे के मालिक ने जब डंडा उठाया तो छोटू ने क्या किया ?

द्धजऋ सोहना भागते समय क्या निश्चय करता जा रहा था ?

2. सोचो और बताओ -

द्धकऋ सोहना को ढाबे वाला पकड़ लेता तो उसके साथ कैसा व्यवहार करता?

द्धखऋ अपने घर पहुँचकर उसे कैसा अनुभव हुआ होगा ?

द्धगऋ सोहना को पाकर उसके माता-पिता, दादा-दादी को कैसा लगा होगा ?

द्धघऋ क्या सोहना पुनः पढ़ने स्कूल गया होगा ?

द्धङऋ इस पाठ का और क्या शीर्षक हो सकता है ?

तुम्हारी कलम से

- उन प्रसंगों को संक्षेप में लिखो जब बड़ों के डाँटने से तुम्हारे मन को ठेस लगी।

अब करने की बारी -

द्धकऋ अपने पास-पड़ोस के उन छोटे बालक-बालिकाओं के नाम लिखो जो किसी स्कूल में नहीं पढ़ते।

द्धखऋ उनसे स्कूल में पुनः प्रवेश लेने के लिए बातचीत करो।

शिक्षक से -

कक्षा में बच्चों को दो समूहों में बाँट दें। अब उनसे हबच्चों को मजदूरी करनी चाहिए या पढ़ाईह इस विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता कराएँ। इस प्रकार के अन्य विषय भी ले सकते हैं।

बच्चों के अधिकार

- प्यार पाने का अधिकार
- संस्कृति का अधिकार
- अभिव्यक्ति का अधिकार
- सम्मान का अधिकार
- सुरक्षा का अधिकार
- शिक्षा का अधिकार
- परिवार का अधिकार
- स्वास्थ्य का अधिकार
- मनोरंजन का अधिकार
- सूचना का अधिकार
- खेल का अधिकार

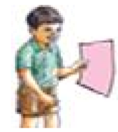

20

अकबर–बीरबल

एक बार सम्राट अकबर अपने मंत्री बीरबल के साथ सैर करने को निकले। सुहावने मौसम का आनन्द लेते हुए दोनों नगर से बाहर निकल आए थे। सामने से लकड़ियों का गट्ठर उठाए एक लकड़हारा चला आ रहा था। उस पर दृष्टि पड़ी तो बादशाह अकबर के मन में सहसा एक प्रश्न उठा। वे लकड़हारे की ओर संकेत करते हैं।

अकबर – बीरबल क्या तुम बता सकते हो कि यह लकड़हारा हमारे बारे में क्या विचार रखता है ?

बीरबल – जहाँपनाह ! सीॠी सी बात है। जैसे विचार आप लकड़हारे के बारे में रखते हैं, वैसे ही वह आपके बारे में सोचता होगा।

अकबर – पर म ॐ इसे नहीं मानता। दूसरे के मन की बात कोई कैसे जान सकता है ?

बीरबल – आपको विश्वास नहीं होता है तो अपने कानों से सुन लीजिए। कृपया एक पेड़ पर चढ़कर अपने को छिपा लीजिए।

बीरबल लकड़हारे की प्रतीक्षा करते हैं। पेड़ की मोटी शाखा पर छिपकर बैठे बादशाह अकबर लकड़हारे के विषय में सोचने लगते हैं– ह्ययह चोर लकड़हारा ! हमारे जंगल की लकड़ियाँ हमारी इजाजत के बिना

काट ले जाता है। इसको सख्त से सख्त सजा देनी चाहिए।ह ऐसे ही अनेक कुविचार बादशाह के मन में आ रहे थे। तभी वहाँ लकड़हारा आ पहुँचा। बीरबल उसे रोकते हैं।

बीरबल – अरे, लकड़हारे ! तुमने कुछ सुना, आज बादशाह के प्राण–पखेरू उड़ गए।

लकड़हारा लकड़ियों का गट्ठर जमीन पर फेंककर नाचने लगता है।

लकड़हारा – अच्छा हुआ जो उठ गया दुनिया से। ऐसे बादशाह का मरना ही बेहतर है जो अपनी प्रजा के दुःख दूर न कर सके। मैं तो आज जलेबियाँ बाटूँगा।

फिर उसने लकड़ी का गट्ठर सिर पर रखा और गुनगुनाते हुए चला गया। अकबर ने अपने कानों से सुना पर पूरा यकीन नहीं हुआ।

अकबर – यह तो बुराई के बारे में बात हुई। अच्छाई के बारे में भी सुन लूँ तो तुम्हारी बात पर पूरा यकीन हो जाएगा।

बीरबल – जहाँपनाह ! थोड़ी देर और ठहरिए। वो देखिए – एक बुढ़िया आ रही है। बड़ी दुःखी और गरीब दिख रही है। उसके विषय में अच्छे विचार मन में लाइए फिर उसकी बातें सुनिएगा।

अकबर – सचमुच यह काफी परेशान लग रही है। तरस आ रहा है, इस बेचारी पर। आज से ही इसके खाने–पीने के लिए खजाने से इन्तजाम करूँगा।

बीरबल – जहाँपनाह ! आप जल्दी छिप जाइए जिससे वह आप को न देख सके।

अकबर – ठीक है।

अकबर छिप जाते हैं। बुढ़िया के आने पर बीरबल ने उसे रोककर पूछा।

बीरबल - अरे, माँ ! तुझे पता है या नहीं ! आज बादशाह अकबर चल बसे।

सुनते ही बुढ़िया दहाड़ें मार कर रोने लगी।

बुढ़िया - हाय, राम ! गजब हो गया। ऐसा परोपकारी बादशाह अब कहाँ मिलेगा। हिन्दू-मुसलमान उसकी दोनों आँखों जैसे थे। हे भगवान! उसके बदले में तू मेरी जान ले लेता, पर उसका कुछ न बिगाड़ता।

बुढ़िया की बात सुनकर सम्राट अकबर के मन में बीरबल की कही बात पर तनिक सन्देह नहीं रहा। वे भली-भाँति समझ गए कि कोई व्यक्ति किसी के प्रति जैसा विचार रखता है, दूसरा भी उसके प्रति वैसा ही विचार रखता है।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

सैर = भ्रमण इजाजत = अनुमति

जहाँपनाह = बादशाह के लिए सम्बोऋन कुविचार = बुरे विचार

प्राण-पखेरू = प्राण रूपी पक्षी तरस = दया

सख्त = कठोर यकीन = विश्वास

शब्दों का खेल -

1. पढ़ो, समझो और लिखो :-

द्धकऋ सम्राट राजा द्धचऋ शंका ....

द्धखऋ प्राण जान द्धछऋ वृक्ष ....

द्धगऋ सैर .... द्धजऋ जंगल ....

द्धघऋ मन .... द्धझऋ जमीन ....

द्धर्ऋ प्रश्न .... द्धेऋ प्रजा ....

2. नीचे दिए गए वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखो :

द्धकऋ जो लकड़ियाँ काटकर जीविका चलाता हो -

द्धखऋ जो शासन चलाता हो -

द्धगऋ जिस पर विश्वास किया जा सके -

द्धघऋ जो परोपकार करता हो -

द्धर्ऋ जिसमें दया हो -

3. नीचे दिए गए शब्दों का लगभग समान रूप से उच्चारण होता है परन्तु दोनों के अर्थ भिन्न होते हैं। इनके अर्थ कोष्ठक में दिए गए हैं। इन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करो ताकि अर्थ स्पष्ट हो जाये -

द्धकऋ अन्न - अन्य

द्धअनाजऋ द्धदूसराऋ

द्धखऋ दिन - दीन

द्धदिवसऋ द्धगरीबऋ

द्धगऋ शाम - श्याम

द्धसायंऋ द्धकालाऋ

द्धघऋ पिता - पीता

द्धजनकऋ द्धपीनाऋ

4. नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

द्धकऋ प्राण पखेरू उड़ना ....

द्धखऋ चल बसना ....

द्धगऋ दहाड़ें मारना ....

5. ठीक शब्द चुनकर खाली स्थान भरो। द्धसोच, लकड़हारा, सजा, गरीबोंऋ

द्धकऋ यह .... हमारे बारे में क्या .... रहा है ?

द्धखऋ इसे सख्त से सख्त .... देनी चाहिए।

द्धगऋ हम .... पर तो कहर ढा रखा था।

बोध प्रश्न -

1. उत्तर दो -

द्धकऋ सम्राट अकबर और बीरबल सैर करते हुए कहाँ पहुँच गए ?

द्धखऋ सम्राट अकबर ने लकड़हारे के विषय में बीरबल से क्या पूछा ?

द्धगऋ बीरबल ने सम्राट अकबर को क्या जवाब दिया ?

द्धघऋ लकड़हारे के विषय में सम्राट अकबर क्या सोच रहे थे ?

द्धऋ लकड़हारे के विषय में बीरबल ने क्या कहा ?

द्धचऋ लकड़हारे व बुढ़िया की बात सुनकर अकबर किस निष्कर्ष पर पहुँचे ?

2. किसने कहा ? किससे कहा ?

द्धकऋ हजैसे विचार आप लकड़हारे के विषय में रखते है, वैसे ही वह आपके बारे में सोचता होगा।ह

द्धखत्रः ह्रदूसरे के मन की बात को कोई कैसे जान सकता है ?ह

द्धगत्रः ह्रऐसे बादशाह का तो मरना ही बेहतर है, जो अपनी प्रजा के दु:ख दूर न कर सके।ह

द्धघत्रः ह्रहे भगवान ! उसके बदले में तू मेरी जान ले लेता।ह

3. इस पाठ से तुम्हें क्या सीख मिलती है ?

तुम्हारी कलम से -

अकबर-बीरबल से सम्बन्ध्ग्रिृत कोई सुना हुआ किस्सा संक्षेप में लिखो।

अब करने की बारी -

1. अकबर बीरबल के और किस्से पुस्तकालय में पढ़ो और अपने दोस्तों को सुनाओ।

2. बीरबल की बु)िमानी के विषय में अपनी राय लिखो।

3. अपनी कक्षा में इस एकांकी का अभिनय करो।

मनुष्य जैसा अपने हृदय में विचारता है, वह वैसा ही बन जाता है।

- ***बाइबिल***

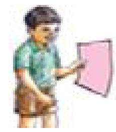

21

पिता का पत्र पुत्री के नाम

नैनी जेल,

26 अक्टूबर, 1930

प्रिय इंदिरा,

जन्मदिन पर तुम्हें कई उपहार मिलते रहे हैं। शुभकामनाएँ भी दी जाती रही हैं, पर मैं इस जेल में बैठा तुम्हें क्या उपहार भेज सकता हूँ? हाँ, मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी।

क्या तुम्हें याद है कि 'जोन अफ़ आर्क' की कहानी तुम्हें कितनी अच्छी लगी थी? तुम स्वयं भी तो उसी की तरह बनना चाहती थीं, पर साधारण पुरुष तथा स्त्रियाँ इतने साहसी नहीं होते। वे तो अपने प्रतिदिन के कार्यों, बाल-बच्चों तथा घर की चिंताओं में ही फँसे रहते हैं, परन्तु एक समय ऐसा आ जाता है कि किसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी लोगों में असीम उत्साह भर जाता है। साधारण पुरुष वीर बन जाते हैं और स्त्रियाँ वीरांगनाएँ।

आज-कल हमारे भारत के इतिहास का निर्माण हो रहा है। बापू जी ने भारतवासियों के दु:खों को दूर करने के लिए आन्दोलन छेड़ा है। मैं और तुम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि यह आन्दोलन हमारी आँखों के सामने हो रहा है और हम भी इसमें कुछ भाग ले रहे हैं। एक महान उद्देश्य हमारे सामने है और हमें इसकी पूर्ति के लिए बहुत कुछ करना है।

अब सोचना यह है कि इस महान आन्दोलन में हमारा कर्तव्य क्या है। इसमें हम किस तरह भाग लें? परन्तु जो कुछ भी हम करें, हमें इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि उससे हमारे देश को हानि न पहुँचे। कई बार हम सन्देह में भी पड़ जाते हैं कि हम क्या करें, क्या न करें?

यह निश्चय करना कोई सरल कार्य नहीं है। जब भी तुम्हें ऐसा संदेह हो तो ठीक बात का निश्चय करने के लिए मैं तुम्हें एक छोटा-सा उपाय बताता हूँ। तुम कोई भी काम ऐसा न करना, जिसे दूसरों से छिपाने की इच्छा तुम्हारे मन में उठे। किसी बात को छिपाने की इच्छा तभी होती है जब तुम कोई गलत काम करती हो। बहादुर बनो और सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। यदि तुम बहादुर बनोगी तो तुम ऐसी कोई बात नहीं करोगी, जिससे तुम्हें डरना पड़े या जिसे करने में तुम्हें लज्जित होना पड़े।

तुम्हें यह तो मालूम ही है कि बापू जी के नेतृत्व में स्वतन्त्रा का जो आन्दोलन चलाया जा रहा है उसमें छिपा रखने जैसी कोई बात नहीं है। हम तो सभी काम दिन के उजाले में करते हैं।

अच्छा बेटी। अब विदा।

भारत की सेवा के लिए तुम बहादुर सिपाही बनो, यही मेरी शुभकामना है।

तुम्हारा पिता,

जवाहर लाल

ये स्वतन्त्रा संग्राम के नायक तथा स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे। बच्चे इन्हें प्यार से ‘चाचा नेहरू’ कहते थे।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

शब्दार्थ

उपहार = भेंट वीरांगनाएँ = वीर नारियाँ

शुभकामनाएँ = मंगल कामनाएँ उद्देश्य = लक्ष्य

असीम = जिसकी सीमा न हो लज्जित = शर्मिन्दा

शब्दों का खेल

द्धकऋ नीचे दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखो–

जैसे – वीरांगना वीरांगनाएँ

शुभकामना .... चिन्ता ....

बालिका .... शंका ....

स्त्री .... देवी ....

लड़की .... खिड़की ....

द्धखऋ उदाहरण को समझकर संज्ञा से विशेषण शब्द बनाओ–

भाग्य भाग्यशाली प्रतिभा ....

शक्ति .... वैभव ....

बल .... गौरव ....

प्रभाव .... ऐश्वर्य ....

द्धगऋ इस अनुच्छेद में उचित स्थान पर विराम–चिह्नों का प्रयोग करो–

बच्चे खामोश हो गए उनकी चहल पहल रुक गई बूढ़े के शब्दों को मन में लिए हुए सब अपने अपने घ ार चले गए बच्चों ने सोच रखा था कि थोड़ी देर और खेलेंगे पर वे वहाँ रुक न सके

बोध प्रश्न

1. उत्तर दो –

द्धकऋ यह पत्र किसने, किसको लिखा है ?

द्धखऋ पुत्री के जन्मदिन पर नेहरु जी उपहार क्यों नहीं भेज सके?

द्धगऋ साधारण पुरुष और स्त्रियाँ कब वीर पुरुष और वीरांगनाएँ बन जाती हैं?

द्घघऋ किसी कार्य के करने या न करने के सम्बन्ऋ में निर्णय करने के लिए पिता ने पुत्री को क्या सलाह दी?

द्घंऋ स्वतन्त्रा आन्दोलन किसके नेतृत्व में चलाया गया?

2. सही वाक्यों के सामने सही द्घ□ऋ तथा गलत वाक्यों के सामने गलत द्घगऋ का चिह्न लगाओ–

द्घकऋ साधारण स्त्री–पुरुष प्रतिदिन के कार्यों, बाल–बच्चों की चिन्ताओं में ही पँफसे रहते हैं।

द्घखऋ अच्छे काम को दूसरों से छिपाने की इच्छा होती है।

द्घगऋ इन्दिरा गांऋी देश की पहली प्रऋानमन्त्री बनीं।

द्घघऋ महान उद्देश्य के लिए जब साऋारण स्त्री–पुरुष असीम उत्साह से भर जाते हैं तो वे ही वीर पुरुष और वीरांगनाएँ बन जाते हैं।

तुम्हारी कलम से

द्घकऋ अपने साथी/सहेली को अपने गाँव के बारे में पत्र लिखो।

अब करने की बारी

द्घकऋ अपने गुरु जी/बहिन जी से विद्यालय के प्रऋानाधयापक/प्रऋानाधयापिका के लिए प्रार्थना–पत्र लिखना सीखो।

द्घखऋ अपने घर पर आने वाले पत्रें को एकत्र करो और जानो किसको कैसे पत्र लिखा जाता है ?

द्घगऋ तुम्हारे इलाके में भी बहुत सी बहादुर लड़कियों ने अपने देश का नाम रोशन किया होगा। उनके बारे में जानो।

इसे भी जानो

जोन अफ आर्क *– पफांस की एक बहादुर लड़की जिसने 13 वर्ष की आयु में अंग्रेजों के विरु) युद्धा किया और पफांस को विजय दिलाई। मरने के बाद उसे सन्त की उपाऋि मिली।*

कितना सीखा-5

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो-

द्धकऋ पंचतन्त्र की कथा से हमें क्या सीख मिलती है ?

द्धखऋ तुम्हारी क्या राय है- बालक करन अपने सारे पैसे हार गया। इस घटना में उसकी किस्मत खराब थी अथवा कोई और बात थी ?

द्धगऋ महात्मा गांध्री पर 'श्रवण कुमार' की कथा तथा 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक का क्या प्रभाव पड़ा ?

द्धघऋ महात्मा गांध्री की 'आत्मकथा' की चार बातें लिखो जो तुम्हें अच्छी लगीं।

द्धङऋ प्रकृति से भी हमें कुछ प्रेरणाएँ मिलती रहती है। कुछ का उल्लेख करो।

द्धचऋ 'हाँ में हाँ' वाली लोक-कथा में किस बुराई की ओर संकेत किया गया है? इस विषय में अपनी राय बताओ।

द्धछऋ 'मलेथा की गूल' किस बात का जीता जागता उदाहरण है ?

2. सुनाओ -

द्धकऋ तिलक और लाल बहादुर शास्त्री के प्रसिद्ध्ा कथन।

द्धखऋ बालक सोहना की कहानी संक्षेप में।

द्धगऋ पाठ्य-पुस्तक की कोई कविता हाव-भाव के साथ।

3. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो-

द्धकऋ पाया जग से जितना अब तक द्धखऋ समझ रहे हो क्या कहती है

और अभी जितना मैं पाऊँ, उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग
मनोकामना है यह मेरी भर लो, भर लो अपने मन में,
उससे कहीं अध्रिक दे जाऊँ। मीठी-मीठी मृदुल उमंग।।

द्धगऋ ह्लपरमारथ के कारने साधुन धरा शरीरह्।

द्धघ्त्र हमीरा प्रभु सन्तन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।ह

4. द्धकत्र निम्नांकित शब्दों के तत्सम रूप लिखो-

सपना, धौरी, चरन्ह, अमोल, परलै, वृच्छ

द्धखत्र संज्ञा शब्दों को विशेषण द्धगत्र विशेषण शब्दों को संज्ञा

शब्दों में बदलकर लिखो- शब्दों में बदलकर लिखो-

सरलता .... अनुकरणीय ....

रोग .... भला ....

सुख .... कठोर ....

कल्पना .... दयालु ....

नकल .... स्वतन्त्र ....

द्धघत्र नीचे लिखे अव्यय शब्दों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाओ-

और, अब, वहाँ, किन्तु, परन्तु

द्धत्र नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो-

- हक्का-बक्का रह जाना।
- घी के दिये जलाना।
- पानी-पानी होना।
- दाँत खट्टे करना।

5. नीचे दिए गए उपसर्गों से बनने वाले शब्द लिखो -

प्र, वि, आ, अनु, सु

6. एक-एक वाक्य बनाओ जिसमें-

द्धकत्र विशेषण शब्द का प्रयोग हो। द्धगत्र सर्वनाम शब्द का प्रयोग हो।

द्धखऋ क्रिया-विशेषण शब्द का प्रयोग हो। द्धघऋ अव्यय शब्द का प्रयोग हो।

7. ऐसे वाक्यों की रचना करो जिनमें -

द्धकऋ प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग हो।

द्धखऋ विस्मय बोऋक चिह्न का प्रयोग हो।

द्धगऋ अल्प विराम तथा पूर्ण विराम-चिह्न का प्रयोग हो।

द्धघऋ जिसमें दोहरा अवतरण चिह्न का प्रयोग हो।

8. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ऋ करो-

द्धकऋ हिमालय के तलहटी में एक राजा बसता था।

द्धखऋ मेरा विनती है कि आप यह विचार त्याग दें।

द्धगऋ बच्चे कल शाम खेलते हैं।

द्धघऋ बेर के ूल बहुत छोटा होता है।

9. अपने मित्र को उत्सव में सम्मिलित होने के लिए पत्र लिखो।

10. आठ पंक्तियों की कोई कविता लिखो जो इस इस पाठ्य-पुस्तक में न हो।

11. संक्षेप में वर्णन करो, जब तुम-

द्धकऋ किसी मेले में गए थे।

द्धखऋ विद्यालय के किसी उत्सव में सम्मिलित हुए।

द्धगऋ किसी रिश्तेदार के घर गए थे।

12. निम्नलिखित अंश में उचित विराम-चिह्न लगाओ-

सरोज ने मामा से पूछा मामा हम कहाँ आए हैं मामा ने कहा यह सारनाथ है सरोज आश्चर्यचकित होकर बोली वाह कितनी सुन्दर जगह है यहाँ का पार्क स्तूप भगवान गौतम बुद्धा की मूर्ति तथा सादगी देखने लायक है

13. पर्यावरण की रक्षा में आज तक तुमने क्या सहयोग दिया है ? संक्षेप में लिखो।

ब्वदजमदजे

1ण न्दजपजसमक.2

ज्ंइसम वि ब्वदजमदजे

- वीर अभिमन्यु
- हाँ में हाँ
  - मुरझाए फूल
  - सवारी का प्रबन्ध
- सरकस
- मलेथा की गूल
- ज़्टोकरी में क्या है ़्र
- बाल गंगाधर तिलक
- भक्ति.नीति माधुरी
  - कबीर
  - रहीम
  - सूरदास
  - मीरा
- ब्वदजमदजे